ગુજરાત રાજ્યના શિક્ષણવિભાગના પત્ર-ક્રમાંક
મશબ / 1213 / 990 / છ, તા. 8-1-2014 – થી મંજૂર

संस्कृत

कक्षा 10

प्रतिज्ञापत्रम्

भारतं मम देशः ।
सर्वे भारतीयाः मम भ्रातरः भगिन्यः च सन्ति ।
मम मानसे देशस्पृहा अस्ति । समृद्धिसहितं
विविधतापरिपूर्णं तस्य संस्कृतिगौरवम् अनुभवामि ।
अहं सदा तत्पात्रं भवितुं यत्नं करिष्यामि ।
अहं मम पितरौ आचार्यान् गुरुजनान् च प्रति
आदरभावं धारयिष्यामि ।
प्रत्येकेन सह शिष्टव्यवहारं करिष्यामि ।
अहं मम देशाय देशबान्धवेभ्यः च मम निष्ठाम् अर्पयामि ।
तेषां कल्याणे समृद्धौ च एव मम सुखम् अस्ति ।

राज्य सरकारनी विनामूल्ये योजना हेठळनुं पुस्तक

तमसो मा ज्योतिर्गमय

गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल
'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर-382010

© गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर
इस पाठ्यपुस्तक के सर्वाधिकार गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अधीन हैं।
इस पाठ्यपुस्तक का कोई भी अंश, किसी भी रूप में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के नियामक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

विषय-सलाहकार
श्री सुरेशचंद्र जे. दवे

लेखन-संपादन
डॉ. कमलेशकुमार छ. चोक्सी (कन्वीनर)
डॉ. मनसुख के. मोलिया
डॉ. मोहिनी डी. आचार्य
श्री पूर्णिमा एल. दवे
श्री महारुद्र के. शर्मा
श्री स्मिताबहन बी. जोषी

अनुवाद
श्री राजेशकुमारसिंह एस. क्षत्रिय
डॉ. नंदिता शुक्ला

अनुवाद-समीक्षा
श्री महेशभाई उपाध्याय
श्री विजय तिवारी
डॉ. किशोरीलाल कलवार
डॉ. कालिदासभाई पटेल
श्री जगन्नाथसिंह पी. चौहान

चित्रांकन
शिल्प ग्राफिक्स

संयोजन
डॉ. क्रिष्ना दवे
(विषय-संयोजक : अंग्रेजी)

निर्माण-आयोजन
श्री हरेन शाह
(नायब नियामक : शैक्षणिक)

मुद्रण-आयोजन
श्री हरेश एस. लीम्बाचीया
(नायब नियामक : उत्पादन)

प्रस्तावना

एन. सी. ई. आर. टी. तथा NCF-2005 के अन्तर्गत नए अभ्यासक्रम की पाठ्यपुस्तक में तथा शिक्षण-प्रक्रिया में परिवर्तन लाना जरूरी है। इस सन्दर्भ में गुजरात राज्य माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड ने अभ्यासक्रम तैयार किया है। गुजरात सरकार द्वारा स्वीकृत हुए **कक्षा 10 के संस्कृत** विषय के अभ्यासक्रम के आधार पर प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। इस पाठ्यपुस्तक को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मंडल आनंद का अनुभव कर रहा है।

इस पाठ्यपुस्तक में संस्कृत के भाषाकीय, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक वैविध्य को ध्यान में रखा गया है। आवश्यकतानुसार उसमें वयकक्षानुसार संपादन तथा स्वतंत्र पाठ की संरचना की गई है। संस्कृत संभाषण के सभी अंगों को पाठ्यपुस्तक में समाहित किया गया है। संस्कृत भाषा का सघन परिचय कराने के लिए सभी पहलुओं की विस्तृत जानकारी दी गई है। संस्कृत साहित्य के विविध स्वरूपों को प्रधानता दी गई है। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक द्वारा विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता, विचार-शक्ति और तर्क-शक्ति को विकसित करने का तथा उसके अनुरूप सर्वांगीण विकास एवं अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया में सहायक सिद्ध हो इस प्रकार पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है।

इस पाठ्यपुस्तक को तैयार करने से पहले इसकी हस्तप्रति का अध्यापनकार्य करने वाले शिक्षकों और विषय-विशेषज्ञों द्वारा हर दृष्टिकोण से समीक्षा करवाई गई है। शिक्षकों और विशेषज्ञों की सूचना के अनुसार हस्तप्रति में परिवर्तन और संवर्धन करने के बाद इसे प्रकाशित किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक की संरचना में जिन्होंने अथक प्रयत्न करके संम्पूर्ण सहयोग दिया है, उन सभी के प्रति आभार प्रकट करते हैं।

पाठ्यपुस्तक को रुचिकर, उपयोगी और क्षतिरहित बनाने में मंडल ने पूरी सावधानी रखी है, फिर भी शिक्षण में रुचि रखने वाले व्यक्तियों द्वारा पाठ्यपुस्तक की उत्कृष्टता का स्तर सुधारने हेतु आने वाले सुझावों का स्वागत है।

पी. भारती (IAS)
नियामक
दिनांक : 04-11-2019

कार्यवाहक प्रमुख
गांधीनगर

प्रथम संस्करण : 2014, पुनःमुद्रण : 2016, 2017, 2020
प्रकाशक : गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, 'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर की ओर से पी. भारती, नियामक

मुद्रक :

मूल कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह* –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आवाहन किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो; ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) अपने 6 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु के बच्चे अथवा पाल्य को शिक्षा का अवसर प्रदान करे।

* भारत का संविधान : अनुच्छेद 51-क

अनुक्रमणिका

1.	सं वदध्वम्	1
2.	यद्भविष्यो विनश्यति	5
3.	स्वस्थवृत्तं समाचर	10
4.	जनार्दनस्य पश्चिमः सन्देशः	14
5.	गुणवती कन्या	20
6.	काष्ठखण्डः	26
7.	सुभाषितकुसुमानि	31
8.	साक्षिभूतः मनुष्यः	35
9.	चक्षुष्मान् अन्ध एव	40
10.	त्वमेका भवानि	44
11.	यस्य जननं तस्य मरणम्	48
12.	कलिकालसर्वज्ञो हेमचन्द्राचार्यः	53
13.	गीतामृतम्	58
14.	क इदं दुष्करं कुर्यात्	63
15.	जयः पराजयो वा	69
16.	अद्भुतं युद्धम्	74
17.	स्वाभाविकं सादृश्यम्	79
18.	मुक्तानि मुक्तकानि	83
19.	सत्यं मयूरः	88
20.	तथैव तिष्ठति	93
	अभ्यास 1 : पुनरावर्तन और क्रियापद-परिचय	97
	अभ्यास 2 : विशेषण प्रयोग-परिचय	104
	अभ्यास 3 : उपपद विभक्ति-परिचय	112
	अभ्यास 4 : कृदन्त-परिचय	114
	अभ्यास 5 : समास-परिचय	119
	अभ्यास 6 : विसर्ग सन्धि-परिचय	122

1. सं वदध्वम्

वेद भारतीय ज्ञान और धर्म परम्परा के आदि स्रोत हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के नाम से प्रसिद्ध ये चार वेद पद्यात्मक हैं। वेद के इन पद्यों को मंत्र के रूप में जाना जाता है। इन मन्त्रों द्वारा अनेक प्रकार की स्तुतियाँ की गई हैं, इस प्रकार की स्तुतियों के माध्यम से उपदेश भी दिए गए हैं।

वैदिक विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए वेद की इन प्रार्थनाओं से प्रेरणा ग्रहण करके अन्य विद्वानों, भक्त-कवियों ने भी अनेक स्तुतियाँ, प्रार्थनाएँ अलग-अलग लौकिक छन्दों में रची हैं। ये प्रार्थनाएँ पद्यबद्ध हैं और इन्हें श्लोक के रूप में जाना जाता है। इन रचनाओं में भी वेदों के समान वैश्विक भाव हैं। इतना ही नहीं, मानव जगत से आगे बढ़कर प्राणिमात्र के कल्याण की कामना की गई है। ऐसी ही भावना से युक्त दो प्रार्थनाएँ यहाँ प्रस्तुत की गई हैं।

प्रत्येक कार्य का प्रारम्भ मंगल प्रार्थना से करने की प्राचीन परम्परा रही है। इस परम्परा का अनुसरण करते हुए इन मन्त्रों तथा श्लोकों के माध्यम से संस्कृत के अध्ययन का मंगलाचरण करेंगे। प्रस्तुत पाठ में पसंद किए गए ऋग्वेद के मंत्र में सामाजिक व्यवहार से सम्बन्धित उपदेश दिए गए हैं। यजुर्वेद में से पसंद किए गए दूसरे मन्त्र में दुर्गुणों को दूर करने की प्रार्थना की गई है। जबकि तीसरे अथर्वेद के मंत्र में पारिवारिक जीवन का आदर्श बना रहे, ऐसा एक उपदेश दिया गया है। अंतिम दो श्लोक में संपूर्ण समाज तथा देश का हित और कल्याण हो, ऐसी शुभकामना प्रकट हुई है।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ॥ 1 ॥ ऋग्वेदे : 10.191.2

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद्भद्रं तन्नऽ आ सुव ॥ 2 ॥ यजुर्वेदे : 30.3

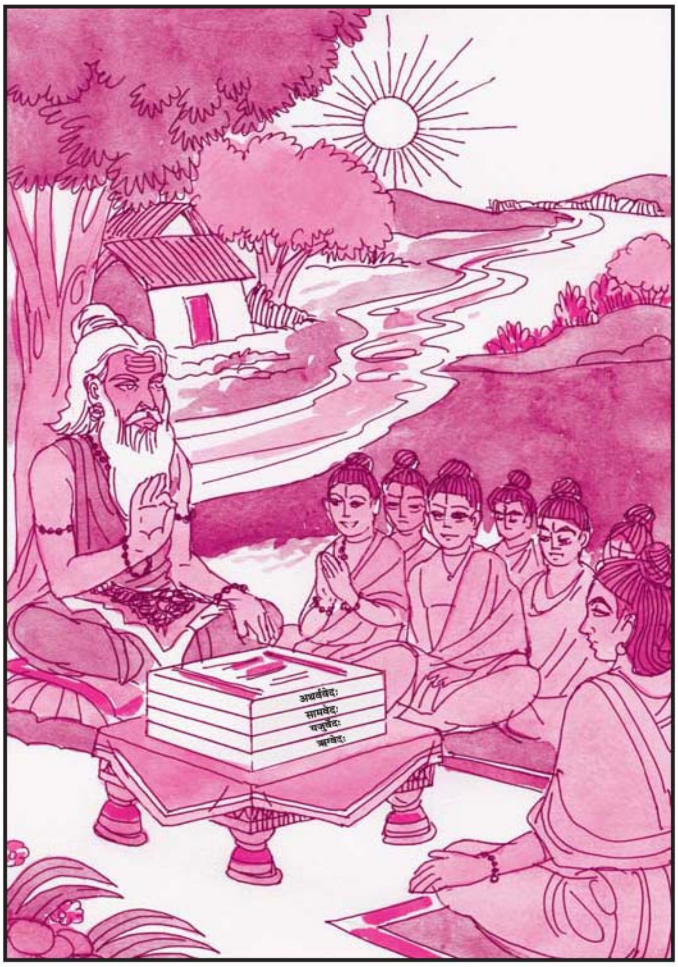

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम् ॥ 3 ॥ अथर्ववेदे 3.30.2

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥ 4 ॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितो मानवाः सन्तु निर्भयाः ॥ 5 ॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) अनुव्रतः व्रत के पीछे चलनेवाला **निरामयः** रोग रहित, निरोगी, स्वस्थ **पर्जन्यः** बरसात

(स्त्रीलिंग) : जाया पत्नी **पृथिवी** धरती, भूमि

(नपुंसकलिंग) दुरितम् खराब कार्य, दुर्गुण, दुष्कर्म

सर्वनाम : वः तुम्हारा **विश्वानि (नपुं.)** सभी **यत् (नपुं.)** जो **तत् (नपुं.)** वह **नः** हमारा **सर्वे (पुं.)** सभी **अयम् (पुं.)** यह

विशेषण : मधुमतीम् (वाचम्) मधुर वाणी (से) **क्षोभरहितः** उद्वेग रहित, घबराहट रहित, शान्त **मानवाः** मनुष्य **निर्भयाः** भय से रहित, निर्भय

अव्यय : यथा जैसे **मा** नहीं, निषेध

समास : क्षोभरहितः (क्षोभेन रहितः - तृतीया तत्पुरुष)

क्रियापद : प्रथम गण : (परस्मैपदी) **भू (भवति)** होना, विद्यमान, बनना **वद् (वदति)** बोलना, कहना **दृश् > पश्य् (पश्यति)** देखना, दृष्टिगोचर करना **वर्ष् (वर्षति)** बरसना

विशेष

1. शब्दार्थ : सम् गच्छध्वम् (तुम (हम) सब) साथ-साथ चलो, साथ मिलकर जाओ **सम् वदध्वम्** (तुम सब) साथ-साथ बोलो। **मनांसि** मन (ब.व.) **सम् जानताम्** एक समान ज्ञान प्राप्त करो, एक समान जानो **भागम्** हविष् के भाग को (अग्नि में डाली जाने वाली आहुति अर्थात् हविष्) **पूर्वे** पहले, प्राचीनकाल में **सम् जानानाः** समान जानने वाले, समान ज्ञानी, एकमत रहने वाले **उपासते** उपासना करते हैं **सवितः** हे सूर्य देवता, हे उत्पत्ति करने वाले (सम्बोधन है) **परा सुव** (तुम) दूर करो **आ सुव** (तुम) प्राप्त कराओ **पितुः** पिता के **मात्रा** माता के साथ **संमनाः** समान मन-विचार वाले **वाचम्** वाणी को, वचनों को **शान्तिवाम्** शान्तिदायक, शान्तियुक्त **भद्राणि** कल्याणकारी विषय, मंगलकारी भावनाएँ **कश्चित्** कोई भी **दुःखभाग्** दुःख को भागीदार, दुःख में सहभागी **काले** समय, (समय होने पर) **सस्यशालिनी** अन्न देने के स्वभाव वाली, अनाज के कारण सुशोभित

2. सन्धि : सवितर्दुरितानि (सवितः दुरितानि)। यद्भद्रम् (यत् भद्रम्)। तन्न आसुव (तत् नः आसुव)। पुत्रो मात्रा (पुत्रः मात्रा)। देशोऽयं क्षोभरहितो मानवाः (देशः अयम् क्षोभरहितः मानवाः)।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) पूर्वे के सं जानानाः भागम् उपासते ?

(क) मनुष्याः (ख) असुराः (ग) देवाः (घ) सर्वे

(2) कविः किं याचते ?

(क) भद्रम् (ख) दुरितम् (ग) सुखम् (घ) धनम्

(3) जाया कीदृशीं वाचं वदतु ?

(क) ललिताम् (ख) शान्तिवाम् (ग) ज्ञानयुताम् (घ) शोभनाम्

(4) सर्वे कीदृशाः भवन्तु ?

(क) योगिनः (ख) मानिनः (ग) सुखिनः (घ) बलिनः

(5) पर्जन्यः कदा वर्षतु ?

(क) ह्यः (ख) अद्य (ग) श्वः (घ) काले

(6) हे देव .... दुरितानि परासुव।

(क) अग्ने (ख) वरुण (ग) सवितर् (घ) वायो

(7) पुत्रः .... अनुव्रतः भवतु।

(क) मित्रस्य (ख) मातुः (ग) पितुः (घ) स्वसुः

(8) .... निरामयाः भवन्तु।

(क) पक्षिणः (ख) जन्तवः (ग) सर्वे (घ) पशवः

(9) सर्वे .... पश्यन्तु।

(क) दुरितानि (ख) फलानि (ग) धनानि (घ) भद्राणि

(10) पृथिवी .... भवतु।

(क) बलशालिनी (ख) सस्यशालिनी (ग) जलपूर्णा (घ) धनपूर्णा

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषया उत्तरत ।

(1) पूर्वे देवाः कथं भागम् उपासते ?

(2) जाया कस्मै मधुमतीं वाचं वदतु ?

(3) मानवाः कीदृशाः सन्तु ?

(4) कः क्षोभरहितः भवतु ?

3. रेखाङ्कितानां पदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं प्रयुज्य प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कदा, कः, कीदृशी, का)

(1) जाया मधुमतीं वाचं वदतु।

(2) पुत्रः मात्रा संमनाः भवतु।

(3) काले वर्षतु पर्जन्यः।

4. आज्ञार्थस्य अन्यपुरुष-बहुवचनरूपाणि चिनुत ।

भवतु	सन्तु	भवेत्
पश्यन्तु	वर्षतु	भवन्तु।

5. प्रश्नानाम् उत्तराणि मातृभाषायाम् लिखत ।

(1) ऋषि सूर्य से किस की याचना करते हैं ?

(2) पत्नी को पति के लिए कैसी वाणी का प्रयोग करना चाहिए ?

(3) ऋषि सबके लिए क्या आशा व्यक्त करते हैं ?

(4) संगठित रहने के लिए कवि क्या करने को कहते हैं ?

6. मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् – प्रार्थना के भावों को आप अपने शब्दों में वर्णित कीजिए।

7. श्लोकपूर्तिं कुरुत ।

(1) सं गच्छध्वं .... उपासते ॥

(2) सर्वे भवन्तु .... भवेत् ॥

प्रवृत्ति

- विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों में इन मन्त्रों का प्रयोग प्रार्थना के रूप में करें।
- इस प्रकार के अन्य मन्त्रों और श्लोकों का संग्रह करें।

2. यद्भविष्यो विनश्यति

संस्कृत में पंचतंत्र और हितोपदेश ये प्राणी कथा पर आधारित प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। इनमें प्राणियों को पात्र के रूप में लेकर मानवजीवन में उपयोगी चतुराई का बोध सरल और सहज तरीके से दिया गया है। आबाल वृद्ध सभी को इन कथाओं को सुनना अच्छा लगता है। रस की अनुभूति होने से कथा में दिए गए उपदेश सहज और सरल हो जाते हैं, जिससे कथा बोझ समान नहीं लगती है।

यह पाठ पंचतंत्र और हितोपदेश दोनों ग्रन्थों के आधार पर तैयार किया गया है। पंचतंत्र के रचयिता विष्णुशर्मा हैं। उन्होंने मित्रभेद, मित्रसंप्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश और अपरीक्षितकारक इस तरह कुल पाँच विभागों में पंचतंत्र की रचना की है। उसके प्रथम विभाग मित्रभेद में यह कथा है। हितोपदेश के रचयिता नारायण पंडित हैं। हितोपदेश में मित्रलाभ, सुहृद्‌भेद, विग्रह और संधि कुल चार विभाग हैं। संधि नामक चौथे विभाग में यह कथा है।

प्रस्तुत पाठ में अनागतविधाता, प्रत्युत्पन्नमति और यद्भविष्य कुल तीन नर-मछलियों की कथा है। मछुआरों से बचने के लिए अनागतविधाता दूसरे सरोवर में चला जाता है। प्रत्युत्पन्नमति जाल में फँस जाता है और अपनी शीघ्रबुद्धि से मार्ग ढूँढ़कर अपनी रक्षा करता है। यद्भभविष्य नामक तीसरा नर-मत्स्य 'जब आयेगा तब देखा जायेगा' ऐसा सोचकर स्वयं को भविष्य पर छोड़ देता है और विनाश को आमंत्रित करता है। तीनों मछलियों के नाम अपने-अपने स्वभाव का निर्देश करते हैं।

भविष्य में आनेवाली समस्याओं का समाधान व्यक्ति को पहले से ही सोचना चाहिए अथवा जब समस्या आ जाए तब अपनी बुद्धि का प्रयोग करके उन समस्याओं से बचकर निकलने का मार्ग ढूँढ़ लेना चाहिए। मात्र किस्मत के भरोसे बैठे रहनेवाले आलसी और निरुद्यमी व्यक्ति की दशा यद्भविष्य के समान होती है।

पुरा एकस्मिन् जलाशये अनागतविधाता, प्रत्युत्पन्नमतिः यद्भविष्यश्चेति त्रयो मत्स्याः वसन्ति स्म। अथ कदाचित् तं जलाशयं दृष्ट्वा धीवरैः उक्तम् - "अहो बहुमत्स्योऽयं ह्रदः। कदाचिद् अपि न अस्माभिः अन्वेषितः। तदद्य आहारवृत्तिः सञ्जाता। श्वः अत्रागम्य मत्स्यकूर्मादयो व्यापादयितव्याः इति निश्चयः।"

अथ तेषां तत्कुलिशोपमं वचनं समाकर्ण्य मत्स्याः परस्परं प्राहुः – ''श्रुतोऽयं धीवरालापः। अधुना अस्माभिः किं कर्तव्यम्।'' तत्र अनागतविधाता नाम मत्स्यः प्राह – ''नूनं प्रभातसमये धीवराः अत्रागम्य मत्स्यसंक्षयं करिष्यन्ति इति मम मनसि वर्तते। तन्न युक्तं साम्प्रतं क्षणमपि अत्र अवस्थातुम्। अस्माभिः रात्रौ एव किञ्चित् समीपं सरः गन्तव्यम्। अहं तावत् जलाशयान्तरं गच्छामि।''

अपरः प्रत्युत्पन्नमतिः प्राह – ''भविष्यदर्थे प्रमाणाभावात् कुत्र मया गन्तव्यम्। तदुत्पन्ने यथाकार्यं तदनुष्ठेयम्। तथा चोक्तम् – उत्पन्नामापदं यस्तु समाधत्ते स बुद्धिमान्।''

ततो यद्भविष्येण उक्तम् – ''धीवराणां वचनमात्रेण पितृपैतामहिकस्य जलाशयस्य त्यागः न युज्यते। यदि आयुःक्षयोऽस्ति तदा अन्यत्र गतानामपि मृत्युः भविष्यति एव। उक्तं च –

यदभावि न तद्भावि भावि चेन्न तदन्यथा।
इति चिन्ताविषघ्नोऽयमगदः किं न पीयते॥''

अथ तयोः निश्चयं ज्ञात्वा अनागतविधाता निष्क्रान्तः सह परिजनेन। द्वौ इमौ तत्रैव जलाशये स्थितौ। अपरेद्युः धीवरैः आगत्य जलाशये जालं क्षिप्तम्। जालेन बद्धः प्रत्युत्पन्नमतिः मृतवद् आत्मानं संदर्श्य स्थितः। ततो जालाद् अपसारितः यथाशक्ति उत्प्लुत्य गम्भीरं नीरं प्रविष्टः। यद्भविष्यः धीवरैः प्राप्तः व्यापादितः च। अत एवोक्तम् –

अनागतविधाता च प्रत्युत्पन्नमतिस्तथा।
द्वावेतौ सुखमेधेते यद्भविष्यो विनश्यति॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) जलाशयः तालाब, सरोवर **अनागतविधाता** एक मत्स्य का नाम (इस शब्द का अर्थ है – जो आया नहीं है, उसका अनुमान करने वाला, आपत्ति आने से पूर्व उसके बचने का उपाय करना) **प्रत्युत्पन्नमतिः** एक मत्स्य (मछली) का नाम (इस शब्द का अर्थ – प्रत्युत्पन्न अर्थात् हाजिर जवाब, जिसकी बुद्धि तत्काल–त्वरित निर्णय लेने में समर्थ है, वह) **यद्भविष्यः** एक मत्स्य (नर मछली) का नाम (इस शब्द का अर्थ है – जो होना है वो हो इस विचारधारा से सम्पन्न, ऐसा विचार करनेवाला) **मत्स्यः** नर मछली **धीवरः** मछुआरा **आलापः** संवाद, बातचीत **ह्रदः** तालाब, सरोवर **मृत्युः** मृत्यु, मरण (संस्कृत में पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है) **अगदः** औषधि **परिजनः** परिजन, स्वजन **कुलिशः** वज्र, इन्द्र के एक हथियार का नाम।

(स्त्रीलिंग) : आहारवृत्तिः खुराक, आहार

(नपुंसकलिंग) : जालम् जाल, मछली पकड़ने के लिए पानी में डाली जाने वाली जाली **नीरम्** पानी, जल

सर्वनाम : एकस्मिन् (पु.) एक (एक में) **तम्** (पु.) उसे **अस्माभिः** (पु.–नपुं.) हमारे द्वारा, हमसे **तेषाम्** (पु.–नपुं.) उनका, उन सभी का **मम** मेरा **अपरः** दूसरा **मया** मुझसे, मेरे द्वारा **यः** (पु.) जो **सः** (पु.) वह, वो **तयोः** (पु.–नपुं.) उन सभी का, उनका **इमौ** (पु.) ये दोनों, ये दो **एतौ** (पु.) ये दोनों, ये दो

विशेषण : बहुमत्स्यः अयम् (ह्रदः) ढेर सारी मछलियों से भरा हुआ (तालाब, सरोवर) **कुलिशोपमम् (वचनम्)** कुलिश–वज्र (इन्द्र का नुकीला हथियार, पर्वत को भी तोड़ने में समर्थ ऐसा उग्र) की उपमा दी जा सके ऐसे (वचन) **पितृपैतामहिकः (जलाशयः)** पूर्वजों से सम्बन्धित (तालाब), पैतृक, वारसागत उपयोग के लिए प्राप्त, (तालाब) **गम्भीरम् (नीरम्)** गहरा (पानी)

अव्यय : पुरा पहले, आगे **अथ** अब (आरम्भ के अर्थ में प्रयोग किया जाने वाला शब्द) **अद्य** आज **श्वः** आने वाला कल **अधुना** अभी **मृतवत्** मरे हुए के समान **यथाशक्ति** शक्ति के अनुसार **अत एव** इसलिए

कृदन्त : (सं.भू.कृ.) दृष्ट्वा देखकर **समाकर्ण्य** सुनकर **ज्ञात्वा** जानकर **आगम्य** आकर **संदर्श्य** दिखाकर **उत्प्लुत्य** कूदकर **(विध्यर्थ कृदन्त) व्यापादयितव्याः** मारना चाहिए, मारने योग्य **कर्तव्यम्** करने जैसा, करने योग्य, करना चाहिए **गन्तव्यम्** जाने योग्य, जाना चाहिए **अनुष्ठेयम्** अनुष्ठान करने योग्य, अनुष्ठान करना चाहिए **(हेत्वर्थ कृदन्त) अवस्थातुम्** खड़े होने के लिए, टिके रहने के लिए, स्थिर रहने के लिए **(कर्मणि भू. कृ.) उक्तम्** कहा, कहा गया **अन्वेषितः** ढूँढ़ा, ढूँढ़ा हुआ, खोजा हुआ **सञ्जाता** जन्म लिया, उत्पन्न हुई **निष्क्रान्तः** निकल गए, बाहर चले गए **स्थितौ** (दो लोग) खड़े रहे **क्षिप्तम्** फेंका, फेंका हुआ **बद्ध** बँधा हुआ **अपसारितः** दूर (खिसकाना) सरकाना, (दूर किया) दूर हटाया **प्रविष्टः** प्रवेश किया

समासः अनागतविधाता (न आगतम् – अनागतम्, नञ् तत्पुरुष), अनागतस्य विधाता – षष्ठी तत्पुरुष)। प्रत्युत्पन्नमतिः (प्रत्युत्पन्ना मतिः यस्य सः – बहुव्रीहि)। बहुमत्स्यः (बहवः मत्स्याः यस्मिन् सः – बहुव्रीहि)। आहारवृत्तिः (आहारस्य वृत्तिः – षष्ठी तत्पुरुष)। कुलिशोपमम् (कुलिशस्य उपमा यस्य सः, बहुव्रीहि)। धीवरालापः (धीवराणाम् आलापः – षष्ठी तत्पुरुष)। प्रभातसमये (प्रभातस्य समयः, तस्मिन् – षष्ठी तत्पुरुष)। मत्स्यसंक्षयम् (मत्स्यानां संक्षयः, तम् – षष्ठी तत्पुरुष)। जलाशयान्तरम् (अन्यः जलाशयः – जलाशयान्तरम्, कर्मधारय)। (प्रमाणाभावात् (प्रमाणानाम् अभावः, तस्मात् – षष्ठी तत्पुरुष)। आयुःक्षयः (आयुषः क्षयः – षष्ठी तत्पुरुष)।

[**सूचना :** इस पुस्तक में दिए गए सामासिक पदों (समास) का विग्रह मात्र अध्यापन की सरलता के लिए हैं।]

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपदी) वस् रहना बसना, निवास करना **(वसति) गम् > गच्छ्** जाना **(गच्छति)** (आत्मनेपदी) **वृत्** होना **(वर्तते) एध्** बढ़ना, वृद्धि प्राप्त करना **(एधते)**

विशेष

1. शब्दार्थ : अस्माभिः अन्वेषितः हमने ढूँढ़ लिया **आहारवृत्तिः सञ्जाता** खाने जितनी व्यवस्था हो गई है, भोजन ग्रहण करने योग्य व्यवस्था हो गई है **धीवरालापः** मछुआरों की बात-चीत **मत्स्यसंक्षयम्** नर मछलियों का विनाश **करिष्यन्ति इति मम मनसि वर्तते** (वे लोग) करेंगे ऐसा मेरे मन में है **तत् न युक्तम्** वह उचित नहीं है, वह योग्य नहीं है **साम्प्रतम्** अभी, तुरन्त **जलाशयान्तरम्** दूसरे तालाब की ओर **भविष्यदर्थे** भविष्य के लिए, आगामी समय के लिए **प्रमाणाभावात्** प्रमाण का अभाव होने से, शिनाख्त न होने से **यथाकार्यम्** कार्य के अनुसार, कार्यानुरूप **उत्पन्नाम् आपदम्** उत्पन्न हुई आपत्ति से, उत्पन्न हुई आपदा से **समाधत्ते** समाधान करते हैं **चिन्ताविषघ्नः** चिन्ता रूपी विष से मृत, चिन्ता के कारण मरा हुआ **किम् न पीयते** क्यों नहीं पिया जाता है, क्यों नहीं पीते

2. सन्धि : यद्भविष्यश्चेति (यद्भविष्यः च इति)। त्रयो मत्स्याः (त्रयः मत्स्याः)। बहुमत्स्योऽयं ह्रदः (बहुमत्स्यः अयम् ह्रदः)। अत्रागम्य (अत्र आगम्य)। मत्स्यकूर्मादयो व्यापादयितव्याः (मत्स्यकूर्मादयः व्यापादयितव्याः)। श्रुतोऽयम् (श्रुतः अयम्)। अत्रागम्य (अत्र आगम्य)। तन्न युक्तम् (तत् न युक्तम्)। चोक्तम् (च उक्तम्)। यस्तु (यः तु)। आयुःक्षयोऽस्ति (आयुःक्षयः अस्ति)। चिन्ताविषघ्नोऽयमगदः (चिन्ताविषघ्नः अयम् अगदः)। तत्रैव (तत्र एव)। ततो जालात् (ततः जालात्)। अत एवोक्तम् (अतः एव उक्तम्)। द्वावेतौ (द्वौ एतौ)। यद्भविष्यो विनश्यति (यद्भविष्यः विनश्यति)।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) धीवराणां वचनं कीदृशम् आसीत् ? ◯

(क) विषोपमम् (ख) अनलोपमम् (ग) कुलिशोपमम् (घ) कृतान्तोपमम्

(2) अन्यं जलाशयं गन्तुं कः मत्स्यः निश्चयं करोति ? ◯

(क) सर्वे (ख) अनागतविधाता (ग) यद्भविष्यः (घ) प्रत्युत्पन्नमतिः

(3) धीवरैः उक्तम्, अद्य अस्माकं वृत्तिः .... । ◯

(क) सञ्जाता (ख) सञ्जातः (ग) सञ्जातिः (घ) सञ्जातम्

(4) अनागतविधाता .... सह निष्क्रान्तः। ◯

(क) परिजनम् (ख) परिजनाय (ग) परिजनस्य (घ) परिजनेन

(5) प्रत्युत्पन्नमतिः प्राह, भविष्यदर्थे प्रमाणाभावात् कुत्र मया .... । ◯

(क) गन्तुम् (ख) गतम् (ग) गन्तव्यम् (घ) गतः

(6) अनागतविधाता प्राह, अत्र क्षणमपि .... न युक्तम्। ◯

(क) अवस्थातुम् (ख) अवस्थितः (ग) गन्तुम् (घ) अवगम्य

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषाया उत्तरत ।

(1) जलाशये के त्रयः मत्स्याः वसन्ति स्म ?
(2) अपरेद्युः धीवरैः जलाशये किं क्षिप्तम् ?
(3) कौ द्वौ मत्स्यौ जलाशये एव स्थितौ ?
(4) जलात् अपसारितः प्रत्युत्पन्नमतिः कीदृशं नीरं प्रविष्टः ?
(5) कः मत्स्यः धीवरैः व्यापादितः ?

3. अधोलिखितानां कृदन्तानां प्रकारं लिखत ।

(1) सञ्जाता .... (2) अनुष्ठेयम् ....
(3) समाकर्ण्य .... (4) बद्धः ....
(5) अवस्थातुम् .... (6) गन्तव्यम् ....

4. समासप्रकारं लिखत ।

(1) जलाशयान्तरम्। .... (2) बहुमत्स्यः। ....
(3) धीवरालापः। .... (4) प्रत्युत्पन्नमतिः। ....
(5) प्रमाणाभावात्। ....

5. सन्धिविच्छेदं कुरुत ।

(1) यद्भविष्यश्चेति। ....
(2) श्रुतोऽयम् ....
(3) प्रत्युत्पन्नमतिस्तथा ....

6. रेखाङ्कितानां पदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कदा, कस्मात्, कीदृशः, केन, कः)

(1) बहुमत्स्यः अयं ह्रदः।

(2) अस्माभिः रात्रौ एव समीपं सरः गन्तव्यम्।

(3) अनागतविधाता परिजनेन सह निष्क्रान्तः।

(4) प्रत्युत्पन्नमतिः जालात् अपसारितः।

(5) धीवरैः यद्भविष्यः व्यापादितः।

7. कथायाः क्रमानुसारेण वाक्यानि लिखत ।

(1) अहं तावज्जलाशयान्तरं गच्छामि।

(2) पितृपैतामहिकस्य जलाशयस्य त्यागः न युज्यते।

(3) प्रमाणाभावात् कुत्र मया गन्तव्यम्।

(4) श्वः अत्र आगम्य मत्स्यकूर्मादयो व्यापादयितव्याः।

(5) धीवरैः जलाशये जालं क्षिप्तम्।

(6) यद्भविष्यः धीवरैः प्राप्तः व्यापादितः च।

8. मातृभाषायाम् उत्तरत ।

(1) सरोवर देखकर मछुआरों ने क्या सोचा ?

(2) मछुआरों की बातचीत सुनकर नर मछलियों ने परस्पर क्या कहा ?

(3) अनागत विधाता ने अपने किस विचार (मत) को व्यक्त किया ?

(4) प्रत्युत्पन्नमति अन्य जलाशय में क्यों नहीं गया ?

(5) सरोवर छोड़ने के विषय में यद्भविष्य का क्या मानना है ?

(6) इस कथा से क्या सीख मिलती है ?

9. पात्रैः सह यथास्वम् उक्तिं संयोजयत ।

क	ख
(1) धीवराः	(1) तदुत्पन्ने यथाकार्यं तदनुष्ठेयम्।
(2) अनागतविधाता	(2) श्रुतोऽयं धीवरालापः ?
(3) यद्भविष्यः	(3) अहो बहुमत्स्योऽयं ह्रदः।
(4) प्रत्युत्पन्नमतिः	(4) यदभावि न तद्भावि।
	(5) तन्न युक्तं साम्प्रतं क्षणमपि अत्र अवस्थातुम्।

प्रवृत्ति

- पंचतंत्र और हितोपदेश की अन्य कथाओं को पढ़िए।
- आने वाले संकट से बचने के उपाय से संबंधित अन्य भाषा की सूक्तियाँ एकत्रित कीजिए।
- इन्टरनेट के माध्यम से पंचतंत्र और हितोपदेश की कथाओं पर आधारित चित्रों को देखें तथा एकत्र करें।

3. स्वस्थवृत्तं समाचर

महाकवि कालिदास ने कुमारसंभव के पाँचवे सर्ग के एक प्रसंग में लिखा है कि 'धर्म निभाने (करने के लिए) के लिए सर्व प्रथम साधन शरीर है' इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य के पास धर्म का निर्वाह करने के लिए चाहे कितनी ही वस्तुएँ उपलब्ध हों, परन्तु यदि स्वस्थ शरीर न हो तो उपलब्ध समस्त वस्तुएँ निरर्थक हो जाती हैं।

मानव का शरीर स्वस्थ रहे इसलिए कुछ उपाय किए जाते हैं। इन उपायों में दिनचर्या भी एक है। यदि मानव का नित्यकर्म (दिनचर्या) उत्तम है तो उसका स्वास्थ्य भी उत्तम रहता है। आयुर्वेदशास्त्र के प्राचीन विद्वान् और आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान् इस विषय पर पूर्णतः सहमत हैं।

प्रस्तुत पाठ में मनुष्य की आदर्श दिनचर्या का उल्लेख किया गया है। इस दिनचर्या में मात्र खाना-पीना उठना-बैठना, चलना-सोना जैसी बातों का समावेश नहीं होता, परन्तु मानवजीवन का उत्तम नैतिक आदर्श माना जाने वाला सज्जन-संगति, गुरुजनों के प्रति आदर-भाव, विद्याप्राप्ति के लिए सदैव उद्यमशीलता, सत्य का पालन जैसे सद्गुणों को भी दिनचर्या का अभिन्न अंग माना जाता है। यहाँ प्रयोग किए गए छोटे-छोटे वाक्यों में आनेवाले क्रियापदों के माध्यम से आज्ञार्थक क्रियापद के रूपों को तथा उन क्रियापदों से व्यक्त होने वाले अर्थ का अध्ययन भी अपेक्षित है।

बाल उत्तिष्ठ शय्यातः स्वस्थवृत्तं समाचर ।
स्मर जगद्विधातारं ततः शुद्धं जलं पिब ॥ 1 ॥
शतं पदानि निष्क्रम्य शौचार्थं गच्छ सत्वरम् ।
फेनिलेन करौ कृत्वा शुद्धौ व्यायाममाचर ॥ 2 ॥
तैलं मर्दय काये त्वं ततः स्नानं समाचर ।
यथाविधि जलेनैव वस्त्रं स्वीयं प्रधावय ॥ 3 ॥
पूर्वाभिमुखमासीनः कुरु सन्ध्याविधिं तथा ।
वन्दस्व पितरौ नित्यं प्रातराशम् अशान च ॥ 4 ॥

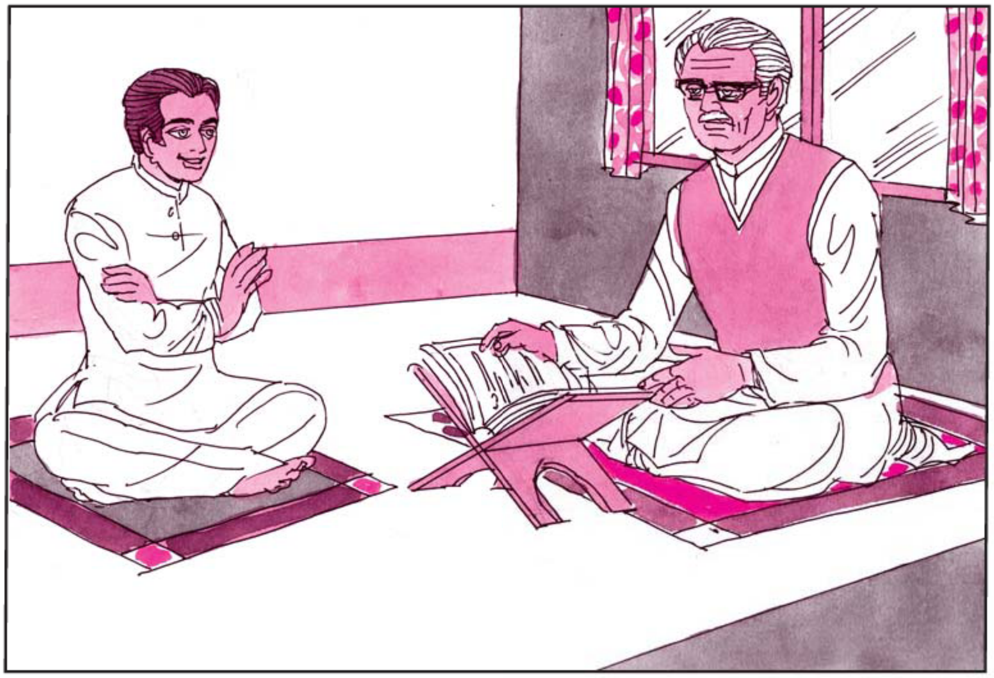

पाठशालां समं मित्रैः गच्छ पाठं तथा पठ ।
एवं समादिशत् पुत्रं तातः पुत्रहिते रतः ॥ 5 ॥
त्यज दुर्जनसंसर्गं भज साधुसमागमम् ।
कुरु पुण्यमहोरात्रं स्मर नाम हरेः सदा ॥ 6 ॥
प्रविचार्योत्तरं देयं सहसा न वदेः क्वचित् ।
शत्रोरपि गुणाः ग्राह्या दोषास्त्याज्याः गुरोरपि ॥ 7 ॥
ध्येयं सनातनं ब्रह्म हेयं दुःखमनागतम् ।
कायिकं सुखमादेयं विधेयं जनसेवनम् ॥ 8 ॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) फेनिलः साबुन **करः** हाथ, हस्त **कायः** शरीर (संस्कृत भाषा में इस शब्द का प्रयोग पुल्लिंग में किया जाता है।) **सन्ध्याविधिः** संध्याविधि, सुबह और शाम को ईश्वर की उपासना की विधि (प्रक्रिया) (दिन और रात दोनों समय संध्याकाल होती है। संध्याकाल के समय इस विधि द्वारा आत्मा और परमात्मा की संधि होती है। अतः इसे 'संध्याविधि' कहा जाता है) **प्रातराशः** सुबह का नास्ता **तातः** पिता, सम्मान द्योतक शब्द

(स्त्रीलिंग) शय्या बिस्तर, खाट

(नपुंसकलिंग) वृत्तम् आचरण, व्यवहार **शतम्** एक सौ (संख्यावाचक शब्द) **पदम्** कदम **तैलम्** तेल (तिल का) **पुण्यम्** सत्कर्म **ब्रह्म** परम तत्त्व, परमेश्वर

विशेषण : शुद्धम् (जलम्) स्वच्छ (पानी) **शतम् (पदानि)** सौ (कदम), एक सौ (कदम, डग) **स्वीयम् (वस्त्रम्)** अपना (कपड़ा, वस्त्र) **सनातनम् (ब्रह्म)** शाश्वत (ब्रह्म) **अनागतम् (दुःखम्)** न आया हुआ, (दुःख), अभी तक आया नहीं ऐसा (दुःख) **कायिकम् (सुखम्)** शारीरिक सुख **रतः** संलग्न, तल्लीन, जुड़ा हुआ

अव्यय : शय्यातः बिस्तर में से, पलंग पर से **यथाविधि** विधि के अनुरूप, विधिसर **तथा** उस तरह **समम्** साथ **एवम्** इस तरह **सदा** हमेशा, सदैव **सहसा** अचानक, यकायक **क्वचित्** कहीं

कृदन्त : (सं.भू.कृ.) निष्क्रम्य निकलकर, चलकर **कृत्वा** करके **प्रविचार्य** अच्छी तरह से सोच-विचार करके, दृढ़ संकल्प करके **(विध्यर्थ कृ.) देयम्** देना चाहिए, दीजिए **ग्राह्याः** ग्रहण करने योग्य, ग्रहण (लेना, स्वीकार) करना चाहिए **त्याज्याः** त्याग करने लायक, छोड़ना चाहिए **ध्येयम्** ध्यान करना चाहिए **हेयम्** छोड़ देना चाहिए, छोड़ने योग्य, हीन **आदेयम्** लेना चाहिए, लेने (स्वीकार) लायक **विधेयम्** विधान करना चाहिए, करना चाहिए

समास : स्वस्थवृत्तम् (स्वस्थं च तत् वृत्तम् - कर्मधारय)। जगद्विधातारम् (जगतः विधाता, तम् - षष्ठी तत्पुरुष)। शौचार्थम् (शौचेन अर्थः, तम् - तृतीया तत्पुरुष)। सन्ध्याविधिम् (सन्धायाः विधिः, तम् - षष्ठी तत्पुरुष)। पुत्रहिते (पुत्रेभ्यः हितम्, तस्मिन् - चतुर्थी तत्पुरुष)। दुर्जनसंसर्गम् (दुर्जनस्य संसर्गः, तम् - षष्ठी तत्पुरुष)। साधुसमागमम् (साधोः समागमः, तम् - षष्ठी तत्पुरुष)। अनागतम् (न आगतम् - नञ् तत्पुरुष)। जनसेवनम् (जनानां सेवनम् - षष्ठी तत्पुरुष)।

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपद) उत् + स्था > तिष्ठ् खड़े रहना, उठना **(उत्तिष्ठति)। स्मृ** याद करना **(स्मरति)। पा > पिब्** पीना **(पिबति)। स्था > तिष्ठ्** उठना **(तिष्ठति)। सम् + आ + चर्** अच्छी तरह से आचरण करना **(समाचरति)। प्र + धाव्** धोना, साफ करना **(प्रधावति)। सम् + आ + दिश्** आदेश देना, आज्ञा देना **(समादिशति)। भज्** भजना, उपासना करना **(भजति)।**

प्रथम गण (आत्मनेपदी) वन्द् वंदन करना **(वन्दते)**

विशेष

1. शब्दार्थ : जगद्‌विधातारम् जगत् के सर्जन करने वाले को, संसार को बनाने वाले को **शौचार्थम्** शौच क्रिया के लिए **गच्छ** जाओ **मर्दय** मालीश करे **प्रधावय** अच्छी तरह साफ करो **पूर्वाभिमुखम्** पूर्व दिशा की ओर मुख रखकर, पूर्व दिशा की ओर मुख करके **आसीनः** बैठा हुआ **पितरौ** माता-पिता को **अशान** खा **एवम् समादिशत्** इस तरह आदेश दिया **कुरु** करो **अहोरात्रम्** रात-दिन, अहर्निश **उत्तरं देयम्** उत्तर (जवाब) देना चाहिए **वदेः** बोलना, तुम्हें बोलना चाहिए

2. सन्धिः जलेनैव (जलेन एव)। प्रविचार्योत्तरम् (प्रविचार्य उत्तरम्)। शत्रोरपि (शत्रोः अपि)। दोषास्त्याज्याः (दोषाः त्याज्याः)। गुरोरपि (गुरोः अपि)।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) बालः किं समाचरेत् ? ◯

(क) भ्रमणम्　(ख) स्वस्थवृत्तम्　(ग) कार्यम्　(घ) सौख्यम्

(2) किं कृत्वा स्नानं समाचरेत् ? ◯

(क) भोजनम्　(ख) पठनम्　(ग) तैलमर्दनम्　(घ) व्यायामम्

(3) त्वं मित्रैः .... पाठशालां गच्छ। ◯

(क) परितः　(ख) समम्　(ग) ऋते　(घ) पुरतः

(4) शत्रोरपि गुणाः .... । ◯

(क) ग्राह्याः　(ख) त्याज्याः　(ग) हेयाः　(घ) ध्येयाः

(5) जनैः किं ध्येयम् ? ◯

(क) सुखम्　(ख) दुःखम्　(ग) ब्रह्म　(घ) जनसेवनम्

(6) कथम् आसीनेन सन्ध्याविधिः करणीयः। ◯

(क) दक्षिणाभिमुखेन　(ख) उत्तराभिमुखेन　(ग) पश्चिमाभिमुखेन　(घ) पूर्वाभिमुखेन

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषया उत्तरत ।

(1) प्रातःकाले कं स्मरेत् ?

(2) कीदृशं जलं पिबेत् ?

(3) कीदृशः तातः पुत्रं समादिशत् ?

(4) कस्य संसर्गं त्यजेत् ?

(5) किं कृत्वा उत्तरं देयम् ?

3. पुरुषवचनानुसारं धातुरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

		एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
(1)	उ. पु.	....	गच्छाव	....
	म. पु.	गच्छ	....	....
	अ. पु.	....	....	गच्छन्तु
(2)	उ. पु.	वन्दे	....	....
	म. पु.	....	....	वन्दध्वम्
	अ. पु.	....	वन्देताम्	....

4. वचनानुसारं शब्दरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
(1)	गुरोः	....	....
(2)	....	....	मित्रैः
(3)	काये	....	....
(4)	वस्त्रम्	....	....

5. मातृभाषायाम् उत्तरं लिखत ।

(1) पद्य के आधार पर दिनचर्या का आलेखन कीजिए।

(2) पद्य में प्रयुक्त विध्यर्थ (विधिलिङ्ग्) के रूपों को, विध्यर्थकृदन्त के रूपों में बदलिए।

प्रवृत्ति

- अपनी दैनन्दिनी में दैनिक कार्यों को लिखिए।
- आप अपनी दिनचर्या की समय-सारिणी बनाइए।

4. जनार्दनस्य पश्चिमः सन्देशः

संस्कृत साहित्य में महाकवि भास अपनी नाट्यरचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके द्वारा रचित 13 रूपक प्राप्त हैं, जिन्हें 'भासनाटकचक्रम्' के नाम से जाना जाता है। इन 13 रूपकों में से 'दूतघटोत्कचम्' नामक एकांकी रूपक में से प्रस्तुत नाट्यांश लिया गया है।

प्रस्तुत पाठ की कथावस्तु महाभारत पर आधारित है। कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध प्रारम्भ हो चुका है। आज इस युद्ध में अनीति और अन्याय से अभिमन्यु का वध किया गया है। अतः अर्जुन अत्यन्त दुःखी हैं और उन्होंने अभिमन्यु का वध करनेवाले लोगों का वध करने के संकल्प की घोषणा की है। इस करुण परिस्थिति में अभी भी किसी तरह युद्ध रुक जाए, इसलिए श्रीकृष्ण एक प्रयास करना चाहते हैं। अभिमन्यु के वध की करुण घटना से पांडव शोकाकुल हैं। उसे धृतराष्ट्र और दुर्योधन की दृष्टि के सामने रख श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र को समझाने का प्रयास करते हैं। वे घटोत्कच को अपना दूत बनाकर शांति का सन्देश भेजते हैं। परन्तु युद्ध के उन्माद में डूबे हुए दुर्योधन और उनके सहयोगी शकुनि इत्यादि इस शान्ति संदेश को सुनने के लिए तैयार नहीं होते। अन्ततः घटोत्कच श्रीकृष्ण का पश्चिम-अन्तिम संदेश सुनाते हैं।

दूत के रूप में गए हुए घटोत्कच का दुर्योधन और शकुनि के साथ जो रोचक संवाद हुआ है, उससे नाट्यरस की उत्पत्ति होती है। महाकवि भास ने राक्षसी के पुत्र घटोत्कच के पात्र का उपयोग करके प्रेक्षकों के मानस-पटल पर दुर्योधन की राक्षसी-वृत्ति को स्थापित करने का सफल प्रयास किया है। एक तरफ राक्षसी हिडम्बा के पुत्र घटोत्कच मानवीय आचरण करते हैं और वहीं दूसरी ओर मनुष्य (धृतराष्ट्र) के पुत्र दुर्योधन अमानवीय (राक्षसी) व्यवहार करते हैं। यह उत्तम विरोधाभास महाकवि भास ने अपनी उत्तम नाट्यकला के बल पर स्थापित किया है। दुर्योधन का यह व्यवहार अन्ततः समस्त परिवार के विनाश को आमंत्रित करता है। समाधान का प्रस्ताव न स्वीकार करनेवाला व्यक्ति अपना और अपने परिवार का विनाश स्वयं कर लेता है। यह तथ्य इस रूपक के द्वारा स्पष्ट किया गया है।

घटोत्कचः - (प्रविश्य) अये अयम् अत्रभवान् धृतराष्ट्रः। अनार्यशतस्य उत्पादयिता। (उपसृत्य) पितामह ! अभिवादये घटोत्क.....। (इत्यर्धोक्ते) न न, अयम् अक्रमः। युधिष्ठिरादयश्च मे गुरवो भवन्तमभिवादयन्ति। पश्चात् घटोत्कचोऽहम् अभिवादये।

धृतराष्ट्रः - एहि एहि पुत्र !

घटोत्कचः - अहो कल्याणः खलु अत्रभवान्। कल्याणानां प्रसूतिं पितामहमाह भगवान् चक्रायुधः।

धृतराष्ट्रः - (आसनात् उत्थाय) किमाज्ञापयति भगवान् चक्रायुधः।

घटोत्कचः - न न न। आसनस्थेन एव भवता श्रोतव्यो जनार्दनस्य सन्देशः।

धृतराष्ट्रः - यदाज्ञापयति भगवान् चक्रायुधः। (उपविशति।)

घटोत्कचः - पितामह ! श्रूयताम्। हा वत्स ! अभिमन्यो ! हा वत्स ! कुरुकुलप्रदीप ! हा वत्स ! यदुकुलप्रवाल ! तव जननीं मातुलं मामपि परित्यज्य पितामहं द्रष्टुमाशया स्वर्गमभिगतोऽसि। पितामह ! एकपुत्रविनाशात् अर्जुनस्य तावत् ईदृशी खलु अवस्था, का पुनर्भवतो भविष्यति। ततः क्षिप्रम् इदानीम् आत्मबलाधानं कुरुष्व। यथा ते पुत्रशोकसमुत्थितोऽग्निर्न दहेत्प्राणमयं हविरिति।

शकुनिः - यदि स्याद्वाक्यमात्रेण निर्जितेयं वसुन्धरा
वाक्ये वाक्ये यदि भवेत्सर्वक्षत्रवधः कृतः ॥

घटोत्कचः - शकुनिरेष व्याहरति। भोः शकुने ! अक्षान् विमुच्य भव बाणयोग्यः।

दुर्योधनः - भो भोः प्रकृतिं गतः। वयमपि खलु रौद्राः राक्षसोग्रस्वभावाः।

घटोत्कचः - शान्तम् पापम् शान्तम् पापम्। राक्षसेभ्योऽपि भवन्त एव क्रूरतराः। कुतः -

न तु जतुगृहे सुप्तान् भ्रातॄन् दहन्ति निशाचराः

शिरसि न तथा भ्रातुः पत्नीं स्पृशन्ति निशाचराः ॥

दुर्योधनः - दूतः खलु भवान् प्राप्तो न त्वं युद्धार्थमागतः।

गृहीत्वा गच्छ सन्देशं न वयं दूतघातकाः ॥

घटोत्कचः - (सरोषम्) किं दूत इति मां प्रधर्षयसि। मा तावत् भो ! न दूतोऽहम्। प्रहरध्वं समाहताः।

(सर्वे उत्तिष्ठन्ति।)

धृतराष्ट्रः - पौत्र ! घटोत्कच ! मर्षयतु भवान्। मद्वचनावगन्ता भव।

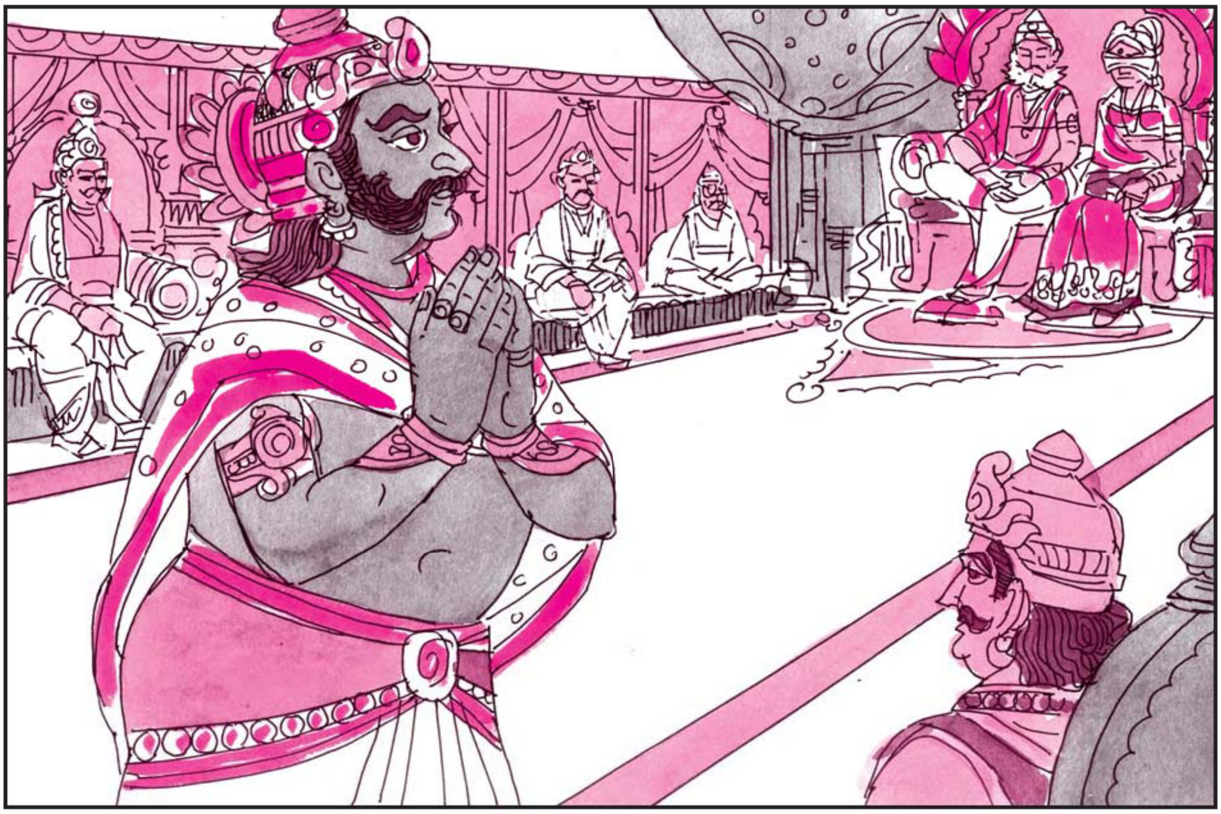

घटोत्कचः - भवतु भवतु। पितामहस्य वचनात् दूतोऽहमस्मि। भो भो राजानः ! श्रूयतां जनार्दनस्य पश्चिमः सन्देशः।

धर्मं समाचर कुरु स्वजनव्यपेक्षां

यत्काङ्क्षितं मनसि सर्वमिहानुतिष्ठ ।

जात्योपदेश इव पाण्डवरूपधारी

सूर्यांशुभिः सममुपैष्यति वः कृतान्तः ॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) घटोत्कचः भीम और हिडिम्बा के पुत्र **पितामहः** पिता के पिता, बाबा, दादा **चक्रायुधः** चक्र जिसका हथियार है वह अर्थात् श्रीकृष्ण **जनार्दनः** दुष्ट लोगों (व्यक्तियों) का नाश करने वाले, श्रीकृष्ण **क्रूरतरः** अत्यधिक क्रूर, अति निर्दयी **निशाचरः** रात्रि में विचरण करने वाले, राक्षस **दूतघातकः** दूत का वध करने वाला, दूत को मार ड़ालने वाला **सूर्यांशुः** सूर्य की किरणें **कृतान्तः** मृत्यु, यमराज **दूतः** संदेशवाहक

(स्त्रीलिंग) वसुन्धरा पृथ्वी, धरती, धरा **प्रकृतिः** स्वभाव, आदत **अवस्था** स्थिति, दशा

(नपुंसकलिंग) स्वर्गम् स्वर्ग **जतुगृहम्** लाख से बना घर, लाक्षागृह, लाख का घर

सर्वनाम : अत्रभवान् (पु.) आप **मे** (मम् का वैकल्पिक रूप) मेरा, मुझे **भवन्तम्** (पु.) आपको **माम्** मुझे **भवतः** (पु.) आपको **इयम्** (स्त्री.) यह **एषः** (पु.) यह **भवन्तः** (पु.) आप सभी, आप **सर्वम्** (नपुं.) सभी, सब

विशेषण : पश्चिमः (सन्देशः) अन्तिम, अन्तिम (संदेश) **आसनस्थेन भवता (धृतराष्ट्रेण)** आसन पर विराजमान (बैठे हुए) ऐसे (आप) श्रीमान (धृतराष्ट्र) द्वारा **कुरुकुलप्रदीप ! यदुकुलप्रवाल ! (अभिमन्यो !)** कुरु के कुल के दीपक यदुवंश के अंकुर! (हे अभिमन्यु) **ईदृशी (अवस्था)** ऐसी (स्थिति), ऐसी (दशा) **पुत्रशोकसमुत्थितः (अग्निः)** पुत्र शोक से उत्पन्न (अग्नि), पुत्र शोक से उठी हुई (अग्नि) **प्राणमयम् (हविः)** प्राणों से सम्पन्न, प्राणों से भरी हुई (अग्नि) **रौद्राः राक्षसोग्रस्वभावाः (वयम्)** रौद्र-रूद्ररुप धारण करने वाले, राक्षस के समान उग्र स्वभाव वाले (हम सब) **समाहताः** एकत्र हुए **सुप्तान् (भ्रातृन्)** सोते हुए (भाइयों) को

अव्यय : अये अरे! आश्चर्य बोधक अव्यय (आश्चर्य के साथ किसी को सम्बोधित करने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला अव्यय) **पश्चात्** बाद (में), उसके बाद **खलु** सचमुच, निश्चय ही, निस्सन्देह **हा** हाय, शोक या दु:ख को व्यक्त करने वाला अव्यय **पुनः** फिर **ततः** उसके बाद **इदानीम्** अब, इस समय, अभी **इति** ऐसा (यह अव्यय प्राय: किसी के द्वारा बोले गए, या समझे गए शब्दों को वैसे का वैसा रख देने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।) **यदि** जो **भोः** हे, अरे (यह अव्यय किसी को सम्बोधित करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है)

समासः अनार्यशतस्य (आर्याणाम् शतम् (आर्यशतम्, षष्ठी तत्पुरुष), न आर्यशतम् - अनार्यशतम्, तस्य - नञ् तत्पुरुष)। अर्धोक्ते (अर्धम् उक्तस्य अर्धोक्तम्, तस्य - षष्ठी तत्पुरुष)। युधिष्ठिरादयः (युधिष्ठिरः आदिः येषां ते - बहुव्रीहि)। चक्रायुधः (चक्रम् आयुधं यस्य सः - बहुवीहि)। धृतराष्ट्रः (धृतं राष्ट्रं येन सः - बहुव्रीहि)। कुरुकुलप्रदीपः (कुरोः कुलम् (कुरुकुलम्, षष्ठी तत्पुरुष), कुरुकुलस्य प्रदीपः - षष्ठी तत्पुरुष)। यदुकुलप्रवालः (यदोः कुलम् (यदुकुलम् (षष्ठी तत्पुरुष), यदुकुलस्य प्रवालः - षष्ठी तत्पुरुष)। एकपुत्रविनाशात् (एकः चासौ पुत्रः (एकपुत्रः, कर्मधारय), एकपुत्रस्य विनाशः, तस्मात् - षष्ठी तत्पुरुष)। आत्मबलाधानम् (आत्मनः बलम् (आत्मबलम्, षष्ठी तत्पुरुष), आत्मबलस्य आधानम् - षष्ठी तत्पुरुष)। पुत्रशोकसमुत्थितः (पुत्रस्य शोकः (पुत्रशोकः, षष्ठी तत्पुरुष), पुत्रशोकेन समुत्थितः - तृतीया तत्पुरुष)। सर्वक्षत्रवधः (सर्वः चासौ क्षत्रः (सर्वक्षत्रः, कर्मधारय), सर्वक्षत्राणाम् वधः - षष्ठी तत्पुरुष)। बाणयोग्यम् (बाणस्य योग्यम् - षष्ठी तत्पुरुष)। राक्षसोग्रस्वभावाः (राक्षसाणाम् इव उग्रः (राक्षसोग्रः, षष्ठी तत्पुरुष), राक्षसोग्रः स्वभावः येषां ते - बहुव्रीहि)। जतुगृहे (जतुनः गृहम्, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष)। युद्धार्थम् (युद्धेन अर्थः - युद्धार्थः, तम् - तृतीया तत्पुरुष)। दूतघातकाः (दूतस्य घातकः - दूतघातकः, ते - षष्ठी तत्पुरुष)। मद्वचनावगन्ता (मम वचनम् (मद्वचनम्, षष्ठी तत्पुरुष)। मद्वचनस्य अवगन्ता - षष्ठी तत्पुरुष)। जात्योपदेशः (जात्यस्य उपदेशः - षष्ठी तत्पुरुष)। सूर्यांशुभिः (सूर्यस्य अंशवः, तैः - षष्ठी तत्पुरुष)।

कृदन्त : (सं.भू.कृ.) प्रविश्य प्रवेश करके **उपसृत्य** पास में जाकर **उत्थाय** उठकर **परित्यज्य** छोड़कर **(हे. कृ.) द्रष्टुम्** देखने के लिए

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपद) उप + विश् (उपविशति) बैठना, पास में बैठना **दह् (दहति)** जलाना **स्पृश् छठा गण (परस्मैपद) (स्पृशति)** स्पर्श करना **प्र + हृ (प्रहरति)** प्रहार करना, आक्रमण करना **वि + आ + हृ (व्याहरति)** कहना

विशेष

1. शब्दार्थ : अनार्यशतस्य एक सौ अनार्य पुत्रों के **उत्पादयिता** जन्मदाता, उत्पन्न करने वाला **अभिवादये** मैं अभिवादन करता हूँ **घटोत्क...। इति अर्धोक्ते** घटोत्क... (इतना) आधा (नाम) बोल लेने के उपरान्त **अयम् अक्रमः** यह क्रम नहीं (है) **एहि एहि पुत्र !** आओ पुत्र आओ ! **अहो कल्याणः खलु अत्रभवान्** अहो आप तो कल्याणरूप हैं **प्रसूतिम्** जन्मदाता को **आह** कहते हैं, कह रहे हैं **श्रूयताम्** सुनिए **आसनस्थेन** आसन पर बैठे रहकर **श्रोतव्यः** सुनना

चाहिए **हा वत्स ! अभिमन्यो !** हाय! पुत्र अभिमन्यु **अभिगतः असि** तुम गए हो **एकपुत्रविनाशात्** एक पुत्र के विनाश के कारण **क्षिप्रम्** तुरन्त, त्वरित गति से, फौरन **आत्मबलाधानम् कुरुष्व** आत्मा में बल का आधान (स्थापना) कर **वाक्यमात्रेण** केवल कहने मात्र से, सिर्फ बोलने मात्र से **सर्वक्षत्रवधः** सभी क्षत्रियों का वध **बाणयोग्यम्** बाण के योग्य, बाण के अनुरूप **प्रकृतिं गतः** अपने स्वभाव पर गया **शान्तं पापम्** पाप शान्त हो (संस्कृत नाटकों में, दो पात्रों के संवाद के बीच जब वक्ता द्वारा कही गई किसी बात को सम्मुख पात्र सुनने योग्य न समझता हो, तब उस पात्र की ओर से इस प्रकार के वाक्य का प्रयोग किया जाता है। इस वाक्य को यदि हिन्दी भाषा में अनूदित करना हो तो, 'ऐसा मत बोलो !' ऐसा कहा जा सकता है।) **प्रधर्षयसि** (तुम मुझे दूत ऐसा कहकर) अपमानित करते हो **मा तावत् भोः** (यदि ऐसा है, तो रहने दो) ना, ना **प्रहरध्वम्** प्रहार करो, आक्रमण करो **मर्षयतु भवान्** आप क्षमा करें, आप माफ कर दें **मद्वचनावगन्ता भव** मेरे वचनों को समझने वाले बनो, मेरे वचनों को स्वीकार करो **कुरु स्वजनव्यपेक्षाम्** स्वजनों की (बचाने की) चिन्ता करो **काङ्क्षितं मनसि** मनोवांछित, मन में इच्छा की हो वह **सर्वम् इह अनुतिष्ठ** सब यहीं कर लो, उपभोग कर लो **जात्योपदेशः इव** जन्म के रहस्य का उपदेश (हो उस तरह) **जात्य** ऊँचाकुल **पाण्डवरूपधारी** पांडव-अर्जुन का रूप धारण किया **उपैष्यति** आ जाएँगे **वः** आप, तुम्हारे

2. सन्धिः युधिष्ठिरादयश्च (युधिष्ठिरादयः च)। गुरवो भवन्तम् (गुरवः भवन्तम्)। घटोत्कचोऽहम् (घटोत्कचः अहम्)। श्रोतव्यो जनार्दनस्य (श्रोतव्यः जनार्दनस्य)। स्वर्गमभिगतोऽसि (स्वर्गम् अभिगतः असि)। पुनर्भवतो भविष्यति (पुनः भवतः भविष्यति)। पुत्रशोकसमुत्थितोऽग्निर्न (पुत्रशोकसमुत्थितः अग्निः न)। हविरिति (हविः इति)। शकुनिरेष व्याहरति (शकुनिः एषः व्याहरति)। राक्षसेभ्योऽपि (राक्षसेभ्यः अपि)। भवन्त एव (भवन्तः एव)। प्राप्तो न (प्राप्तः न)। दूत इति (दूतः इति)। दूतोऽहम् (दूतः अहम्)। जात्योपदेश इव (जात्योपदेशः इव)।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) यदुकुलप्रवालः कः ? ◯

(क) घटोत्कचः (ख) अर्जुनः (ग) अभिमन्युः (घ) दुर्योधनः

(2) अभिमन्युः कस्य पुत्रः आसीत् ? ◯

(क) जनार्दनस्य (ख) धृतराष्ट्रस्य (ग) अर्जुनस्य (घ) शकुनेः

(3) अभिमन्योः मातुलः कः ? ◯

(क) दुर्योधनः (ख) शकुनिः (ग) जनार्दनः (घ) घटोत्कचः

(4) 'शान्तं पापम् शान्तं पापम्।' इति कः वदति ? ◯

(क) घटोत्कचः (ख) धृतराष्ट्रः (ग) शकुनिः (घ) अर्जुनः

(5) 'वयं दूतघातकाः न।' – इदं वाक्यं केन कथितम् ? ◯

(क) दुर्योधनेन (ख) घटोत्कचेन (ग) शकुनिना (घ) धृतराष्ट्रेण

(6) चक्रायुधः कः ?

(क) अभिमन्युः (ख) जनार्दनः (ग) धृतराष्ट्रः (घ) शकुनिः

(7) भवन्तः .... अपि क्रूरतराः।

(क) राक्षसान् (ख) राक्षसैः (ग) राक्षसेभ्यः (घ) राक्षसेषु

(8) कृतान्तः शब्दस्य कः अर्थः ?

(क) पांडवः (ख) सूर्यः (ग) यमराजः (घ) नष्ट पामेलुं

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषायाम् उत्तरत ।

(1) घटोत्कचः कस्य सन्देशं नयति ?

(2) अभिमन्युः कं द्रष्टुं स्वर्गम् अभिगतः ?

(3) कुत्र सुप्तान् भ्रातृन् निशाचराः न दहन्ति ?

(4) घटोत्कचः कस्य वचनात् दूतः भवति ?

3. कृदन्तानां प्रकारं लिखत ।

(1) श्रोतव्यः। .... (2) परित्यज्य। ....

(3) अभिगतः .... (4) उपसृत्य। ....

(5) द्रष्टुम्। .... (6) काङ्क्षितम्। ....

4. सन्धिविच्छेदं कुरुत ।

(1) घटोत्कचोऽहम्। ....

(2) शकुनिरेषः। ....

(3) दूतोऽहमस्मि। ....

(4) दूत इति। ....

5. समासप्रकारं लिखत ।

(1) कुरुकुलप्रदीपः। .... (2) चक्रायुधः ....

(3) पुत्रशोकसमुत्थितः .... (4) धृतराष्ट्रः ....

6. रेखाङ्कितपदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कस्य, केन, कीदृशाः, कम्, किमर्थम्)

(1) घटोत्कचः <u>पितामहम्</u> अभिवादयति।

(2) त्वं <u>युद्धार्थं</u> न आगतः।

(3) वयं <u>दूतघातकाः</u> न।

(4) <u>जनार्दनस्य</u> पश्चिमः सन्देशः श्रोतव्यः।

7. उदाहरणानुसारं नामरूपस्य परिचयं कारयत ।

	शब्द	लिङ्ग	विभक्ति	वचन
उदाहरणम् - वचनात्	वचन	नपुंसकलिंग	पञ्चमी	एकवचन
(1) अंशुभिः	....	....	....	....
(2) शकुनेः	....	....	....	....
(3) आशया	....	....	....	....
(4) पितामहम्	....	....	....	....
(5) राक्षसेभ्यः	....	....	....	....

8. धातुरूपाणां परिचयं कारयत ।

धातुरूपम्	धातु	पद	काल	पुरुष	वचन
गच्छ	गम्	परस्मैपद	आज्ञार्थ	मध्यम	एकवचन
(1) प्रहरध्वम्	....	....	....	....	....
(2) दहेत्	....	....	....	....	....
(3) भवतु	....	....	....	....	....
(4) समाचर	....	....	....	....	....

9. कोष्ठगतपदानि प्रयुज्य वाक्यानि रचयत ।

(1) धृतराष्ट्र कौरवों के पिता थे।
(धृतराष्ट्र कौरव जनक अस्।)

(2) घटोत्कच जनार्दन का संदेश लाते हैं।
(घटोत्कच जनार्दन सन्देश आ + नी-नय्)

(3) हम दूत (को मारने वाले) का वध करने वाले नहीं हैं।
(अस्मद् दूतघातक न।)

(4) घटोत्कच धृतराष्ट्र को प्रणाम करते हैं।
(घटोत्कच धृतराष्ट्र प्र + नम्)

10. मातृभाषायाम् उत्तराणि लिखत ।

(1) घटोत्कच शकुनि को क्या सलाह देते हैं ?

(2) घटोत्कच ने दुर्योधन को राक्षस से भी ज्यादा क्रूर क्यों कहा ?

(3) अभिमन्यु की मृत्यु पर अर्जुन द्वारा किए गए विलाप का वर्णन कीजिए।

11. मातृभाषायां संक्षिप्तं टिप्पणं लिखत ।

(1) घटोत्कच का पात्रालेखन

(2) श्रीकृष्ण का संदेश

प्रवृत्ति

- प्रस्तुत नाट्यांश का वाचिक अभिनय कीजिए।
- भास के रूपकों की उपलब्ध सी.डी. प्राप्त करके देखिए।

•

5. गुणवती कन्या

संस्कृत साहित्य में कवि दंडी गद्यकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उन्होंने 'दशकुमारचरितम्' नामक गद्य ग्रन्थ की रचना की है। इस ग्रन्थ की कथावस्तु कवि की अपनी कल्पना है। दस कुमार सुनिश्चित, अलग-अलग दस दिशाओं में यात्रा के लिए निकलते हैं। अपनी-अपनी यात्रा के दौरान कुमारों ने जो अनुभव किया, उन अनुभवों का वर्णन दस उच्छ्वासों के रूप में कवि ने किया है अतः इस ग्रन्थ में दस उच्छ्वास हैं। छठे उच्छ्वास में मंत्रगुप्त अपने यात्रानुभव का वर्णन करते हैं। इस दौरान वे शक्तिकुमार का एक आख्यान सुनाते हैं। इस आख्यान को संक्षिप्त और संपादित करके यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

स्त्री और पुरुष दोनों गृहस्थ जीवन रूपी रथ के दो चक्र (पहिए) हैं। जिस तरह रथ में दोनों पहिए आकार और प्रकार में समान होने चाहिए, ठीक उसी तरह गृहस्थ जीवन रूपी रथ के पहिए के समान स्त्री-पुरूष का आकार और प्रकार में समान होना आवश्यक है। प्रस्तुत कथा के नायक शक्तिकुमार स्वयं गुणवान हैं। अतः वे अपने समान गुणवती कन्या से विवाह करना चाहते हैं। उन्हें जो चाहिए वैसे गुण कन्या में हैं या नहीं, यह जानने के लिए उन्होंने एक योजना बनाई। योजना के अनुसार जो कन्या मात्र एक प्रस्थ धान में से विविध व्यंजनों का निर्माण कर भोजन करवा सके, वह कन्या गुणवती है, ऐसा समझाना चाहिए। तत्पश्चात् इस प्रकार की कन्या के सामने विवाह प्रस्ताव रखेंगे, यदि वह कन्या इस विवाह प्रस्ताव को स्वीकार करती है तो, वे उससे विवाह कर लेंगे।

गुणवती कन्या को प्राप्त करने के लिए देश-देशान्तर में भ्रमण कर रहे शक्तिकुमार को कावेरी नदी के किनारे बसे कांची नगर में ऐसी एक कन्या मिली। इस कन्या ने मात्र एक प्रस्थ धान में अपनी बुद्धिकौशल के बल से विविध व्यंजन तैयार किए और उन व्यंजनों को प्रेमपूर्वक खिलाकर शक्तिकुमार को प्रसन्न कर दिया। इस तरह यह कन्या शक्तिकुमार की परीक्षा में उत्तीर्ण हो गई। शक्तिकुमार ने उस कन्या के सामने विवाह प्रस्ताव रखा और कन्या की सहमति से उससे विवाह कर लिया। इस कथा से यह सीख मिलती है कि सीमित साधनों के होते हुए भी, गुणवान व्यक्ति अपनी बौद्धिक प्रतिभा के बल पर अपनी इच्छानुसार सुख प्राप्त कर सकता है। यहाँ (इस पाठ में) आनेवाले कर्तरि भूतकृदंत(क्तवत्) के रूपों पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए।

काञ्चीनगरे शक्तिकुमारो नाम एकः श्रेष्ठिपुत्रः प्रतिवसति स्म। स यदा स्वकीयस्य जीवनस्य द्वाविंशतितमे वर्षे प्रविष्टस्तदा चिन्तामापन्नः - नास्ति दारविहीनानाम् अननुरूपगुणदाराणां च सुखम्। तत्कथं गुणवतीं भार्याम् अहं विन्देयमिति।

ततः स प्रभूतं विचार्य वस्त्रान्ते पिनद्धशालिः दारग्रहणाय विविधान् देशान् अभ्रमत्। एकदा स कावेरीतीरपत्तने समागतः। अत्र सः कूपे विरलभूषणां कुमारीमेकाम् अपश्यत्। तस्याः रूपसम्पदाभिभूतः सोऽचिन्तयत् - आकृष्टं मे हृदयम् अस्याम्। तदेतां परीक्ष्य विवाहप्रस्तावं कृत्वा, तस्याम् सम्मतौ उद्वहामि। स तां निकषा संगत्य सविनयम् आह - अस्ति ते कौशलं शालिप्रस्थेन अनेन सम्पन्नमाहारं मां भोजयितुम् ?

ततः सा ओमिति उक्त्वा प्रस्थमात्रं धान्यमादाय श्रेष्ठिपुत्रस्य याचनानुसारं कर्तुं प्रवृत्ता।

ततः आदो सा बुद्धिमती कन्या तान् शालीन् प्रथमम् आतपे तप्तवती। ततः समायां परिशुद्धायां भूमौ तान् अघट्टयत् । अनेन तुषेभ्यस्तण्डुलाः पृथक् सञ्जाताः।

तण्डुलान् सम्प्राप्य सा तुषान् भूषणानां मार्जनार्थं स्वर्णकाराय विक्रेतुं धात्रीम् अकथयत्। तस्मात् यत् धनं मिलति, तेन काष्ठानि आहर इति च धात्रीं निवेदितवती।

धात्री काष्ठानि आनीतवती। तदनन्तरं सा तण्डूलान् असकृत् जलेन प्रक्षालितवती, उष्णीकृते जले च तान् प्रक्षिप्तवती। अल्पीयसा कालेनैव तण्डुलाः सिद्धाः सञ्जाताः। ततः इन्धनानि जलेन शमयित्वा कृष्णाङ्गारानपि तदर्थिभ्यः प्रेषयित्वा यत् धनं लब्धं तेन धनेन शाकं घृतं दधि तैलं च क्रीतवती। तेन च सा विविधानि व्यञ्जनानि सम्पादितवती।

सम्पन्ने आहारे सा कन्या धात्रीमुखेन अतिथये प्रथमं स्नातुं निवेदितवती। ततः स्नानशुद्धाय तस्मै अतिथये सा पेयोपाहारपूर्वं भोजनं घृतसहितम् ओदनं व्यञ्जनञ्च अयच्छत्।

मध्ये मध्ये सा भोज्यादीनां विविधानां पदार्थानां वर्णनं कृत्वा अतिथेः भोजनरुचिमपि अवर्धयत्। भुक्ते तु तस्मिन् अतिथौ तया ताम्बूलस्यापि व्यवस्था कृता। एवं स्वकीयया गुणसम्पदा प्रस्थपरिमितेन धान्येन विविधानि व्यञ्जनानि विरचितवतीं कन्यां प्रति समाकृष्टः शक्तिकुमारः विवाहस्य प्रस्तावं कृतवान्। कन्यया स्वीकृते प्रस्तावे तां विधिवदुपयम्य स्वनगरमनयत्॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) श्रेष्ठिपुत्रः सेठ का पुत्र, साहूकार का पुत्र **दाराः** पत्नी (यह पुल्लिंग का 'दार' शब्द सदैव बहुवचन में ही प्रयुक्त किया जाता है और 'पत्नी' स्त्रीलिंग का अर्थ प्रदान करता है।) **तण्डुलः** धान, चावल **तुषः** अनाज का छिलका **आतपः** गर्मी (सूर्य-अग्नि आदि की) **स्वर्णकारः** सुनार **कृष्णाङ्गारः** कोयला **प्रस्तावः** अपने विचार को प्रस्तुत करना, उल्लेखनीय बात

(स्त्रीलिंग) भार्या पत्नी **सम्मतिः** अनुमति, सहमति **शालि** धान **धात्री** माता के उम्र की सेविका

(नपुंसकलिंग) काञ्चीनगरम् दक्षिण भारत में स्थित एक प्राचीन नगर **कौशलम्** कुशलता, प्रवीणता **धान्यम्** अनाज, अन्न **काष्ठम्** लकड़ी **इन्धनम्** प्रज्वलित करने वाली सामग्री (लकड़ी, कोयला आदि) **शाकम्** सब्जी, शाक **घृतम्** घी **दधि** दही **व्यञ्जनम् बानगी** (मिर्च, मसाला, चटनी आदि में बनाई हुई विभिन्न प्रकार की खाद्य वस्तुएँ।)

सर्वनाम : एकः (पु.) एक **तस्याः** (स्त्री.) उसका **एताम्** (स्त्री.) इसका **ताम्** (स्त्री) इसे **ते** ('तव' का वैकल्पिक रूप) तुम्हारे, तुम्हें **अनेन** (पु.) इससे, इसके द्वारा **सा** वह (स्त्री.) **तान्** (पु.) उन्हें **तस्मात्** (पु. नपु.) इसलिए, इस कारण **तेन** (पु.) उसके द्वारा, उसने **तस्मै** (पु. नपु.) उसके लिए **तस्मिन्** (पु. नपु.) उसमें **तया** (स्त्री.) उसे, उसके द्वारा

विशेषण : स्वकीयस्य (जीवनस्य) अपना (जीवन का) **द्वाविंशतितमे (वर्षे)** बाइसवें (वर्ष में) **गुणवतीम् (भार्याम्)** गुणवती (पत्नी) को **विरलभूषणाम् एकाम् (कुमारीम्)** विरल आभूषणों वाली एक कन्या ने **सम्पन्नम् (आहारम्)** तैयार (हुए) (भोजन) को, बनाए गए (भोजन) को **प्रस्थमात्रम् (धान्यम्)** मात्र एक प्रस्थ (लगभग दो किलो जितना अनाज) को **बुद्धिमती** बुद्धिशाली, प्रखर बुद्धिवाली **समायाम् परिशुद्धायाम् (भूमौ)** समतल और साफ (जमीन) पर **उष्णीकृते (जले)** गरम किए गए (पानी) में **अल्पीयसा (कालेन)** थोड़े ही समय में **सम्पन्ने (आहारे)** भोजन तैयार हो जाने पर **स्नानशुद्धाय तस्मै (अतिथये)** स्नान से शुद्ध हुए उस अतिथि को **विविधानाम् (पदार्थानाम्)** अनेक प्रकार के (पदार्थों) को **प्रस्थपरिमितेन (धान्येन)** मात्र एक प्रस्थ जितने (अनाज से)

अव्यय : यदा जब **तदा** तब **एकदा** एकबार **निकषा** समीप, पास **ओमिति** ओम् ऐसा कहकर, हाँ कहके (संस्कृत भाषा में किसी भी बात को स्वीकार करने के लिए ओम् शब्द बोला जाता है।) **असकृत्** अनेक बार, बार-बार, लगातार

समास : श्रेष्ठिपुत्रः (श्रेष्ठिनः पुत्रः - षष्ठी तत्पुरुष)। दारविहीनानाम् (दारैः विहीनः, तेषाम्-तृतीया तत्पुरुष)। अननुरूपगुणदाराणाम् (न अनुरूपम् - अननुरूपम्, नञ् तत्पुरुष। अननुरूपं गुणः यस्याः सा अननुरूपगुणा, बहुव्रीहि) अननुरूपगुणा च अमी दाराः अननुरूपगुणदाराः, तेषाम् - अननुरूपगुणदाराणाम् - बहुव्रीहि)। वस्त्रान्ते (वस्त्रस्य अन्तः, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष)। पिनद्धशालिः (पिनद्धा शालिः येन सः - बहुव्रीहि)। दारग्रहणाय (दाराणां ग्रहणम् - षष्ठी

तत्पुरुष)। कावेरीतीरपत्तने (कावेर्याः तीरम् – कावेरीतीरम्, षष्ठी तत्पुरुष) कावेरीतीरस्य पत्तनम् – षष्ठी तत्पुरुष)। विरलभूषणाम् (विरलं भूषणं यस्याः सा, ताम् – बहुव्रीहि)। रूपसम्पदा (रूपस्य सम्पद्, तया – षष्ठी तत्पुरुष)।, विवाहप्रस्तावम् (विवाहस्य प्रस्तावः, तम् – षष्ठी तत्पुरुष)। शालिप्रस्थेन (शालीनाम् प्रस्थः, तेन – षष्ठी तत्पुरुष)। स्वगृहम् (स्वस्य गृहम् – षष्ठी तत्पुरुष)। प्रक्षालितपादम् (प्रक्षालितौ पादौ येन सः, तम् – बहुव्रीहि)। कृष्णाङ्गारान् (कृष्णः च असौ अङ्गारः – कृष्णाङ्गारः, तान् – कर्मधारय)। धात्रीमुखेन (धात्र्याः मुखम्, तेन – षष्ठी तत्पुरुष)। स्नानशुद्धाय (स्नानेन शुद्धः तस्मै – तृतीया तत्पुरुष)। पेयोपाहारपूर्वम् पेयस्य उपाहारः – षष्ठी तत्पुरुष, पेयोपाहारः पूर्वं यस्य तद् – बहुव्रीहि)। घृतसहितौदनम् (घृतेन सहितम् घृतसहितम्, तृतीया तत्पुरुष), घृतसहितं च तद् ओदनम्, घृतसहितौदनम् – कर्मधारय)। भोजनरुचिम् (भोजने रुचिः – सप्तमी तत्पुरुष)। गुणसम्पदा (गुणानां सम्पद्, तया – षष्ठी तत्पुरुष)। प्रस्थपरिमितेन (प्रस्थेन परिमितम्, तेन – तृतीया तत्पुरुष)। स्वनगरम् (स्वस्य नगरम् – षष्ठी तत्पुरुष)।

कृदन्त : (सं.भू.कृ.) उक्त्वा कहकर, बोलकर **आदाय** लेकर, ग्रहण करके, स्वीकार करके **सम्प्राप्य** प्राप्त करके, पाकर **शमयित्वा** बुझाकर, शमन करके **प्रेषयित्वा** भेजकर

(क.भू.कृ.) प्रविष्टः प्रवेश किया, अन्दर गया **आपन्नः** प्राप्त हुआ **समागतः** पहुँचा हुआ **अभिभूतः** हराया, पराभव किया **आकृष्टम्** आकर्षित हुआ, आकृष्ट हुआ **तप्तवती** तपाया **उक्तवती** कहा, बोलीं **निवेदितवती** निवेदन किया **प्रक्षालितवती** धोया **प्रक्षिप्तवती** डाला **क्रीतवती** खरीदा **सम्पादितवती** संपादित किया **दत्तवती** दे दिया **वर्धितवती** बढ़ा दिया, वृद्धि की **कृता** किया **विरचितवती** रचाया, बनाया **समाकृष्टः** आकर्षित हुआ, खिंचा हुआ, आकृष्ट हुआ **कृतवान्** किया

(हे.कृ) भोजयितुम् खिलाने के लिए, भोजन कराने के लिए **विक्रेतुम्** बेचने के लिए **स्नातुम्** स्नान करने के लिए, नहाने के लिए

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपदी) प्रति + वस् (प्रतिवसति) रहना, बसना, निवास करना **भ्रम् (भ्रमति)** भ्रमण करना, घूमना **उत् + वह् (उद्वहति)** विवाह करना, वहन करना **नी (नयति)** ले जाना

छठा गण (परस्मैपदी) मिल् (मिलति) मिलना

(आत्मनेपदी) विन्द् (विन्दते) प्राप्त करना

दसवाँ गण (परस्मैपदी) चिन्त् (चिन्तयति) विचार करना, चिन्तन करना **घट्ट (घट्टयति)** घिसना रगड़ना, घोंटना

विशेष

1. शब्दार्थ : चिन्तामापन्नः चिन्ताग्रस्त, चिन्तातुर **अननुरूपगुणदाराणाम्** अनुरूप गुणों से विहीन पत्नीवालों को **विन्देयम्** मैं प्राप्त करूँ **प्रभूतम् विचार्य** खूब (सोच) विचार करके **वस्त्रान्ते** कपड़े के किनारे पर, कपड़े के कोने **पिनद्धशालिः** बंधे हुए धानवाला **दारग्रहणाय** पत्नी को प्राप्त करने के लिए, पत्नी को पाने के लिए **रूपसम्पदाभिभूतः** रूप की सम्पत्ति से प्रभावित **तदेताम्** इसलिए इसकी **सत्याम् सम्मतौ** (सम्मति) सहमति होने पर **एनाम् उद्वहामि** इसके साथ विवाह करूँगा **आह** बोला, कहा **शालिप्रस्थेन** एक प्रस्थ जितने धान से **ओमिति उक्त्वा 'ॐ'** ऐसा कहकर, स्वीकृति देकर **आतपे तप्तवती** धूप में तपाया **तान् अघट्टयत्** उसे (सालि) घिसा, कूटा **मार्जनार्थम्** साफ करने के लिए, धोने के लिए **धात्रीमुक्तवती** धात्री से- सेविका से कहा **आहर** ले आओ **जलेन प्रक्षालितवती** पानी से धोया, पानी से साफ किया **सिद्धाः सञ्जाताः** तैयार हो गए **इन्धनानि शमयित्वा** लकड़ी को बुझाकर **कृष्णाङ्गारान्** कोयले को **तदर्थिभ्यः** उनकी आवश्यकता वाले को **धात्रीमुखेन** धात्री के मुख से, धात्री के द्वारा **पेयोपाहारपूर्वम्** नास्ता-पानी के साथ **घृतसहितौदनम्** घी युक्त भात, भात में घी मिलाकर **भुक्ते तु तस्मिन् अतिथौ** वे (मेहमान) अतिथि खा चुके तब **व्यञ्जनानि** व्यंजनों को 'ताम्बूलस्यापि' ताम्बूल की, पान की भी 'गुणसम्पदा' गुणरूपी संपत्ति से, **कन्याम् प्रति** कन्या की तरफ '**कन्यया स्वीकृते प्रस्तावे**' कन्या ने जब प्रस्ताव स्वीकार किया तब **विधिवत्** (अव्यय) विधि अनुसार, कायदानुरूप **उपयम्य** विवाह करके, परिणय करके

2. सन्धि : शक्तिकुमारो नाम (शक्तिकुमार: नाम)। स यदा (स: यदा)। प्रविष्टस्तदा (प्रविष्ट: तदा)। सोऽचिन्तयत् (स: अचिन्तयत्)। स ताम् (स: ताम्)। तुषेभ्यस्तण्डुला: (तुषेभ्य: तण्डुला:)। कालेनैव (कालेन एव)। व्यञ्जनञ्च (व्यञ्जनं च)।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्य: विकल्पेभ्य: समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) कस्मिन् वर्षे प्रविष्ट: शक्तिकुमार: चिन्तामापन्न:। ◯

(क) द्वाविंशतितमे (ख) विंशतितमे (ग) एकविंशतितमे (घ) चतुर्विंशतितमे

(2) श्रेष्ठिपुत्र: किमर्थं देशम् अभ्रमत् ? ◯

(क) धनार्जनार्थम् (ख) विद्याग्रहणाय (ग) दारग्रहणाय (घ) धनग्रहणाय

(3) बुद्धिमती कन्या शालीन् कुत्र तप्तवती ? ◯

(क) अग्नौ (ख) आतपे (ग) चत्वरे (घ) समानायां भूमौ

(4) तुषान् विक्रीय धात्री किम् आनीतवती ? ◯

(क) घृतम् (ख) काष्ठानि (ग) जलम् (घ) शाकम्

(5) कन्या धात्रीमुखेन अतिथिं प्रथमं किं निवेदितवती ? ◯

(क) प्रतीक्षाकरणाय (ख) आसनग्रहणाय (ग) भोजनाय (घ) स्नानाय

(6) इन्धनानि जलेन शमयित्वा कन्या किं प्राप्तवती ? ◯

(क) कृष्णाङ्गारान् (ख) काष्ठानि (ग) जलम् (घ) शाकम्

(7) भोजनान्ते कन्यया कस्य व्यवस्था कृता ? ◯

(क) शयनस्य (ख) ताम्बूलस्य (ग) तक्रस्य (घ) मिष्टान्नस्य

(8) कन्या विविधं व्यञ्जनं केन विरचितवती ? ◯

(क) स्वकीयेन बुद्धिबलेन (ख) क्रीतेन इन्धनेन

(ग) प्रस्थपरिमितेन धान्येन (घ) स्वकीयेन धनेन

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषयां उत्तरत ।

(1) श्रेष्ठिपुत्रस्य नाम किम् आसीत् ?

(2) देशान् भ्रमन् एकदा शक्तिकुमार: कुत्र समागत: ?

(3) शक्तिकुमार: विरलभूषणां कुमारीं कुत्र अपश्यत् ?

(4) कन्या तण्डूलान् केन प्रक्षालितवती ?

(5) भोज्यादीनां पदार्थानां वर्णनं कृत्वा कन्या किं कृतवती ?

3. कृदन्तप्रकारं लिखत ।

(1) प्रविष्टः	....	(2) आकृष्टम्	....
(3) भोजयितुम्	....	(4) उक्त्वा	....
(5) आदाय	....	(6) निवेदितवती	....

4. सन्धिविच्छेदं कुरुत ।

(1) प्रविष्टस्तदा ....

(2) सोऽचिन्तयत् ....

(3) तुषेभ्यस्तण्डुलाः ....

(4) व्यञ्जनञ्च ....

5. समासप्रकारं लिखत ।

(1)दारविहीनानाम्	....	(2) घृतसहितम्	....
(3) पिनद्धशालिः	....	(4) विरलभूषणाम्	....
(5) शालिप्रस्थेन	....	(6) कृष्णाङ्गारान्	....
(7) गुणसम्पदा	....	(8) स्वनगरम्	....

6. उदाहरणानुसारं शब्दरूपं लिखत ।

	शब्द	लिङ्ग	विभक्ति	वचन
उदाहरणम् – वचनात्।	वचन	नपुंसकलिङ्ग	पञ्चमी	एकवचन
(1) काञ्चीनगरे	....	....	....	....
(2) जीवनस्य	....	....	....	....
(3) भार्याम्	....	....	....	....
(4) दारग्रहणाय	....	....	....	....
(5) सम्मतौ	....	....	....	....
(6) अनेन	....	....	....	....

7. कोष्ठगतानि पदानि प्रयुज्य वाक्यानि रचयत ।

(1) शक्तिकुमार सेठ का पुत्र निवास करता था।

(श्रेष्ठिपुत्र शक्तिकुमार नि + वस्)

(2) कुएँ के ऊपर एक विरलभूषणा कन्या को देखा।

(कूप एका विरलभूषणा कुमारी दृश्)

(3) सेठ के पुत्र को अपने घर ले आई।

(श्रेष्ठिपुत्र स्वगृह आ + नी)

(4) उससे धन प्राप्त होता है।

(तत् धन मिल्)

(5) धन से सब्जी, घी और तेल लाती हूँ।

(धन शाक घृत तैल च आ + नी)

8. मातृभाषायाम् उत्तराणि लिखत ।

(1) शक्तिकुमार बाईस वर्ष के होने पर क्या विचार करते हैं ?

(2) गुणवती कन्या की परीक्षा के लिए शक्तिकुमार की क्या योजना थी ?

(3) कन्या क्या-क्या बेचती है और उससे क्या-क्या प्राप्त करती है ?

(4) कन्या ने शक्तिकुमार की भोजन रुचि कैसे बढ़ाई ?

(5) किस बात से आकृष्ट होकर शक्तिकुमार ने कन्या के सामने विवाह प्रस्ताव रखा ?

9. मातृभाषायां संक्षिप्तं टिप्पणं लिखत ।

(1) शक्तिकुमार की परीक्षा-योजना

(2) गुणवती कन्या का आयोजन

10. मातृभाषायाम् अनुवादं कुरुत ।

(1) तत्कथं गुणवतीं भार्याम् अहं विन्देयमिति।

(2) एकदा स कावेरीतीरपत्तने समागतः।

(3) स्वर्णकाराय विक्रेतुं धात्रीमुक्तवती।

(4) उष्णीकृते जले च तान् प्रक्षिप्तवती।

(5) अतिथये प्रथमं स्नातुं निवेदितवती।

प्रवृत्ति

- आदर्श नागरिक के गुणों की सूची बनाइए।
- किसी एक ही धान्य (अनाज) में से बनाए जाने वाले विविध व्यंजनों की सूची बनाइए।

•

6. काष्ठखण्डः

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरु-शिष्य के सानिध्य का अति महत्त्व रहा है। गुरुकुल में रहकर विद्याभ्यास करने की परम्परा के कारण पूरे दिन दोनों (गुरु-शिष्य) साथ रहते थे। अतः किसी भी समय किसी भी स्थान पर गुरु अपने शिष्य को ज्ञान देते थे। अतः नियत अभ्यासक्रम के पाठों को पढ़ने के साथ-साथ कभी-कभी सहज रूप से तो कभी आकस्मिक रूप से शिष्य को ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिलता था। यह परम्परा आज भी प्राचीन पद्धति से संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन कराने वाली पाठशालाओं तथा गुरुकुलों में अक्षुण्ण है। इस तरह का एक प्रसंग पाठ में प्रस्तुत किया गया है। नदी के किनारे शिष्य के साथ विचरण करते गुरु की अचानक नदी के पानी में तैरते हुए एक काष्ठखंड (लकड़ी के टुकड़े) पर दृष्टि पड़ती है, तुरन्त ही गुरु की प्रज्ञा अपने शिष्य को एक महत्त्वपूर्ण ज्ञान देने के लिए सक्रिय बनती है। उस समय उस स्थान पर किसी गुरु ने अपने शिष्य को जो ज्ञान दिया था, वह आज के परिप्रेक्ष्य में भी उतना ही योग्य और महत्त्वपूर्ण है।

काष्ठखंड को अपने जन्म से ही पानी में तैरने का गुण प्राप्त है। सौभाग्य से वह काष्ठखंड समुद्र में मिलनेवाली नदी के पानी में आ पहुँचा है। परन्तु गुरु की दृष्टि ने इस सौभाग्य प्राप्ति के मार्ग में आने वाले विघ्नों को भी देख लिया है। इन विघ्नों की ओर शिष्य का ध्यान आकर्षित कर गुरु समझाते हैं कि यदि यह काष्ठखंड अपने आप को इन विघ्नों से बचाता रहेगा तो ही वह समुद्र में पहुँच सकता है, अन्यथा नहीं।

मनुष्य की कल्पना गुरु ने काष्ठखंड के रूप में कर सुन्दर रूपक उपस्थित किया है और उस रूपक के माध्यम से खूब सहजता से शिष्य को उपदेश दिया है। गुरु का उपदेश है कि यदि मनुष्य भी जीवन में आनेवाले चार विघ्नों से अपने आप को बचा ले, तो सुख रूपी समुद्र से मिलने का सौभाग्य प्राप्त कर सकता है।

गङ्गातीरे एकः गुरुः शिष्येण सह वर्तमानः आसीत्। स जलप्रवाहेण नीयमानं कञ्चन काष्ठखण्डं दर्शयन् शिष्यमाह – अयं जलप्रवाहेण सह समुद्रं प्राप्स्यति, परन्तु गमनमार्गे तीरे संलग्नता, भाराधिक्येन जले निमग्नता, आवर्तपातता, नदीजलवियोगश्चेति चत्वारो विघ्नाः न भवेयुः तदा एव।

गुरुरग्रे उपदिशति शिष्यम्। वयं सर्वे मानवाः अपि काष्ठखण्डा इव। अस्माकं जीवनमेव नदी। परिवारः प्रवाहरूपः। तत्र स्नेहरूपं जलं वहति। स्वकीये परिवारे जीवनं जीवन्तः काष्ठरूपा वयं सुखपूर्णं संसाररूपं समुद्रम् अवश्यं प्राप्तुं शक्नुमः, यदि चत्वारो विघ्ना न भवन्ति।

जीवने कीदृशाः विघ्नाः भवन्तीति शिष्यः अपृच्छत्।

गुरुः समुपादिशत् – नदीरूपे जीवने आहार-निद्रा-भयादयः तीरभूताः सन्ति। तीरेषु संलग्नता नाम आहार-निद्रा-भयादीनां सेवने सततं प्रवृत्तिः। वस्तुतस्तु आहारादयः सेवनीयाः भवन्ति, तथापि तत्र सततं संलग्नता विघ्न एव। आहार-निद्रा-भयादिषु सततं प्रवृत्तिरूपः विघ्नः भवति चेत् काष्ठखण्डरूपाः वयं सुखरूपं समुद्रं प्राप्तुं न शक्नुमः।

सामाजिको व्यवहारः भाररूपो भवति। यद्यपि सामाजिको व्यवहारः सर्वत्रैव अपेक्षितो भवति। परन्तु सः शक्तिमतिक्रम्य न भवेत्। ये जनाः स्वकीयां शक्तिमतिक्रम्य सामाजिकान् व्यवहारान् कुर्वन्ति ते अतिभारत्वात् निमज्जन्ति एव। निमज्जितः जनः सुखमयं संसारसमुद्रं प्राप्तुं न शक्नोति।

सुरापानम् अक्षक्रीडा तमाखुभक्षणं चौरकर्म इत्यादीनि दुर्व्यसनानि मानवजीवने आवर्तभूतानि सन्ति। एषु पतितो जनः बहिः

आगन्तुं न शक्नोति। अत: तत्र पतनमेव न भवेत् तादृश: प्रयत्न: सततं करणीयो भवति। ये जना: व्यसनेषु पतिता: सन्ति ते तरन्त: अपि एकस्मिन् स्थाने परित: भ्रमन्ति। तेषां प्रगति: बाधिता भवति। ततस्ते सुखादिरूपं संसारसमुद्रं प्राप्तुं नार्हन्ति।

परिवारात् विमुखत्वम् एव नदीजलवियोग:। सामान्यतया परिवारे निवसन्त: एव वयं संसारसमुद्रं प्राप्तुं समर्था: भवाम:। परन्तु यदि कश्चित् जन: स्वार्थवशात् क्रोधवशात् वा परिवारात् प्रतिमुखो भवति, सोऽपि नदी (परिवार)-जल-(स्नेह)-वियुक्त: कदाचिदपि ज्ञानेन सुखेन च पूर्णम् आनन्दमयं संसारसमुद्रं न प्राप्नोति।

चतुर्भ्य: विघ्नेभ्य: रक्षिता: जना: ज्ञानेन सुखेन च पूर्णम् आनन्दमयं संसाररूपं समुद्रम् अवश्यं प्राप्नुवन्ति।

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) काष्ठखण्ड: काष्ठ-लकड़ी का टुकड़ा **आवर्त:** पानी का चक्र, भँवर

(स्त्रीलिंग) संलग्नता जुड़ना, घनिष्ठता **निमग्नता** डूबे रहना, डुबोया जाना **प्रवृत्ति:** प्रवृत्ति, काम-काज **अक्षक्रीडा** जुआ का खेल

(नपुंसकलिंग) स्नेहरूपम् स्नेहरूपी **जीवनम्** जीवन, ज़िन्दगी **सुरापानम्** शराब का सेवन **तमाखुभक्षणम्** तम्बाकू खाना **विमुखत्वम्** विमुखता, किसी भी वस्तु से मुँह फेर लेना या उसके प्रति नीरस हो जाना

सर्वनाम : कञ्चन किसी एक को, किसी को **अस्माकम्** हमारा, मेरा **ये** (पु) वे सब, वे (बहुवचन) **ते** (पु.) वे (ब. व.), वे सब **एषु** (पु.) इन सभी में, इन सब में

विशेषण : नीयमानम् (काष्ठखण्डम्) ले जाने वाले (लकड़ी के टुकड़े) को **स्वकीये (परिवारे)** अपने (परिवार) में **चत्वार: (विघ्ना:)** चार (विघ्न), चार (बाधाएँ) **कीदृशा: (विघ्ना:)** किस प्रकार के (विघ्न) **सुखरूपम् (समुद्रम्)** सुखरूपी (समुद्र) को **सामाजिक: (व्यवहार:)** सामाजिक (व्यवहार) **भाररूप: (व्यवहार:)** बोझ समान (व्यवहार) **पतित: (जन:)** गिरा हुआ (व्यक्ति) **तादृश: (प्रयत्न:)** उस तरह का (वैसा प्रयत्न), उस तरह का (प्रयास) **आनन्दमयं (संसारसमुद्रम्)** आनन्द से पूर्ण (संसार रूपी समुद्र) को

अव्यय : सह साथ (में) **अपि** भी **इव** की तरह **तत्र** वहाँ, उस स्थान पर **नाम** नाम से जाना, नाम से परिचित, इस नाम का **वस्तुत:** वास्तव में, हकीकत में **तु** तो **तथापि** उसके बाद भी **चेत्** यदि **यद्यपि** जो भी **सर्वत्र** सभी जगह पर, प्रत्येक स्थल पर **बहि:** बाहर **परित:** चारों तरफ **वा** अथवा, विकल्प के अर्थ में **सततम्** लगातार, बिना रुके

समास : काष्ठखण्ड: (काष्ठस्य खण्ड: - षष्ठी तत्पुरुष)। गङ्गातीरे गङ्गाया: तीरम्, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष)। जलप्रवाहेण (जलस्य प्रवाह:, तेन - षष्ठी तत्पुरुष)। गमनमार्गे (गमनस्य मार्ग:, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष)। भाराधिक्येन (भारस्य आधिक्यम्, तेन - षष्ठी तत्पुरुष)। आवर्तपातता (आवर्ते पातता - सप्तमी तत्पुरुष)। प्रवाहरूप: (प्रवाह: रूपं यस्य स: - बहुव्रीहि)। स्नेहरूपम् (स्नेह: रूपम् यस्य स: - बहुव्रीहि)। काष्ठरूपा: (काष्ठं रूपं येषां ते -बहुव्रीहि)। सुखपूर्णम् (सुखेन पूर्णम् - तृतीया तत्पुरुष)। संसाररूपम् (संसार: रूपम् यस्य स:, तम् - बहुव्रीहि)। नदीरूपे (नदी रूपम् यस्य तत्, तस्मिन् - बहुव्रीहि)। आहारनिद्राभयादय: (आहार: च निद्रा च भयं च (- आहार-निद्रा-भयानि, इतरेतर द्वन्द्व), आहारनिद्राभयानि आदि: येषाम् ते - बहुव्रीहि)। प्रवृत्तिरूप: (प्रवृत्ति: रूपं यस्य स: - बहुव्रीहि)। सुखरूपम् (सुखं रूपं यस्य स:, तम् -बहुव्रीहि)। भाररूप: (भार: रूपम् यस्य स: - बहुव्रीहि)। संसारसमुद्रम् (संसार: एव समुद्र:, तम् - कर्मधारय)। अक्षक्रीडा (अक्षाणां क्रीडा - षष्ठी तत्पुरुष)। तमाखुभक्षणम् (तमाखो: भक्षणम् - षष्ठी तत्पुरुष)। चौरकर्म (चौरस्य कर्म - षष्ठी तत्पुरुष)। मानवजीवने (मानवस्य जीवनम्, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष)। आवर्तभूतानि (आवर्त: भूत: यस्य तत्, तानि - बहुव्रीहि)। सुखादिरूपम् (सुखम् आदि: यस्य स: - सुखादि:, (बहुव्रीहि), सुखादि: रूपं यस्य स:, तम् - बहुव्रीहि)। स्वार्थवशात् (स्वार्थस्य वश:, तस्मात् - षष्ठी तत्पुरुष)। क्रोधवशात् (क्रोधस्य वश:, तस्मात् - षष्ठी तत्पुरुष)। नदीजलवियोग: (नद्या: जलम् (- नदीजलम्, षष्ठी तत्पुरुष), नदीजलात् वियोग: - पञ्चमी तत्पुरुष)।

कृदन्त : (वि.कृ.) सेवनीया: उपभोग करने योग्य **करणीया:** करने लायक, करने योग्य **(क.भू.कृ)**

उपविष्टः बैठे हुए **अपेक्षितः** अपेक्षा रखने वाले **निमज्जितः** डूबा हुआ, तल पर जा कर बैठा हुआ **पतितः** गिरा हुआ **बाधिता** अटकी हुई, बाधित हुई, रुकी हुई **रक्षिताः** रक्षित, सुरक्षा प्राप्त, सम्भाला हुआ **(हे.कृ) प्राप्तुम्** प्राप्त करने के लिए, पाने के लिए **आगन्तुम्** आने के लिए

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपदी) वह् (वहति) बहना **प्रच्छ् > पृच्छ् (पृच्छति)** पूछना, प्रश्न करना **अर्ह् (अर्हति)** योग्य होना, लायक होना

छट्ठा गण (परस्मैपदी) उप + दिश् (उपदिशति) उपदेश देना

विशेष

1. शब्दार्थ : प्रदर्शयन् दिखाते हुए, बताते हुए **प्राप्स्यति** प्राप्त करेंगे, पाएँगे **भाराधिक्येन** भार (वजन) की अधिकता के कारण **आवर्तपातता** जलचक्र (भँवर) में जा फँसना **चत्वारः** चार (पु.) **न भवेयुः** नहीं होता, नहीं होगा **जीवनम् जीवन्तः** जीवन को जीते हुए, जीवन यापन करते हुए **सुखपूर्णम्** सुख से परिपूर्ण को, सुख सम्पन्न को **शक्नुमः** (हम सब) शक्तिमान होंगे **सेवने** सेवन करने में, खाने में **शक्तिम् अतिक्रम्य** शक्ति का अतिक्रमण करके, शक्ति से ज्यादा काम करके **न भवेत्** नहीं होगा, होता नहीं है **अतिभारत्वात्** अतिशय भारी होने के कारण **निमज्जन्ति** डूब जाते हैं, नीचे तलहट पर बैठ जाते हैं **इत्यादीनि** इत्यादि, आदि-आदि **आवर्तभूतानि** जलचक्र बने हुए, भँवर बने हुए **तरन्तः** तैरने वाले **निवसन्तः** निवास करने वाले, रहने वाले **समर्थाः भवामः** (हम सब) समर्थ बनते हैं **स्वार्थवशात्** स्वार्थ के वश होने के कारण **क्रोधवशात्** क्रोध के वश होने के कारण **नदी (परिवार)-जल (स्नेह)-वियुक्तः** नदी (अर्थात् परिवार) के पानी (अर्थात् स्नेह) से विभक्त-अलग हुआ **प्राप्नोति** प्राप्त करता है, पाता है

2. सन्धि : नदीजलवियोगश्चेति चत्वारो विघ्नाः (नदीजलवियोगः च इति चत्वारः विघ्नाः)। गुरुरग्रे (गुरुः अग्रे)। काष्ठखण्डा इव (काष्ठखण्डाः इव)। भवन्तीति (भवन्ति इति)। वस्तुतस्तु (वस्तुतः तु)। सामाजिको व्यवहारः (सामाजिकः व्यवहारः)। भाररूपो भवति (भाररूपः भवति)। सर्वत्रैव (सर्वत्र एव)। अपेक्षितो भवति (अपेक्षितः भवति)। करणीयो भवति (करणीयः भवति)। ततस्ते (ततः ते)। नार्हन्ति (न अर्हन्ति)। सोऽपि (सः अपि)।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) जलप्रवाहे गुरुः शिष्यं किं दर्शयति ? ◯

(क) पाषाणखण्डम् (ख) काष्ठखण्डम् (ग) काञ्चनम् (घ) गमनमार्गम्

(2) वयं सर्वे मानवाः कीदृशाः इव स्मः ? ◯

(क) जलम् इव (ख) नदी इव (ग) विघ्ना इव (घ) काष्ठखण्डा इव

(3) सामाजिको व्यवहारः कुत्र अपेक्षितो भवति ? ◯

(क) सुखे (ख) शुभप्रसङ्गे (ग) सर्वत्र (घ) अतिदुःखे

(4) केषां जनानां प्रगतिः बाधिता भवति ? ◯

(क) भयग्रस्तानाम् (ख) व्यसनिजनानाम् (ग) व्यावहारिकानाम् (घ) शिष्यजनानाम्

(5) गुरुः .... सह उपविष्टः आसीत्। ◯

(क) शिष्ये (ख) शिष्येण (ग) शिष्यस्य (घ) शिष्यम्

(6) .... प्रतिमुखत्वम् एव नदीजलवियोगः। ◯

(क) परिवारात् (ख) संसारात् (ग) व्यवहारात् (घ) प्रवाहात्

(7) आहारादयः .... भवन्ति। ◯

(क) सेवनीयाः (ख) सेवनीयः (ग) सेवनीयो (घ) सेवनीयम्

(8) सामाजिको व्यवहारः शक्तिमनतिक्रम्य न .... । ◯

(क) भवेताम् (ख) भवेयुः (ग) भवेत् (घ) भवेयम्

(9) गमनमार्गे .... विघ्नाः भवन्ति। ◯

(क) एकः (ख) सप्त (ग) त्रयः (घ) चत्वारः

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषायाम् उत्तरत ।

(1) गुरुः कुत्र वर्तमानः आसीत् ?

(2) गुरुः कम् उपदिशति ?

(3) प्रवाहरूपे परिवारे किं वहति ?

(4) कीदृशाः जनाः एकस्मिन् स्थाने भ्रमन्ति ?

(5) विघ्नरहिताः जनाः कीदृशं समुद्रं प्राप्नुवन्ति ?

3. कृदन्तप्रकारं लिखत ।

(1) आगन्तुम् ....
(2) अतिक्रम्य ....
(3) पतिताः ....
(4) करणीयाः ....
(5) बाधिता ....

4. सन्धिं योजयत ।

(1) शिष्यः + अपृच्छत्। ....

(2) पतितः + जनः। ....

(3) अतः + तत्र। ....

(4) प्रगतिः + तेषाम्। ....

(5) गुरुः + अग्रे। ....

5. अधः प्रदत्तानां पदानां समासप्रकारं लिखत।

(1) भाराधिक्येन ....
(2) आहारनिद्राभयादयः ....
(3) संसारसमुद्रम् ....
(4) सुखपूर्णम् ....

6. धातुरूपाणां परिचयं कारयत ।

यथा : गच्छन्ति	गम् (गच्छ्)	परस्मैपद	वर्तमानकाल	अन्यपुरुष	बहुवचन
(1) भ्रमन्ति	....	....	....	....	....
(2) अपृच्छत्	....	....	....	....	....
(3) भवेयुः	....	....	....	....	....
(4) भवामः	....	....	....	....	....

7. पुरुषवचनानुसारं शब्दरूपाणां परिचयं कारयत ।

यथा : देशे	देश	सप्तमी	एकवचनम्	देश में
(1) प्रवाहेण	....	....	....	....
(2) अस्माकम्	....	....	....	....
(3) तीरेषु	....	....	....	....
(4) व्यवहारान्	....	....	....	....
(5) परिवारात्	....	....	....	....

8. प्रश्नानाम् उत्तराणि मातृभाषया लिखत ।

(1) सच्चा सुख प्राप्त करने के लिए कौन योग्य नहीं है ?

(2) लेखक ने मनुष्य को काष्ठखंड के समान क्यों कहा है ?

(3) समुद्र तक जाने में काष्ठखंड को किन-किन विघ्नों का सामना करना पड़ सकता है ?

(4) आवर्तपात नामक विघ्न को समझाइए।

9. विभागद्वयं यथार्थरीत्या संयोजयत ।

क	ख
(1) आवर्तपातता	(1) परिवारात् प्रतिमुखत्वम्
(2) तीरे संलग्नता	(2) सामाजिकव्यवहाराणां भाराधिक्यम्
(3) जलवियोगः	(3) व्यसनेषु सततं पतनम्
(4) जले निमग्नता	(4) आहारादीनां सेवने सततं प्रवृत्तिः
	(5) तन्न युक्तं साम्प्रतं क्षणमपि अत्र अवस्थातुम्।

प्रवृत्ति

- मानवीय दुर्व्यसनों की सूची बनाइए तथा उससे होने वाली हानियाँ भी लिखिए।
- दुर्गुणों का परित्याग कर महान व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध हुए महानुभावों की सूची बनाइए।

•

7. सुभाषितकुसुमानि

'सुष्ठु भाषितं सुभाषितम्' अर्थात् जो अच्छी तरह से कहा गया हो, वह सुभाषित है। संस्कृत साहित्य में इस प्रकार के सुभाषितों का कभी न समाप्त होने वाला खजाना है। साहित्यकारों का ऐसा मानना है कि 'पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलम् अन्नं सुभाषितम्।' अर्थात् पृथ्वी पर तीन रत्न हैं-जल, अन्न और सुभाषित। मानवजीवन के लिए जिस तरह जल और अन्न अनिवार्य है, ठीक उसी तरह सुभाषित भी अनिवार्य हैं।

संस्कृत साहित्य के ये सुभाषित मात्र भारतीय प्रजा या संस्कृति के लिए ही नहीं है अपितु समग्र मानव संस्कृति की पहचान कराते हैं। परिणामतः ये सुभाषित स्थान और समय के बंधनों से मुक्त हो कर मानव-मात्र के जीवन का दिशा निर्देश करते हैं। इनके माध्यम से कवि मानवजीवन में मूल्यों की स्थापना करने का प्रयास करते हैं। व्यक्ति के चरित्रनिर्माण के लिए ये (सुभाषित) मित्र के समान सहायक बनते हैं। जीवन में ग्रहण करने योग्य बातों का अनुसरण करने से मानव को कैसे सुख और आनन्द की अनुभूति हो सकती है, उसके उत्तम उदाहरण भी इन सुभाषितों से प्राप्त होते हैं। गागर में सागर की विशेषता इन सुभाषितों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

प्रस्तुत पाठ में सात सुभाषितों का संग्रह है जिसमें सज्जनों के वचनों का मूल्य, वृक्षों की उपयोगिता, महापुरुषों के अनुकरणीय गुणों की प्राप्ति, अस्थिर चित्तवाले व्यक्तियों से होनेवाली हानि, व्यक्ति की परीक्षा की उपयोगिता, महापुरुषों के अनुकरणीय गुणों और धैर्यवान व्यक्तियों के स्वभाव का सुचारु वर्णन किया गया है। भविष्य के नागरिक और वर्तमान के विद्यार्थियों में जीवन मूल्य, सद्गुणों तथा जीवन-कौशलों का सिंचन करने के उद्देश्य से इन सुभाषित कुसुमों को यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

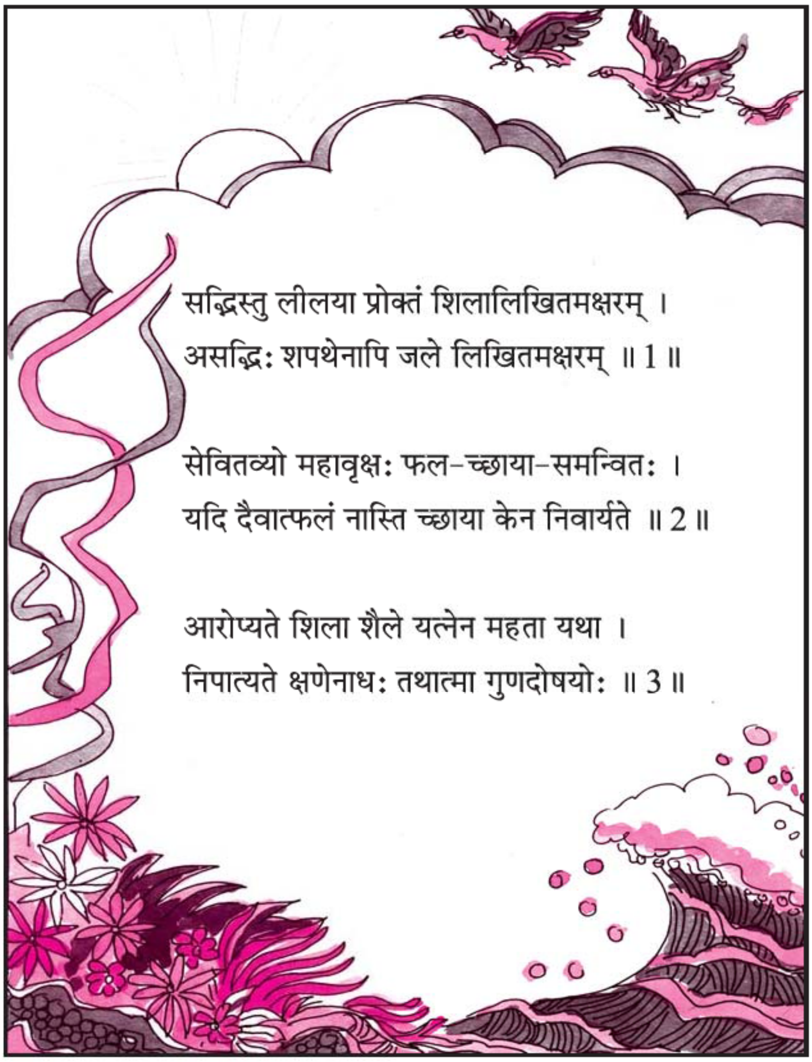

सद्भिस्तु लीलया प्रोक्तं शिलालिखितमक्षरम् ।
असद्भिः शपथेनापि जले लिखितमक्षरम् ॥ 1 ॥

सेवितव्यो महावृक्षः फल-च्छाया-समन्वितः ।
यदि दैवात्फलं नास्ति च्छाया केन निवार्यते ॥ 2 ॥

आरोप्यते शिला शैले यत्नेन महता यथा ।
निपात्यते क्षणेनाधः तथात्मा गुणदोषयोः ॥ 3 ॥

क्षणे रुष्टः क्षणे तुष्टः रुष्टः तुष्टः क्षणे क्षणे ।
अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयङ्करः ॥4॥

यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते
निघर्षण-च्छेदन-ताप-ताडनैः।
तथा चतुर्भिः पुरुषः परीक्ष्यते
श्रुतेन शीलेन गुणेन कर्मणा ॥5॥
आपत्सु रामः समरेषु भीमः
दानेषु कर्णश्च नयेषु कृष्णः ।
भीष्मः प्रतिज्ञापरिपालनेषु
विक्रान्तकार्येषु भवाञ्जनेयः ॥6॥

प्रारम्भते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहताः विरमन्ति मध्याः ।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति ॥7॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) शपथः शपथ, सौगंध **शैलः** पर्वत **प्रसादः** कृपा, प्रसन्नता **पुरुषः** मनुष्य, मानव (संस्कृत में पुरुष शब्द का प्रयोग स्त्री और पुरुष-मानवमात्र के लिए किया जाता है। अतः यहाँ भी पुरुषः पद स्त्री और पुरुष दोनों के लिए प्रयुक्त किया गया है।) **समरः** युद्ध **नयः** नीति **आञ्जनेयः** अंजनि पुत्र, हनुमान

(स्त्रीलिंग) लीला सरलता, सहजता **छाया** छाया **शिला** शिला, बड़ा पत्थर

(नपुंसकलिंग) अक्षरम् वर्ण, अकार आदि - 'अ' इत्यादि अक्षर **कनकम्** सोना, सुवर्ण **श्रुतम्** ज्ञान **शीलम्** चरित्र

सर्वनाम : केन (पु.-नपुं.) किसके द्वारा, किससे

विशेषण : शिलालिखितम् (अक्षरम्) शिला पर लिखा हुआ (अक्षर) **फलच्छायासमन्वितः (महावृक्षः)** फल और छाया से युक्त (बड़ा वृक्ष)

अव्यय : अधः नीचे **अद्यैव** आज ही

समास : शिलालिखितम् (शिलायां लिखितम् - सप्तमी तत्पुरुष)। महावृक्षः (महान् चासौ वृक्षः - कर्मधारय)। फलच्छायासमन्वितः (फलम् च छाया च (-फलच्छाये, इतरेतर द्वन्द्व), फलच्छायाभ्याम् समन्वितः, तम् - तृतीया तत्पुरुष)। गुणदोषयोः (गुणः च दोषः च, तयोः - इतरेतर द्वन्द्व)। अव्यवस्थितचित्तस्य (व्यवस्थितं चित्तं यस्य सः - व्यवस्थितचित्तः - बहुव्रीहि), न व्यवस्थितचित्तः, तस्य - नञ् तत्पुरुष)। निघर्षणच्छेदनतापताडनैः, (निघर्षणं च छेदः च तापः च ताडनं च निघर्षणच्छेदनतापताडनानि, तैः इतरेतर द्वन्द्व)। विक्रान्तकार्येषु (विक्रान्तं च तत् कार्यम्, तेषु - कर्मधारय)। नीतिनिपुणाः (नीतिषु निपुणाः - सप्तमी तत्पुरुष)। विघ्नभयेन (विघ्नात् भयम्, तेन - पञ्चमी तत्पुरुष)। विघ्नविहताः (विघ्नैः विहताः - तृतीया तत्पुरुष)। उत्तमजनाः (उत्तमः च असौ जनः, ते - कर्मधारय)।

कृदन्त : (क.भू.कृ.) प्रोक्तम् कहा हुआ, कहा गया **लिखितम्** लिखा हुआ **रुष्टः** क्रोध से भरा हुआ **तुष्टः** संतुष्ट, संतोष पाया हुआ **(वि.कृ.) सेवितव्यः** उपभोग करने लायक, सेवन करना चाहिए **(सं.भू.कृ.) प्रारभ्य** प्रारम्भ करके

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपद) वि + रम् (विरमति) विराम लेना, रुक जाना **परि + त्यज् (परित्यजति)** छोड़ना, त्याग करना

विशेष

1. शब्दार्थ : सद्भिः सज्जनों के द्वारा **असद्भिः** दुर्जनों के द्वारा **फलच्छायासमन्वितः** फल और छाया से युक्त **केन निवार्यते** कौन दूर कर सकता है ? कौन रोक सकता है ? **आरोप्यते** रखा जाता है, चढ़ाया जाता है **यत्नेन महता** खूब प्रयत्नपूर्वक **क्षणेनाधः निपात्यते** क्षण मात्र में नीचे गिरा दिया जाता है। **तथात्मा गुणदोषयोः** उसी तरह आत्मा गुण और दोष में (आत्मा को, अपने-आपको गुण में ऊपर उठने में कष्ट होता है किन्तु दोष में नीचे गिरने में समय नहीं लगता।) **अव्यवस्थितचित्तस्य** अव्यवस्थित चित्तवाले का, जिसका चित्त सुचारु रूप से काम नहीं करता ऐसे व्यक्ति का, चंचल चित्तवाले **चतुर्भिः** चार तरह से - रीति से, तरीके से **परीक्ष्यते** परीक्षा की जाती है, जाँच की जाती है **निघर्षणच्छेदनतापताडनैः** घिसना, छेदना-काटना, अग्नि में तपाना, ताड़ना-पीटना इन चार क्रियाओं के द्वारा **कर्मणा** कर्म से **आपत्सु** आपत्तियों में **प्रतिज्ञापरिपालनेषु** प्रतिज्ञा के पालन करने के काम में **विक्रान्तकार्येषु** पराक्रम से भरपूर कार्यों में **भव** हो, बनो **प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः** नीच मनुष्यों के द्वारा विघ्नों के डर से आरम्भ नहीं किया जाता है। **मध्याः** मध्यम प्रकार के मनुष्य **विघ्नैः प्रतिहन्यमानाः** विघ्नों द्वारा आहत, विघ्नों का सामना करते

2. सन्धिः सद्भिस्तु (सद्भिः तु)। शपथेनापि (शपथेन अपि)। सेवितव्यो महावृक्षः (सेवितव्यः महावृक्षः)। नास्ति च्छाया (न अस्ति छाया)। क्षणेनाधः (क्षणेन अधः)। तथात्मा (तथा आत्मा)। प्रसादोऽपि (प्रसादः अपि)। कर्णश्च(कर्णः च)। भवाञ्जनेयः (भव आञ्जनेयः)। पुनरपि (पुनः अपि)।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

(1) सद्भि लीलया प्रोक्तं कीदृशम् ? ◯

(क) अचलम् (ख) चलम् (ग) नश्वरम् (घ) असत्यम्

(2) महता यत्नेन शिला कुत्र आरोप्यते ? ◯

(क) भूमौ (ख) नदीतटे (ग) शैले (घ) गृहे

(3) अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादः कीदृशः ? ◯

(क) भयङ्करः (ख) दयनीयः (ग) अनुकरणीयः (घ) तुष्टिकरः

(4) पुरुषः केन परीक्ष्यते ? ◯

(क) शीलेन (ख) धनेन (ग) पदेन (घ) कनकेन

(5) .... कर्णः भव। ◯

(क) नयेषु (ख) दानेषु (ग) समरेषु (घ) आपत्सु

(6) विक्रान्तकार्येषु .... भव। ◯

(क) भीमः (ख) भीष्मः (ग) आञ्जनेयः (घ) कृष्णः

(7) कैः कार्यं न प्रारभ्यते ? ◯

(क) उत्तमजनैः (ख) नीचैः (ग) मध्यमैः (घ) जनैः

(8) के कार्यं प्रारभ्य न परित्यजन्ति ? ◯

(क) मध्यमजनाः (ख) नीचजनाः (ग) सामान्यजनाः (घ) उत्तमजनाः

2. एकेन वाक्येन संस्कृतभाषायाम् उत्तरत ।

(1) कैः प्रोक्तं जले लिखितमक्षरं भवति ?

(2) शिला कथं शैले आरोप्यते ?

(3) गुणेन कः परीक्ष्यते ?

(4) कार्यं प्रारभ्य के परित्यजन्ति ?

3. उदाहरणानुसारं शब्दरूपाणां परिचयं कारयत ।

उदाहरणम् : जले	जल	अकारान्त	नपुंसकलिङ्ग	सप्तमी	एकवचन
(1) लीलया	....	....	....	....	....
(2) समरेषु	....	....	....	....	....
(3) गुणदोषयोः	....	....	....	....	....
(4) ताडनैः	....	....	....	....	....

4. मातृभाषायाम् उत्तरत ।

(1) स्वर्ण की परीक्षा किस-किस तरह से की जाती है ?

(2) आपत्ति में और प्रतिज्ञापालन में किसे आदर्श मानना चाहिए ? क्यों ?

(3) कार्य प्रारम्भ न करने वाले व्यक्तियों को कैसा बताया गया है ?

5. मातृभाषायाम् अनुवादं कृत्वा अर्थं विस्तरत ।

(1) यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते
निघर्षण-च्छेदन-ताप-ताडनैः ॥

(2) सेवितव्यो महावृक्षः फल-च्छाया-समन्वितः ।
यदि दैवात्फलं नास्ति च्छाया केन निवार्यते ॥

6. श्लोकस्य पूर्तिं कुरुत ।

(1) आपत्सु रामः .... भवाञ्जनेयः ॥

प्रवृत्ति

- संस्कृत भाषा में इस तरह के अन्य सुभाषितों का संग्रह कीजिए।
- दो-चार संस्कृत सुभाषितों को कंठस्थ कीजिए और उसका अर्थ समझिए।

•

8. साक्षिभूतः मनुष्यः

संसार को देखने का अपना-अपना तरीका है। उसमें से एक तरीका यह है – संसार को घटनाओं-दुर्घटनाओं से युक्त एक मायाजाल के रूप में देखना। प्रति क्षण, हर स्थान पर विभिन्न घटनाएँ घटती रहती हैं। संसार के विविध पदार्थ एक-दूसरे के संदर्भ में इन सभी घटनाओं के साक्षी बनते रहते हैं। इन साक्षियों में पत्थर के समान जड़ पदार्थ, पशु-पक्षी और मानव जैसे सचेतन पदार्थों का भी समावेश होता है।

अपनी विशिष्ट लाक्षणिकताओं के कारण ये साक्षीभूत पदार्थ भिन्न-भिन्न भूमिका का निर्वाह करते हैं। पत्थर जैसे जड़ पदार्थ बिना काम किए, निष्क्रिय रहकर उन घटनाओं के मौन साक्षी बनते हैं। गाय इत्यादि पशु घटना स्थल से दूर भागकर अपने-आप को बचाने का प्रयास करते हैं। इन दोनों पदार्थों से इसके अतिरिक्त अन्य कोई आशा नहीं की जा सकती। परन्तु मानव की स्थिति इन दोनों से थोड़ी भिन्न प्रकार की है। जैसे कि – दुर्घटना का साक्षी व्यक्ति, दुर्घटनाग्रस्त (व्यक्ति) को देखकर उसके दुःख से स्वयं भी दुःखी होता है। इसके साथ ही दुःखी व्यक्ति की सहायता करने के लिए सक्रिय बनता है और इस तरह अपने कर्तव्य का निर्वाह करता है। साथ ही ऐसी दुर्घटना से कुछ सीखने का प्रयास करता है।

आजकल यातायात के साधनों की अधिकता के कारण राजमार्ग पर अनेक दुर्घटनाएँ घटती हैं। इन घटनाओं के साक्षीभूत व्यक्तियों से जिन अपेक्षाओं की आशा की जाती है, वे अपेक्षाएँ पूरी नहीं होती। इस स्थिति में दुर्घटना के साक्षीभूत व्यक्ति का जो कर्तव्य है, उस कर्तव्य को फलीभूत करने के लिए सदैव तत्पर रहने की ओर दिशासूचन करने के लिए यह संवादात्मक पाठ प्रस्तुत है।

(मार्गे घटमानायाः दुर्घटनायाः साक्षिणः के के भवन्ति, किं किं च ते आचरन्ति इति विषयमधिकृत्य पुनीतसुनीतौ परस्परं संवदतः।)

पुनीतः – भ्रातः ! मार्गे कदाचित् दुर्घटनाः अपि घटन्ति। तत्र प्रायः प्रस्तरादयो जडपदार्थाः, गवादयः पशवः मनुष्याश्चेति त्रयः साक्षिणः भवन्ति। किं त्वं जानासि यत् घटितायाः दुर्घटनायाः सन्दर्भे एते त्रयोऽपि भिन्नं भिन्नं कर्म समाचरन्ति।

सुनीतः – न जानामि। प्रथमं कथयतु यत् प्रस्तरादयः किं कुर्वन्ति ?

पुनीतः – प्रस्तरादयस्तु अचेतनाः सन्ति, ते स्वयं क्रियां कर्तुं समर्थाः न भवन्ति। अतः ते तथैव तिष्ठन्ति।

सुनीतः – सचेतनाः पशवः पक्षिणश्च किं कुर्वन्ति ?

पुनीतः – एते घटनया उत्थितात् ध्वनेः भयमनुभवन्ति। अतः घटनास्थलात् दूरे धावन्ति।

सुनीतः – सत्यं वदति भवान्। गवादयः पशवस्तु निर्बुद्धयः सन्ति। परन्तु कश्चित् सबुद्धिः मानवोऽपि यदि घटनास्थलात् दूरे धावति, तर्हि पशुरेव सः।

पुनीतः – वस्तुतस्तु मनुष्यः यदि मनुष्यः इव वर्तते, तदा सः दुर्घटनायाः साक्षी भूत्वा त्रिविधं कार्यम् आचरति।

सुनीतः – कानि कानि तानि त्रिविधानि कार्याणि ?

पुनीतः – प्रथमं कार्यम् अस्ति दुःखानुभूतिः। मनुष्य एव दुःखेन दुःखितो भवितुमर्हति, सुखेन च सुखितः। अतः दुर्घटनया पीडाग्रस्तं दुःखितं जनं दृष्ट्वा मनुष्येण दुःखानुभूतिः करणीया भवति। यः खलु एतादृशं जीवं पश्यन् अपि दुःखं न अनुभवति, सः मनुष्यः नास्ति, अपि तु सः प्रस्तरः एव। यतो हि प्रस्तरः कदापि अन्यस्य दुःखं न अनुभवति।

सुनीतः – यथार्थं भवानाह। मयापि बहुधा अपरिचितं दुर्घटनाग्रस्तं जनं पश्यता दुःखमनुभूतमस्ति। द्वितीयं कार्यं किमस्ति ?

पुनीतः – द्वितीयं कार्यं तु कर्तव्यस्य निर्वाहः। दुर्घटनाग्रस्तः जनः सद्यः एव ओषधालयश्रितः करणीयः भवति येन तस्य उचितः उपचारः स्यात्। तत्र सङ्गत्य कदाचित् तस्मै रक्तस्य आवश्यकता भवति चेत्, स्वकीयं रक्तमपि तस्मै दातव्यं भवति। तस्य परिवारे सूचना दातव्या भवति येन तस्य परिवारजनः ओषधालयमागत्य तस्य विशेषः सहायो भवेत्। दुर्घटनायाः साक्षिणः मनुष्यस्य एतादृशं कर्तव्यम्। सर्वैः मनुष्यैः अस्य कर्तव्यस्य निर्वाहः करणीयः एव।

सुनीतः – तृतीयं कार्यं किमस्ति, यत् घटनायाः साक्षी मनुष्यः आचरेत् ?

पुनीतः – तृतीयं कार्यम् अस्ति बोधप्राप्तिः। मनुष्येण सदैव बोधप्राप्तये प्रयत्नः करणीयो भवति। यदा वयं कस्याश्चित् दुर्घटनायाः साक्षिणः भवामः तदा कर्तव्यं समाचरन्तः दुःखमनुभवन्तः तस्याः दुर्घटनायाः कञ्चित् बोधमपि प्राप्तुम् अर्हामः। विना कारणं दुर्घटना न भवति। तत्र कस्यचित् जनस्य त्रुटिः कारणं भवति। सा त्रुटिः ज्ञातव्या। तदनन्तरं तादृशीं त्रुटिमहं न कदापि करिष्यामीति बोधोऽपि प्राप्तव्य एव।

सुनीतः – साधु कथितं भवता। घटनायाः साक्षिणः सन्तः कर्तव्यं निर्वहन्तोऽपि, दुःखमनुभवन्तोऽपि यदि वयं बोधपाठं न प्राप्नुमः तदा वयं मनुष्याः न स्मः।

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) प्रस्तरः पत्थर **ध्वनिः** आवाज **उपचारः** उपचार, चिकित्सा **परिजनः** सगे सम्बंधी **सहायः** मदद, सहयोग

(स्त्रीलिंग) त्रुटिः भूल **दुर्घटना** दुर्घटना

(नपुंसकलिंग) भयम् डर **रक्तम्** रक्त, खून, लहू **ओषधालयम्** चिकित्सालय

सर्वनाम : एते (पु.) ये सब **तानि** (नपुं.) उन, वे सभी **कानि** (नपुं.) कौन, क्या **येन** (पु.) जिससे, जिसके द्वारा **तस्य** (पु. नपुं.) उसका **अस्य** (पु.) इसका **वयम्** हम, हम सब

विशेषण : उत्थितात् (ध्वनेः) उठी हुई (आवाज से) **त्रिविधम् (कार्यम्)** तीन प्रकार के (कार्य) **तानि त्रिविधानि (कार्याणि)** वे सभी तीन प्रकार के (कार्य) **प्रथमम् (कार्यम्)** प्रथम कार्य **पीडाग्रस्तं दुःखितम् (जनम्)** पीड़ाग्रस्त दुःखी (व्यक्ति को) **द्वितीयम् (कार्यम्)** दूसरा (काम) **उचितः (उपचारः)** योग्य इलाज, उचित उपचार **स्वकीयम् (रक्तम्)** अपने (रक्त) को **तृतीयम् (कार्यम्)** तीसरा (काम) **तादृशीम् (त्रुटिम्)** उस प्रकार की भूल को

अव्यय : प्रायः अधिकांश, बहुधा, अधिकतर, लगभग, तकरीबन **तथैव** वैसा ही **तर्हि** तो **खलु** निःसन्देह, निश्चय ही सचमुच **अपितु** बल्कि **यतो हि** क्योंकि **यथार्थम्** जैसा है उसी रूप में **बहुधा** अनेक प्रकार से **सद्यः** तुरन्त **सदैव** हमेशा **कदापि** कभी भी

समास : प्रस्तरादयः (प्रस्तरः आदिः येषां ते – बहुव्रीहि)। (यहाँ प्रयुक्त 'आदि' शब्द 'प्रकार' के अर्थ में है। इसलिए पत्थर जैसे, उस प्रकार के पदार्थों को प्रस्तरादि कहते हैं।) जडपदार्थाः (जडः चासौ पदार्थः च, ते – कर्मधारय)। घटनास्थलात् (घटनायाः स्थलम्, तस्मात् – षष्ठी तत्पुरुष)। दुःखानुभूतिः (दुःखस्य अनुभूतिः – षष्ठी तत्पुरुष)। पीडाग्रस्तम् (पीडया ग्रस्तः, तम् – तृतीया तत्पुरुष)। दुर्घटनाग्रस्तम् (दुर्घटनया ग्रस्तः, तम् – तृतीया तत्पुरुष)। ओषधालयश्रितः (ओषधस्य आलयः (– ओषधालयः, षष्ठी तत्पुरुष), ओषधालयं श्रितः – द्वितीया तत्पुरुष)। बोधप्राप्तिः (बोधस्य प्राप्तिः – षष्ठी तत्पुरुष)।

कृदन्त : (सं.भू.कृ.) भूत्वा होकर, बनकर **संगत्य** प्राप्त करके, पास में जाकर **(वि.कृ.) दातव्यम्** देना चाहिए **ज्ञातव्या** जानने योग्य, जानना चाहिए **प्राप्तव्यः** प्राप्त करना चाहिए, ले लेना चाहिए **(क.भू.कृ) कथितम्** कहा, कहा गया

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपद) घट् (घटति) घटित होना, घटना **धाव् (धावति)** दौड़ना

विशेष

1. शब्दार्थ : भ्रातः ! हे भाई (सम्बोधन) **त्रयः साक्षिणः** तीन साक्षियों (को) **प्रथमं कथयतु यत्** पहले कहो कि **कर्तुम् समर्थाः** करने में समर्थ, कर सकने में समर्थ **तथैव तिष्ठन्ति** उसी तरह रहता है, उसी तरह स्थिर रहता है **निर्बुद्धयः भवन्ति** निर्बुद्धि होते हैं, मूर्ख-बुद्धि बिना के होते हैं **कश्चित् सबुद्धिः** कोई बुद्धिमान, कोई बुद्धिशाली **परस्य दुःखेन दुःखितः** दूसरे के दुःख से दुःखी **भवितुमर्हति** हो सकता है **सुखेन च सुखितः** सुख से सुखी होता है **करणीया भवति** करने योग्य, करनी होती है **जीवं पश्यन् अपि** जीव को देखते हुए भी **पश्यता मया** देखता (हुआ) मैं (मुझसे) **दुःखमनुभूतमस्ति** दुःख का अनुभव होता है **ओषधालयश्रितः** चिकित्सालय को, अस्पताल को पहुँचा हुआ **कर्तव्यम् समाचरन्तः** कर्तव्य का पालन करते हुए **दुःखम् अनुभवन्तः** दुःख का अनुभव करते हुए **प्राप्तुम् अर्हाम:** प्राप्त कर सकते हैं **साधु कथितम्** उचित कहा, ठीक कहा **साक्षिणः सन्तः** साक्षी बनकर **कर्तव्यं निर्वहन्तः** कर्तव्य का निर्वाह करते हुए **न प्राप्नुम्** प्राप्त नहीं करते

2. सन्धिः प्रस्तरादयो जडपदार्थाः (प्रस्तरादयः जडपदार्थाः)। मनुष्याश्चेति (मनुष्याः च इति)। त्रयोऽपि (त्रयः अपि)। प्रस्तरादयस्तु (प्रस्तरादयः तु)। पक्षिणश्च (पक्षिणः च)। पशवस्तु (पशवः तु)। मानवोऽपि (मानवः अपि)। पशुरेव (पशुः एव)। मनुष्य एव (मनुष्यः एव)। दुःखितो भवितुमर्हति (दुःखितः भवितुम् अर्हति)। करणीयो भवति (करणीयः भवति)। बोधोऽपि (बोधः अपि)। प्राप्तव्य एव (प्राप्तव्यः एव)। निर्वहन्तोऽपि (निर्वहन्तः अपि)। दुःखमनुभवन्तोऽपि (दुःखम् अनुभवन्तः अपि)।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) के स्वयं क्रियां कर्तुं समर्थाः न सन्ति ? ◯

(क) पशवः (ख) मनुष्याः (ग) प्रस्तराः (घ) पक्षिणः

(2) गवादयः पशवः कीदृशाः भवन्ति ? ◯

(क) अचेतनाः (ख) सबुद्धयः (ग) असमर्थाः (घ) निर्बुद्धयः

(3) दुर्घटनाग्रस्तः जनः कुत्र नेतव्यः ? ◯

(क) गृहम् (ख) ओषधालयम् (ग) कुत्रापि न (घ) पुलिसस्थानकम्

(4) घटनाया उत्थितेन .... भयमनुभवन्ति। ◯

(क) दुःखेन (ख) ध्वनेः (ग) सुखेन (घ) ध्वनिना

(5) साक्षिभूतेन मनुष्येण सदैव किमर्थं प्रयत्नः करणीयः ? ◯

(क) बोधप्राप्तये (ख) धनप्राप्तये (ग) सुखप्राप्तये (घ) शान्तिप्राप्तये

(6) कः परस्य दुःखेन दुःखितः भवितुमर्हति ? ◯

(क) पशुः (ख) वृक्षः (ग) मनुष्यः (घ) प्रस्तरः

(7) साक्षिभूतस्य मनुष्यस्य द्वितीयं कार्यं किम् अस्ति ? ◯

(क) बोधप्राप्तिः (ख) दुःखानुभूतिः (ग) भयानुभूतिः (घ) कर्तव्यस्य निर्वाहः

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषयाम् उत्तरत ।

(1) दुर्घटनायाः साक्षिणः के भवन्ति ?

(2) घटनया उत्थितात् ध्वनेः भीताः पशवः किं कुर्वन्ति ?

(3) दुर्घटनायाः कारणं किं भवति ?

(4) कर्तव्यस्य निर्वाहः कस्य कार्यमस्ति ?

3. अधः प्रदत्तानां कृदन्तानां प्रकारं लिखत ।

(1) भूत्वा	....	(2) संगत्य	....
(3) करणीयः	....	(4) दातव्यम्	....
(5) भवितुम्	....	(6) प्राप्तव्यः	....

4. सन्धिविच्छेदं कुरुत ।

(1) मनुष्याश्चेति ....

(2) प्रस्तरादयस्तु ....

(3) मानवोऽपि ....

(4) निर्वहन्तोऽपि ....

(5) पशुरेव ....

(4) यतो हि ....

5. रेखाङ्कितपदानां समासप्रकारं लिखत ।

(1) जडपदार्थाः साक्षिणः भवन्ति।

(2) अतः घटनास्थलात् दूरे धावन्ति।

(3) दुर्घटनाग्रस्तं दुःखितं जीवं पश्यन् जनः किं कुर्यात्।

6. रेखाङ्कितपदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत।

(का, कस्याः, कस्मात्, कम्, कैः)

(1) पशवः ध्वनेः भयमनुभवन्ति।

(2) मनुष्यैः कर्तव्यस्य निर्वाहः करणीयः।

(3) विना कारणं दुर्घटना न भवति।

(4) दुर्घटनायाः बोधं प्राप्तुम् अर्हामः।

7. प्रदत्तपदानि प्रयुज्य वाक्यानि रचयत ।

(1) बिना कारण दुर्घटना नहीं होती।

(कारण विना दुर्घटना न भू)

(2) हमारे तीन कर्तव्य हैं।

(अस्मद् त्रि कर्तव्य अस्)

(3) पत्थर अचेतन होते हैं।

(प्रस्तर अचेतन भू)

(4) मनुष्य सुख और दु:ख का अनुभव करता है।

(मानव सुख च दु:ख अनु + भू)

8. निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि मातृभाषया लिखत ।

(1) दुर्घटना के साक्षी कौन-कौन बनते हैं ?

(2) किस मनुष्य की गणना पशुओं में की जाती है ?

(3) दुर्घटना के साक्षी बने व्यक्तियों के कौन-कौन से तीन कर्तव्य हैं ?

(4) किस मनुष्य की तुलना पत्थर से की गई है ? क्यों ?

प्रवृत्ति

- दुर्घटना के समय तत्काल की जाने वाली सेवाओं की सूची बनाइए।
- देखी हुई किसी घटना या दुर्घटना का वृत्तांत (विवरण) लेखन कीजिए।
- मार्ग सुरक्षा के नियमों का चार्ट बनाइए।

•

9. चक्षुष्मान् अन्ध एव

संस्कृत साहित्य में बाणभट्ट गद्यसम्राट के रूप में जाने जाते हैं। वे सातवीं सदी के पूर्वार्द्ध में सम्राट हर्षवर्धन के समय (उत्तर भारत) में हुए थे। उनका जन्म वत्स गोत्र में हुआ था। उनके पिता का नाम चित्रभानु और माता का नाम राजदेवी था। उन्होंने हर्षचरित और कादम्बरी नामक गद्यकाव्य के दो ग्रन्थों की रचना की। इसमें से 'कादम्बरी' की कथावस्तु काल्पनिक है, जबकि हर्षचरित की कथावस्तु ऐतिहासिक है। समकालीन सम्राट हर्षवर्धन के जीवन के कुछ प्रसंगों का हर्षचरित में निरूपण किया गया है। इसमें (हर्षचरित में) कुल आठ प्रकरण हैं जिसे उच्छ्वास नाम दिया गया है। प्रस्तुत पाठ 'हर्षचरित' के प्रथम उच्छ्वास से सम्पादित करके लिया गया है।

पितामह ब्रह्मा की सभा में ऋषि दुर्वासा सामवेद के मन्त्रों का गान कर रहे थे, उसी समय किसी कारणवश अन्य मुनि के साथ झगड़ पड़े। परिणामत: मंत्र गान में भूल हो गई। अत: देवी सरस्वती हँस पड़ीं। देवी सरस्वती को हँसते हुए देख दुर्वासा क्रोधित हुए। क्रोध के कारण विवेक-हीन बने दुर्वासा ने देवी सरस्वती को पृथ्वी पर अवतार लेने का शाप दे दिया। दुर्वासा के क्रोधी स्वभाव से डरकर अन्य ऋषि-मुनि तो मौन हो गए, परन्तु पितामह ब्रह्मा ने ऋषि दुर्वासा को कठोर शब्दों में चेतावनी दी। ब्रह्मा के द्वारा दी गई चेतावनी का वर्णन प्रस्तुत पाठ में किया गया है।

क्रोध व्यक्ति में अच्छे और बुरे के विवेक को नष्ट कर देता है। इसलिए मनुष्य आँखवाला होते हुए भी नेत्रविहीन बन जाता है। मानव मन में क्रोध उत्पन्न होने से जो शारीरिक प्रतिक्रियाएँ होती हैं और क्रोध के कारण जो दुष्परिणाम प्राप्त होते हैं उनकी ओर यहाँ अँगुलिनिर्देश किया गया है। क्रोधांध व्यक्ति आँख होते हुए भी किन-किन बातों को नहीं देख सकता, उसका वर्णन कर क्रोध से दूर रहने की सीख अत्यंत सहज रूप से इस पाठ में दी गई है।

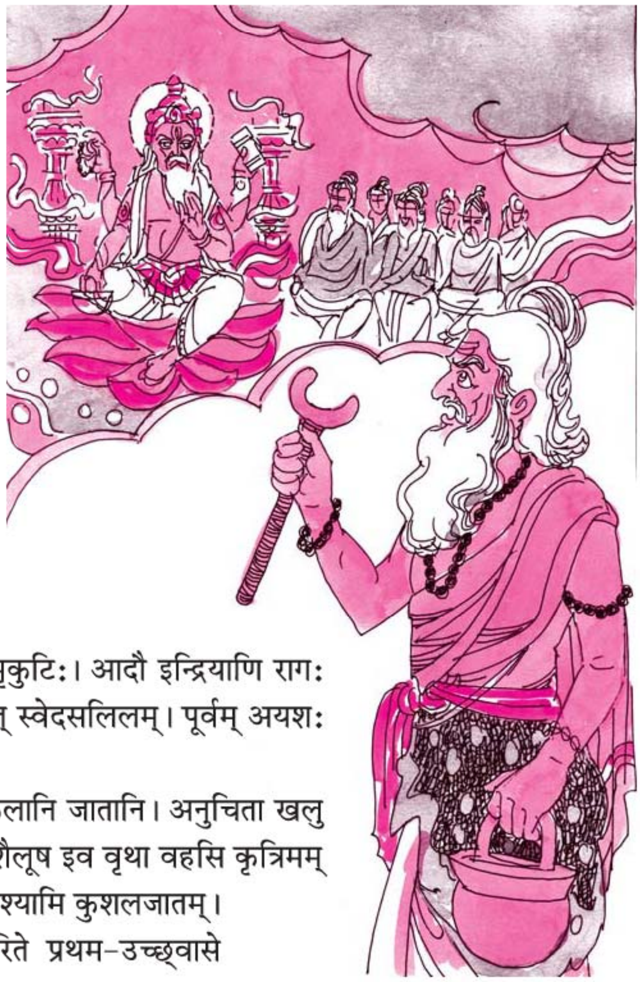

अथ तां तथा शप्तां सरस्वतीं दृष्ट्वा पितामहो मङ्गलपटहेनेव स्वरेण आशाः पूरयन् सुधीरं दुर्वाससम् उवाच।

ब्रह्मन्, न खलु साधुसेवितोऽयं पन्थाः येनासि प्रवृत्तः। निहन्त्येष परस्तात्। इन्द्रियाश्वसमुत्थापितं हि रजः कलुषयति दृष्टिम् अनक्षजिताम्। कियद् दूरं वा चक्षुरीक्षते। विशुद्धया हि धिया पश्यन्ति कृतबुद्धयः सर्वान् अर्थान् असतः सतो वा। निसर्गविरोधिनी चेयं पयःपावकयोरिव धर्मक्रोधयोरेकत्र वृत्तिः। आलोकमपहाय कथं तमसि निमज्जसि। क्षमा हि मूलं सर्वतपसाम्। परदोषदर्शनदक्षा दृष्टिरिव कुपिता बुद्धिः न ते आत्मदोषं पश्यति। क्व महातपोभारवैवधिकता, क्व पुरोभागित्वम्।

अतिरोषणः चक्षुष्मान् अन्ध एव जनः।

न हि कोपकलुषिता विमृशति मतिः कर्तव्यमकर्तव्यं वा। कुपितस्य प्रथमम् अन्धकारीभवति विद्या, ततो भृकुटिः। आदौ इन्द्रियाणि रागः समास्कन्दति, चरमं चक्षुः। आरम्भे तपो गलति, पश्चात् स्वेदसलिलम्। पूर्वम् अयशः स्फुरति, अनन्तरम् अधरः।

कथं लोकविनाशाय ते विषपादपस्येव जटावल्कलानि जातानि। अनुचिता खलु अस्य मुनिवेषस्य हारयष्टिरिव वृत्तमुक्ता चित्तवृत्तिः। शैलूष इव वृथा वहसि कृत्रिमम् उपशमशून्येन चेतसा तापसाकल्पम्। अल्पमपि न ते पश्यामि कुशलजातम्।

– हर्षचरिते प्रथम-उच्छ्वासे

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) पितामहः ब्रह्मा (पुराणों के अनुसार मानव सृष्टि की उत्पत्ति ब्रह्मा से हुई है अतः उन्हें पिता के पिता अर्थात् पितामह कहते हैं।) **पटहः** नगाड़ा **दुर्वासाः** ऋषि का नाम (क्रोधी ऋषि के रूप में प्रसिद्ध) **अर्थः** पदार्थ के गुण **आलोकः** प्रकाश **रागः** (संदर्भित अर्थ) आसक्ति, (अन्य अर्थ) लालिमा **निसर्गः** स्वभाव, प्रकृति **विषपादपः** विषाक्त वृक्ष, जहर का पौधा **शैलूषः** नट **आकल्पः** वेष

(स्त्रीलिंग) आशा दिशा **वृत्ति** स्थिति, व्यवहार **भृकुटि** भ्रमर, भौंह **हारयष्टि** शृंखला **वैवधिकता** भार सहन करने की क्षमता-शक्ति

विशेषण : शप्ताम् (सरस्वतीम्) श्राप (शाप) युक्त (सरस्वती को) **इन्द्रियाश्वसमुत्थापितम् (रजः)** इन्द्रिय रूपी अश्वों (घोड़ों) द्वारा उड़ाई गई (धूल) **कियद् (दूरम्)** कितनी (दूर) **विशुद्धया (धिया)** शुद्ध (बुद्धि द्वारा) **परदोषदर्शनदक्षा (दृष्टिः)** दूसरों का दोष देखने में निपुण (दृष्टि) **कोपकलुषिता (मतिः)** क्रोध से मलिन (दूषित) हुई बुद्धि **अतिरोषणः चक्षुष्मान् (जनः)** अत्यन्त क्रोधित हुई आँखोंवाले (मनुष्य) **वृत्तमुक्ता (चित्तवृत्तिः)** सदाचार रहित (मनोवृत्ति) **उपशमशून्येन (चेतसा)** शान्ति रहित (मन से)

अव्यय : परस्तात् भविष्य में, बाद में **एकत्र** इकट्ठा, एक साथ **क्व** कहाँ **अनन्तरम्** बाद में (उसके) बाद **पश्चात्** बाद में, बाद

समास : मङ्गलपटहेन (मङ्गलः चासौ पटहः, तेन - कर्मधारय)। साधुसेवितः (साधुभिः सेवितः - तृतीया तत्पुरुष)। इन्द्रियाश्वसमुत्थापितम् - इन्द्रियाणि एव अश्वाः (- इन्द्रियाश्वाः, कर्मधारय), इन्द्रियाश्वैः समुत्थापितम् - तृतीया तत्पुरुष)। कृतबुद्धयः (कृता बुद्धिः येन, ते - बहुव्रीहि)। निसर्गविरोधिनी (निसर्गस्य विरोधिनी - षष्ठी तत्पुरुष)। पयःपावकयोः (पयः च पावकश्च, तयोः - इतरेतर द्वन्द्व)। धर्मक्रोधयोः (धर्मः च क्रोधः च, तयोः - इतरेतर द्वन्द्व)। सर्वतपसाम् (सर्वम् च तत् तपः, तेषाम् - कर्मधारय)। परदोषदर्शनदक्षा (परस्य दोषः - परदोषः, षष्ठी तत्पुरुष), परदोषस्य दर्शनम् (- परदोषदर्शनम्, षष्ठी तत्पुरुष), परदोषदर्शने दक्षा - सप्तमी तत्पुरुष)। आत्मदोषम् (आत्मनः दोषः, तम् - षष्ठी तत्पुरुष)। महातपोभारवैवधिकता (महत् च तत् तपः (कर्मधारय), महातपसः भारः महातपोभारः (षष्ठी तत्पुरुष), महातपोभारस्य वैवधिकता - षष्ठी तत्पुरुष)। कोपकलुषिता (कोपेन कलुषिता - तृतीया तत्पुरुष)। स्वेदसलिलम् (स्वेदस्य सलिलम् - षष्ठी तत्पुरुष)। लोकविनाशाय (लोकानां विनाशः, तस्मै - षष्ठी तत्पुरुष)। विषपादपस्य (विषस्य पादपः, तस्य - षष्ठी तत्पुरुष)। जटावल्कलानि (जटा च वल्कलानि च - इतरेतर द्वन्द्व)। मुनिवेषस्य (मुनेः वेषः, तस्य - षष्ठी तत्पुरुष)। हारयष्टिः (हारः एव यष्टिः - कर्मधारय)। वृत्तमुक्ता (वृत्तेन मुक्ता - तृतीया तत्पुरुष)। चित्तवृत्तिः (चित्तस्य वृत्तिः - षष्ठी तत्पुरुष)। उपशमशून्येन (उपशमेन शून्यम्, तेन - तृतीया तत्पुरुष)। तापसाकल्पम् (तापसस्य आकल्पः, तम् - षष्ठी तत्पुरुष)।

कृदन्त : (सं.भू.कृ.) दृष्ट्वा देखकर **अपहाय** छोड़कर **(क.भू.कृ.) प्रवृत्तः** प्रवृत्त हुए, लगे

विशेष

1. शब्दार्थ : चक्षुष्मान् अन्ध एव आँख होते हुए भी अंधा ही **पूरयन्** भर देता हुआ **सुधीरम्** गंभीरतापूर्वक **उवाच** बोले **ब्रह्मन्** हे ब्राह्मण (यहाँ यह सम्बोधन ब्रह्माजी ने ऋषि दुर्वासा के लिए किया है) **साधुसेवितः** सज्जनों द्वारा आचरण किया गया हो ऐसा **पन्थाः** मार्ग, रास्ता **निहन्ति** वध कर देते हैं **कलुषयति** मलिन करता है **अनक्षजिताम्** चंचल इंद्रियवालों की **धिया** बुद्धि से **कृतबुद्धयः** शुद्ध बुद्धि वाले **असतः सतः वा अर्थान्** गलत या सही विषय को **पयःपावकयोः इव** पानी एवं अग्नि के समान **तमसि** अंधकार में **निमज्जसि** (तुम) डूब रहे हो **महातपोभारवैवधिकता** भयंकर तप के भार को वहन (उठाने, सहने) करने की शक्ति **पुरोभागित्वम्** दूसरों के दोष देखने की वृत्ति **अन्धकारीभवति** अंधी बन जाती है, नष्ट हो जाती है **समास्कन्दति** आक्रमण करते हैं, चारों ओर से घेर लेते हैं **चरमम्** अंतिम, बाद का, पीछे का **तापसाकल्पम्** तपस्वी के वेष को **(आकल्प=वेष) कुशलजातम्** कुशलता के समूह को, अनेक कुशलताओं (प्रवीणता) को

2. सन्धि : पितामहो मङ्गलपटहेनेव (पितामहः मङ्गलपटहेन इव)। साधुसेवितोऽयम् (साधुसेवितः अयम्)। येनासि (येन असि)। निहन्त्येष परस्तात् (निहन्ति एषः परस्तात्)। चक्षुरीक्षते (चक्षुः ईक्षते)। सतो वा (सतः वा)। चेयम् (च इयम्))। पयःपावकयोरिव (पयःपावकयोः इव)। धर्मक्रोधयोरेकत्र (धर्मक्रोधयोः एकत्र)। आलोकमपहाय (आलोकम् अपहाय)। दृष्टिरिव (दृष्टिः इव)। ततो भृकुटिः (ततः भृकुटिः)। तपो गलति (तपः गलति)। विषपादपस्येव (विषपादपस्य इव)। हायष्टिरिव (हारयष्टिः इव)। शैलूष इव (शैलूषः इव)।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) इन्द्रियाश्वसमुत्थापितं रजः किं कलुषयति ? ◯

(क) मनः (ख) मस्तकम् (ग) दृष्टिम् (घ) सत्यम्

(2) कुपिता बुद्धिः किं न पश्यति ? ◯

(क) मार्गम् (ख) परदोषम् (ग) आलोकम् (घ) आत्मदोषम्

(3) कुपितस्य स्वेदसलिलात् पूर्वं किं गलति ? ◯

(क) तपः (ख) कर्तव्यम् (ग) रागः (घ) अधरः

(4) कुपितस्य पूर्वम् अयशः .... , अनन्तरम् अधरः। ◯

(क) विमृशति (ख) स्फुरति (ग) कलुषयति (घ) निमज्जति

(5) 'शैलूष' शब्दस्य कः अर्थः ? ◯

(क) नर्तक (ख) नट (ग) गायक (घ) पर्वत

(6) वृत्तमुक्ता चित्तवृत्तिः कीदृशी इव ? ◯

(क) हारयष्टिः (ख) विषवल्ली (ग) दुष्टबुद्धिः (घ) अविद्या

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषयाम् उत्तरत ।

(1) कृतबुद्धयः कथं पश्यन्ति ?

(2) धर्मक्रोधयोः एकत्र वृत्तिः कीदृशी ?

(3) कोपकलुषिता मतिः किं न विमृशति ?

(4) मुनिवेषस्य का अनुचिता ?

(5) क्रोधान्धस्य किम् अन्धकारीभवति ?

(6) दुर्वासाः कीदृशेन चेतसा तापसाकल्पं वहति ?

3. समासप्रकारं लिखत ।

(1) मङ्गलपटहेन .... (2) साधुसेवितः ....

(3) कृतबुद्धयः .... (4) कोपकलुषिता ....

(5) धर्मक्रोधयोः .... (6) विषपादपस्य ....

4. सन्धिविच्छेदं कुरुत ।

(1) साधुसेवितोऽयम् ....

(2) चक्षुरीक्षते ....

(3) ततो भृकुटिः ....

(4) अन्ध एव ....

5. रेखाङ्कितानां पदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कदा, कस्य, कीदृशी, कथम्, कः)

(1) <u>पितामहः</u> सुधीरम् उवाच।

(2) <u>आरम्भे</u> तपो गलति।

(3) <u>कुपितस्य</u> मतिः कर्तव्यमकर्तव्यं न विमृशति।

(4) <u>कुपिता</u> बुद्धिः आत्मदोषं न पश्यति।

6. मातृभाषायाम् उत्तरत ।

(1) दुर्वासा ने किसे शाप दिया ? क्यों ?

(2) धर्म और क्रोध का साथ होना किसके समान है ?

(3) ब्रह्मा ने दुर्वासा की तुलना नट से क्यों की ?

(4) दुर्वासा के जटावल्कल किसके समान है ? क्यों ?

(5) क्षमा के विषय में ब्रह्मा के क्या विचार हैं ?

7. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(1) क्रोध की शारीरिक असर।

(2) ब्रह्मा के द्वारा दुर्वासा की निन्दा।

8. यथायोग्यं संयुज्य पूर्णं वाक्यं रचयत ।

क	ख
(1) आरम्भे तपो गलति	(1) अनन्तरम् अधरः।
(2) आदौ इन्द्रियाणि रागः समास्कन्दति	(2) पश्चात्स्वेदसलिलम्।
(3) प्रथमम् अन्धकारीभवति विद्या	(3) विमृशति मतिः।
(4) पूर्वम् अयशः स्फुरति	(4) चरमं चक्षुः।
	(5) ततो भ्रुकुटिः।

प्रवृत्ति

- क्रोध से दूर रहने का उपदेश देने वाली विविध सूक्तियों तथा कहावतों को एकत्र कीजिए।
- ऋषि दुर्वासा से संबंधित अन्य कथाएँ तथा जानकारियाँ प्राप्त कीजिए।

10. त्वमेका भवानि

संस्कृत साहित्य में स्तोत्रकाव्य की एक विशिष्ट परम्परा रही है। स्तुति करने के साधन रूपी पद्यों को स्तोत्र कहा जाता है। इस प्रकार के स्तोत्र कभी-कभी मुक्तक के रूप में एक-दो की संख्या में तो कभी चार, पाँच, छः, सात, आठ इत्यादि श्लोकों की संख्या में निबद्ध होते हैं। स्तोत्र साहित्य में आदिशंकराचार्य द्वारा रचित स्तोत्र सर्वाधिक प्रसिद्ध हुए हैं। इन्होंने कुल कितने स्तोत्रों की रचना की है, इसका निश्चित अनुमान नहीं किया जा सकता। बहुत से स्तोत्र इनके नाम से प्रसिद्ध हो गए हैं। उनके नाम से प्रसिद्ध एक-आठ श्लोक वाले स्तोत्र में से पाँच श्लोक पसन्द करके यहाँ प्रस्तुत किए गए हैं।

यहाँ जगदम्बा भवानी की स्तुति की गई है। स्तुति के प्रत्येक श्लोक में भक्त की अनन्य शरणागति और अबोध बालक की भक्ति का अनवरत दर्शन होता है। प्रस्तुत श्लोकों में किए गए वर्णन के अनुसार इन स्तोत्रों को गानेवाले व्यक्ति (भक्त) को अपने सांसारिक संबंधियों, जैसे कि माता-पिता, भाई-बहन, पुत्र-पुत्री या पति-पत्नी - में जरा सी भी रुचि नहीं है। उनके लिए तो माँ भवानी ही सर्वस्व हैं। अतः, शास्त्र, तप, तीर्थ, व्रत और उपवास जैसे स्थूल बाह्य कर्म-काण्डों की ओर भी रुचि नहीं है। उन्हें तो मात्र अपनी आराध्य देवी भवानी की शरण में रहना पसन्द है। उन्हें पूर्ण विश्वास है कि चाहे कैसी भी परिस्थिति हो माँ भवानी हमारी रक्षा करेंगी।

अच्छी तरह से गाए जा सकने वाले इस स्तोत्र के माध्यम से यह बोध ग्रहण करना चाहिए कि बाह्य कर्मकांड के अतिरिक्त अनन्य श्रद्धा और सादगी से भरपूर गुणात्मक जीवन जीना अति महत्त्वपूर्ण है। इस तरह जीने वाले व्यक्तियों की रक्षा माँ भवानी सदैव करती हैं।

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 1 ॥

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 2 ॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातः
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 3 ॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 4 ॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 5 ॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) तातः पिता **बन्धुः** भाई, सगे-सम्बंधी **भृत्यः** नौकर, सेवक, चाकर **विषादः** दुःख, अफसोस **प्रमादः** आलस **अनलः** अग्नि **लयः** तल्लीन होना, मिट जाना

(स्त्रीलिंग) जाया पत्नी **वृत्तिः** नौकरी, व्यवसाय **भवानी** पार्वती का एक नाम 'भव' अर्थात् शिव की पत्नी **मुक्तिः** मोक्ष (जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होना) **भक्तिः** भगवान की उपासना करने की प्रक्रिया (पुराण के अनुसार भक्ति के नौ प्रकार हैं।) **विपत्तिः** आपत्ति, मुसीबत

(नपुंसकलिंग) व्रतम् व्रत (संस्कृत में इस शब्द का प्रयोग पुल्लिंग में किया जाता है। नियमित रूप से किए जाने वाले पुण्यकर्म को और धर्म की भावना से अमुक कार्य न करने संबंधी स्वेच्छा से किए गए निश्चय को व्रत कहते हैं)। **अरण्यम्** वन, जंगल **शरण्यम्** आश्रयस्थान, शरण स्थल

विशेषण : अनाथः जिसका कोई नाथ या स्वामी (माता-पिता) न हो वह **दरिद्रः** निर्धन, गरीब **जरारोगयुक्तः** वृद्धावस्था रूप रोग से युक्त **महाक्षीणदीनः** खूब क्षीण-घिसा हुआ (दुर्बल) और कंगाल (दीन = कंगाल, डरपोक) **जाड्यवक्त्रः** जड़वत् मुखवाला **(अहम्) विपत्तौ प्रविष्टः (अहम्)** मुसीबत में प्रविष्ट, मुसीबत (आफत) में प्रवेश किया हुआ **प्रणष्टः (अहम्)** नष्ट हुआ (मैं)

अव्यय : कदाचित् कभी-कभी, कभी **वापि** और फिर

समास : ध्यानयोगम् (ध्यानस्य योगः, तम् - षष्ठी तत्पुरुष)। स्तोत्रमन्त्रम् (स्तोत्रम् च मन्त्रः च - स्तोत्रमन्त्रम् - समाहार द्वन्द्व)। न्यासयोगम् (न्यासस्य योगः, तम् - षष्ठी तत्पुरुष)। शत्रुमध्ये (शत्रूणां मध्यः, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष)। अनाथः (न विद्यते नाथः यस्य सः - बहुव्रीहि)। जरारोगयुक्तः (जरा च रोगः च (जरारोगौ - इतरेतर द्वन्द्व), जरारोगाभ्यां युक्तः - तृतीया तत्पुरुष)। महाक्षीणदीनः (क्षीणः च दीनः च (क्षीणदीनौ - इतरेतर द्वन्द्व), महान्तौ च तौ क्षीणदीनौ - कर्मधारय)। जाड्यवक्त्रः (जाड्यं वक्त्रं यस्य सः - बहुव्रीहि)।

विशेष

1. शब्दार्थ : न जानामि मैं नहीं जानता **ध्यानयोगम्** ध्यान-योग को (किसी देव या परब्रह्म की मानसिक चिन्तन प्रक्रिया को ध्यान योग कहा जाता है) **तन्त्रम्** तंत्र को, पूजा की एक प्रकार की पद्धति को (अति मानवीय शक्ति की प्राप्ति के लिए इस प्रकार की पूजा की जाती है।) **स्तोत्रमन्त्रम्** स्तोत्र और मन्त्र को (जिन पद्यों के माध्यम से स्तुति की जाती है उसे स्तुति कहा जाता है। इस प्रकार के पद्य लौकिक छन्दों में रचे जाते हैं। जब कि वेद में निरूपित इन पद्यों को मन्त्र कहा जाता है। ये मंत्र (ही) ऋषियों के दर्शन हैं।) **न्यासयोगम्** न्यास योग को (शरीर के विभिन्न अंगों में भिन्न-भिन्न देवताओं के मन्त्र पाठ के साथ ध्यान करने की प्रक्रिया को न्यासयोग कहा जाता है।) **मातः** हे माँ ! **मां प्रपाहि** मेरी रक्षा करो

2. सन्धि : तातो न (तातः न)। बन्धुर्न (बन्धुः न)। पुत्रो न (पुत्रः न)। भृत्यो न (भृत्यः न)। वृत्तिर्ममैव (वृत्तिः मम एव)। ममैव (मम एव)। गतिस्त्वम् (गतिः त्वम्)। चानले (च अनले)। अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो महाक्षीणदीनः (अनाथः दरिद्रः जरारोगयुक्तः महाक्षीणदीनः)। सदाऽहम् (सदा अहम्)।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) वृत्तिः शब्दस्य कः अर्थः ? ◯

(क) जीवनचर्या (ख) वर्तनम् (ग) प्रवृत्तिः (घ) निर्वृतिः

(2) कुत्र प्रविष्टस्य भक्तस्य भवानी एका एव गतिः वर्तते ? ◯

(क) व्रते (ख) वने (ग) विपत्तौ (घ) सर्वत्र

(3) भवानि इति .... पदम् अस्ति। ◯

(क) क्रियापदम् (ख) संबोधनपदम् (ग) कर्तृकारकम् (घ) कर्मकारकम्

(4) न जानामि .... लयं वा कदाचित्। ◯

(क) पूजाम् (ख) व्रतम् (ग) मुक्तिम् (घ) प्रलयम्

(5) गतिस्त्वं .... भवानि। ◯

(क) प्रपाहि (ख) वयम् (ग) त्वमेका (घ) भवान्

2. उदाहरणानुसारं परिचयं कारयत ।

पद	शब्द	लिङ्ग	विभक्ति-वचन
उदाहरणम् : विपत्तौ	विपत्ति	इकारान्त स्त्रीलिङ्ग	सप्तमी एकवचन
(1) पूजाम्	....	....	....
(2) वृत्तिः	....	....	....
(3) जले	....	....	....
(4) त्वम्	....	....	....
(5) व्रतम्	....	....	....

3. रेखाङ्कितपदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कुत्र, किम्, कः, का)

(1) अहं <u>ध्यानयोगं</u> न जानामि।

(2) मम <u>वृत्तिः</u> नास्ति।

(3) <u>अरण्ये</u> सदा मां प्रपाहि।

4. समासप्रकारं लिखत ।

(1) अनाथः .... (2) शत्रुमध्ये ....

(3) जाड्यवक्त्रः .... (4) ध्यानयोगम् ....

5. मातृभाषयाम् उत्तरं लिखत ।

(1) भक्त अपने किन स्वजनों को छोड़कर माता को अपनी एकमात्र गति मानते हैं ?

(2) भक्त क्या-क्या नहीं जानता ?

(3) किन परिस्थितियों में भक्त माता से रक्षा करने की प्रार्थना करता है ?

(4) अनाथो दरिद्रो.... श्लोक में भक्त ने अपने लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग किया है ?

6. श्लोकपूर्तिं कुरुत ।

(1) विवादे विषादे .... त्वमेका भवानि॥

(2) अनाथो दरिद्रो .... त्वमेका भवानि॥

प्रवृत्ति

- आदि शंकराचार्य रचित कोई अन्य स्तोत्र ढूँढ़कर पढ़िए।
- कक्षा में इस स्तोत्र का समूहगान कीजिए।

11. यस्य जननं तस्य मरणम्

कथा के माध्यम से उपदेश देने की परम्परा अति प्राचीन है। आज संस्कृत साहित्य के विषय में हमारे पास जो सूचनाएँ उपलब्ध हैं, उनके आधार पर विचार किया जाए, तो इस परम्परा का प्रारम्भ आर्यशूर की जातकमाला से माना जाता है। उसमें भगवान बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ कही गई है । पहले के अपने विविध जन्मों में बुद्ध ने कौन-से और किस तरह धर्म कार्य किए, इस विषय वस्तु को लक्ष्य में रखकर इन कथाओं की रचना की गई है। तत्पश्चात् संस्कृत साहित्य में अनेक कथा ग्रन्थ आए। आज भी इस कथा साहित्य में अनवरत वृद्धि हो रही है।

संस्कृत कथाओं की एक विशिष्टता यह भी है कि उनमें पात्रों के नामकरण, पात्रों के गुण और कर्म को व्यक्त करते हुए, पात्र के चरित्र का वर्णन करते हैं। प्रस्तुत कथा में जो दो पात्र लिए गए हैं, उनमें एक वित्तदास है और दूसरा पात्र कूटनाथ है। वित्तदास अर्थात् पैसों का गुलाम और कूटनाथ अर्थात् कूटनीति का स्वामी। वित्तदास अपने नाम के अनुरूप पैसों के गुलाम के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जबकि कूटनाथ अपने नाम के अनुरूप कूटनीति के द्वारा किसी को भी पाठ पढ़ाने में समर्थ पात्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

संस्कृत में एक सूक्ति है - लोभः पापस्य कारणम्। अर्थात् लोभ पाप का कारण है। लोभ अलग-अलग प्रकार के पाप करवा के किस तरह व्यक्ति को हानि पहुँचाता है, यह इस कथा के माध्यम से समझा जा सकता है। पाठ में निहित वाक्य रचना में विशेषण-विशेष्य का प्रयोग भी अच्छी तरह से जाना-समझा जा सकता है।

अस्ति वित्तदासो नाम प्रभूतलोभः समृद्धः कश्चित् वणिग्जनः। तस्य कूटनाथाभिधः वैश्यः प्रातिवेशिकः आसीत्।

एकदा कूटनाथेन चिन्तितं यदयं वित्तदासः धनिकोऽपि लुब्धो वर्तते। अतः केनापि उपायेन मया असौ वञ्चनीयः। एवं विचार्य सः कूटनाथः एकदा वित्तदासस्य गृहमुपगम्य अकथयत्, ''भोः श्रेष्ठिन्, अस्माकं बहवः कुटुम्बिजनाः श्वः अतिथयः भविष्यन्ति। तेषामर्थे भोजनादिनिर्माणाय कानिचित् पात्राणि कृपया मह्यं यच्छतु। परश्वः तानि प्रत्यर्पयिष्यामि।''

प्रातिवेशिकधर्मभावेन वित्तदासः कूटनाथाय पात्राणि प्रायच्छत्।

पात्रोपयोगावसाने कूटनाथः पात्राणि प्रत्यर्पयितुं वित्तदासस्य गृहमगच्छत्। तैः पात्रैः सह कूटनाथः अन्यानि कानिचित् लघूनि नूतनानि पात्राणि अपि तत्र स्थापितवान्। लघूनां नूतनानां पात्राणां दर्शनेन विस्मितः वित्तदासः कूटनाथमपृच्छत्, ''भो वयस्य ! एतानि पात्राणि मम न सन्ति।'' कूटनाथः अकथयत् ''मित्र ! यानि पात्राणि भवता

दत्तानि तानि मम गृहे रात्रौ प्रसूतानि। एतानि लघूनि नूतनानि पात्राणि भवतः पात्राणामपत्यानि सन्ति।''

अपत्यरूपेण नूतनानि पात्राणि सम्प्राप्य वित्तदासः प्रसन्नः जातः।

व्यतीतेषु कतिपयेषु दिवसेषु कूटनाथः पुनरपि वित्तदासं पात्रार्थं प्रार्थयत। प्रदतेभ्यः पात्रेभ्यः अपि अधिकानां पात्राणां लाभो भविष्यति इति दुर्मत्या प्रेरितो वित्तदासः तस्मै सर्वाणि इष्टानि पात्राणि दत्तवान्।

व्यतीतेऽपि एकमासे यदा कूटनाथः पात्राणि न प्रत्यर्पितवान् तदा चिन्तामापन्नः वित्तदासः कूटनाथगृहं गत्वा स्वकीयानि पात्राणि अयाचत। कूटनाथः सशोकम् अकथयत्, ''भवतः सर्वाणि पात्राणि मृतानि''।

वित्तदासः कोपाविष्टः सन् अकथयत् ''एवं कथं भवेत्। भो वञ्चक ! त्वं मिथ्या वदसि। निर्जीवानां पात्राणां मरणं कथं सम्भवति ?''

कूटनाथः धैर्यमवलम्ब्य शान्तवचसा अवदत्, ''महोदय ! यदि पात्राणां जन्म भवति, तर्हि तेषां मरणमपि भवति। पूर्वं जातानि पात्राणि भवतः गृहे विलसन्ति। यानि पात्राणि भवद्भिः दत्तानि तानि मम गृहे मृतानि। तत्र अहं किं कर्तुं समर्थः। पश्य,

जन्म भवति पात्राणां मरणे संशयः कथम् ।
जगति यत्समुत्पन्नं नश्यति सर्वथा ध्रुवम् ॥''

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) प्रातिवेशिक पड़ोसी **वैश्यः** वणिक, व्यापारी **धनिकः** धनवान, अमीर **अतिथिः** मेहमान (जिसके आने की तिथि निश्चित न हो, वह अर्थात् अतिथि) **वञ्चकः** ठग

(स्त्रीलिंग) मिथ्या झूठ, गलत **दुर्मतिः** खराब बुद्धि, गलत बुद्धि

सर्वनाम : मह्यम् मेरे लिए **तैः** (पुं. नपुं.) उनके द्वारा **अन्यानि** (नपुं.) अन्य सब, दूसरे **एतानि** (नपुं.) ये सब **भवता** आपके द्वारा **सर्वाणि** (नपुं.) सभी **यानि** (नपुं.) जो (बहुवचन)

विशेषण : प्रभूतलोभः समृद्धः कश्चित् (वणिग्जनः) खूब लोभी, समृद्धिशाली कोई एक व्यापारी **कूटनाथाभिधः यथार्थाभिधानः वैश्यः (प्रातिवेशकः)** कूटनाथ नाम का, नाम के अनुरूप, व्यापारी (पड़ोसी) **कानिचित् (पात्राणि)** कुछ (बर्तन) **तैः (पात्रैः)** उन पात्रों (बर्तनों) के द्वारा **अन्यानि कानिचित् लघूनि नूतनानि (पात्राणि)** कुछ अन्य,

छोटे, नये (बर्तन) **लघूनां नूतनानाम् (पात्राणाम्)** छोटे, नये (बर्तनों का) **स्वकीयानि (पात्राणि)** अपने (बर्तन) **अधिकानाम् (पात्राणाम्)** अधिक – ज्यादा (बर्तनों को) **सर्वाणि इष्टानि (पात्राणि)** सभी चाहे हुए पात्रों को **निर्जीवानाम् (पात्राणाम्)** निर्जीव (बर्तनों) का **जातानि (पात्राणि)** उत्पन्न हुए (बर्तन)

अव्यय : परश्वः परसों **पुनरपि** फिर से **कथम्** किस तरह, क्यों **हि** निश्चय का वाचक शब्द **सर्वथा** सभी प्रकार से **ध्रुवम्** निश्चित

समास : प्रभूतलोभः (प्रभूतः लोभः यस्य सः – बहुव्रीहि)। वणिग्जनः (वणिक् च असौ जनः – कर्मधारय)। कूटनाथाभिधः (कूटस्य नाथः (कूटनाथः, षष्ठी तत्पुरुष), कूटनाथः अभिधा यस्य सः – बहुव्रीहि)। यथार्थाभिधानः (यथार्थम् अभिधानं यस्य सः – बहुव्रीहि)। कुटुम्बिजनाः (कुटुम्बी च असौ जनः, ते – कर्मधारय)। अतिथिः (न विद्यते तिथिः यस्य सः – बहुव्रीहि)। भोजनादिनिर्माणाय (भोजनादीनां निर्माणाय – षष्ठी तत्पुरुष))। प्रातिवेशिकधर्मभावेन (प्रातिवेशिकस्य धर्मः (प्रातिवेशिकधर्मः, षष्ठी तत्पुरुष), प्रातिवेशिकधर्मस्य भावः, तेन – षष्ठी तत्पुरुष)। वित्तदासः (वित्तस्य दासः – षष्ठी तत्पुरुष)। कूटनाथः (कूटस्य नाथः – षष्ठी तत्पुरुष)। पात्रोपयोगावसाने (पात्राणाम् उपयोगः (पात्रोपयोगः, षष्ठी तत्पुरुष), पात्रोपयोगस्य अवसानम्, तस्मिन् – षष्ठी तत्पुरुष)। अपत्यरूपेण (अपत्यं रूपं यस्य सः, तेन – बहुव्रीहि)। एकमासे (एकः च असौ मासः, तस्मिन् – कर्मधारय)। कूटनाथगृहम् (कूटनाथस्य गृहम् – षष्ठी तत्पुरुष)। सशोकम् (शोकेन सहितं यथा स्यात् तथा – अव्ययीभाव)। कोपाविष्टः (कोपेन आविष्टः – तृतीया तत्पुरुष)। शान्तवचसा (शान्तम् च तद् वचः, तेन – कर्मधारय)।

कृदन्त : (सं.भू.कृ.) विचार्य सोच-विचार कर **उपगम्य** पास में जाकर **(क.भू.कृ.) चिन्तितम्** विचार किया **प्रेरितः** प्रेरित, प्रेरित किया हुआ **विस्मितः** आश्चर्यचकित, अचम्भित **जातः** हुआ, बना **दत्तवान्** दिया **प्रत्यर्पितवान्** वापस दिया **प्रसूतानि** जन्मा हुआ **(वि.कृ.) वञ्चनीयः** ठगना चाहिए, ठगने योग्य **(हे.कृ.) प्रत्यर्पयितुम्** वापस देने के लिए

क्रियापद : प्रथमगण (परस्मैपदी) **दा > यच्छ्** **(यच्छति)** देना **सम् + भू (संभवति)** होने की सम्भावना **वि + लस् (विलसति)** विलास करना, सुशोभित होना

(आत्मनेपदी) याच् **(याचते)** माँगना

दसवाँ गण (आत्मनेपदी) **प्र + अर्थ् (प्रार्थयते)** प्रार्थना करना, माँगना

विशेष

1. शब्दार्थ : प्रभूतलोभः खूब लोभी, अति लालची **भोजनादिनिर्माणाय** भोजन आदि बनाने के लिए **प्रत्यर्पयिष्यामि** वापस दे दूँगा **प्रातिवेशिकधर्मभावेन** पड़ोसी धर्म की भावना से **पात्रोपयोगावसाने** बर्तनों (पात्रों) का उपयोग पूरा हो जाने पर **तत्र स्थापितवान्** वहाँ रख दिया. **रात्रौ प्रसूतानि** रात में जन्मे हुए **अपत्यरूपेण** सन्तान रूप से **व्यतीतेषु कतिपयेषु (दिवसेषु)** कुछ दिन बीत जाने के बाद **व्यतीते अपि एकमासे** एक महीना बीत जाने के बाद भी **न प्रत्यर्पितवान्** वापस नहीं दिया **चिन्तामापन्नः** चिन्तित हुआ, चिन्तायुक्त बना **सशोकम्** शोक के साथ **कोपाविष्टः सन्** क्रोधित होकर, गुस्से से भरकर **एवं कथं भवेत्** ऐसा कैसे हुआ ? **भवतः गृहे विलसन्ति** आपके घर में सुशोभित है **जगति** संसार में **यत्समुत्पन्नम्** जिसने जन्म लिया है वह **नश्यति** विनाश पाता है

2. सन्धि : वित्तदासो नाम (वित्तदासः नाम)। धनिकोऽपि (धनिकः अपि)। लुब्धो वर्तते (लुब्धः वर्तते)। पुनरपि (पुनः अपि)। लाभो भविष्यति (लाभः भविष्यति)। व्यतीतेऽपि (व्यतीते अपि)। प्रेरितो वित्तदासः (प्रेरितः वित्तदासः)।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) वित्तदासः धनिकोऽपि कीदृशः आसीत् ? ◯

(क) सन्तुष्टः (ख) उदारः (ग) लुब्धः (घ) असन्तुष्टः

(2) कूटनाथस्य गृहे के अतिथयः भविष्यन्ति ? ◯

(क) कुटुम्बिजनाः (ख) प्रातिवेशिकाः (ग) साधवः (घ) ग्रामजनाः

(3) वित्तदासः कूटनाथाय केन भावेन पात्राणि प्रायच्छत् ? ◯

(क) मात्रधर्मभावेन (ख) दयाभावेन (ग) मित्रधर्मभावेन (घ) प्रातिवेशिकधर्मभावेन

(4) कूटनाथः कदा पात्राणि प्रत्यर्पयितुं वित्तदासस्य गृहम् अगच्छत् ? ◯

(क) भोजनावसाने (ख) पात्रोपयोगावसाने (ग) कार्यावसाने (घ) आगामिनि दिवसे

(5) किं सम्प्राप्य वित्तदासः विस्मितः अभवत् ? ◯

(क) पुरातनानि पात्राणि (ख) अर्वाचीनानि पात्राणि

(ग) नूतनानि पात्राणि (घ) गुरूणि पात्राणि

(6) भवतः सर्वाणि पात्राणि मृतानि। – एतत् वाक्यं कः वदति ? ◯

(क) कूटनाथः (ख) वित्तदासः (ग) कूटमतिः (घ) वित्तनाथः

2. अधोलिखितानां प्रश्नानां प्रकोष्ठगत शब्दस्य योग्यरूपेण उत्तरं लिखत ।

(1) अस्ति वित्तदासो नाम प्रभूतलोभः .... वणिग्जनः। (समृद्ध)

(2) कानिचित् लघूनि .... पात्राण्यपि तत्र स्थापितानि। (नूतन)

(3) .... कतिपयेषु दिवसेषु कूटनाथः पुनरपि वित्तदासं पात्रेभ्यः प्रार्थयते। (व्यतीत)

(4) तस्मै .... पात्राणि दत्तवान्। (सर्व, इष्ट)

(5) कूटनाथः .... अकथयत्। (सशोक)

3. एकवाक्येन संस्कृतभाषयां उत्तरत ।

(1) कूटनाथः किमर्थं पात्राणि अयाचत ?

(2) किं सम्प्राप्य वित्तदासः प्रसन्नः सञ्जातः ?

(3) कूटनाथगृहं गत्वा वित्तदासः किम् अयाचत ?

(4) निर्जीवानां पात्राणां किं न सम्भवति ?

(5) किं सर्वथा नश्यति ?

4. अधोलिखितानां पदानां कृदन्तप्रकारं लिखत ।

(1) लुब्धः .... (2) प्रत्यर्पयितुम् ....

(3) दत्तानि .... (4) वञ्चनीयः ....

(5) सम्प्राप्य .... (6) आपन्नः ....

4. सन्धिं प्रयोजयत ।

(1) वित्तदासः नाम ....

(2) कः चित् ....

(3) धनिकः अपि ....

(4) श्वः अतिथयः ....

(5) वित्तदासः तस्मै ....

5. रेखाङ्कितानां पदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कदा, कुत्र, कैः, कस्य, केषाम्, कः)

(1) पात्रैः सह अन्यानि पात्राणि स्थापितानि।

(2) पात्राणि रात्रौ प्रसूतानि।

(3) कूटनाथः पात्रेभ्यः प्रार्थयत।

(4) पात्राणि भवतः गृहे विलसन्ति।

(5) पात्राणां जन्म भवति।

6. सूचनानुसारं शब्दरूपं लिखत।

	शब्द	लिङ्ग	विभक्ति	वचन
उदाहरणम् – नूतनानि	नूतन	नपुंसकलिङ्गम्	प्रथमा-द्वितीया	बहुवचन
(1) पात्राणाम्	....	....	....	....
(2) उपायेन	....	....	....	....
(3) रात्रौ	....	....	....	....
(4) दिवसेषु	....	....	....	....
(5) मया	....	....	....	....

7. क्रियापदं वर्तमानकाले परिवर्त्य वाक्यं पुनः लिखत ।

(1) कूटनाथः वित्तदासम् अकथयत्।

(2) कुटुम्बिजनाः अतिथयः भविष्यन्ति।

(3) वित्तदासः कूटनाथाय पात्राणि प्रायच्छत्।

8. मातृभाषायाम् उत्तरत ।

(1) कूटनाथ ने वित्तदास को ठगने के लिए कौन-सी योजना बनाई ?

(2) वित्तदास ने कूटनाथ को दुबारा बर्तन क्यों दिए ?

प्रवृत्ति

- लालच के कारण होने वाली हानियों को बताने वाली अन्य कथाएँ एकत्र कीजिए।
- लोभ से सम्बन्धित अन्य भाषाओं में मिलने वाली कहावतों का संग्रह कीजिए।

●

12. कलिकालसर्वज्ञो हेमचन्द्राचार्यः

गुजरात के सांस्कृतिक इतिहास में कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य का नाम सुप्रसिद्ध है। विक्रम संवत् 1145 में कार्तिक पूर्णिमा के दिन अहमदाबाद जिले के धंधुका नामक गाँव में उनका जन्म हुआ था। उनका नाम चंगदेव रखा गया। चंगदेव ने मात्र आठ वर्ष की अवस्था में खंभात स्थित देवचंद्रसूरिजी महाराज से दीक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात् वे सोमचन्द्र के नाम से प्रसिद्ध हुए। तदुपरान्त मात्र इक्कीस वर्ष की अवस्था में उन्होंने सूरि-पद प्राप्त किया और हेमचन्द्रसूरि के नाम से पहचाने जाने लगे। तत्कालीन समाज में उपलब्ध सभी विद्याशाखाओं का उन्होंने अध्ययन किया, उसमें निपुणता प्राप्त की और स्वरचित कृतियों के माध्यम से भिन्न-भिन्न विद्याशाखाओं में अपना योगदान दिया। इस प्रकार ज्ञान के विस्तार और समृद्धि के कारण उन्हें 'कलिकालसर्वज्ञ' उपाधि से सम्मानित किया गया।

सिद्धराज जयसिंह ने मालवा के राजा भोज पर विजय प्राप्त की। वहाँ से वे खूब धन तथा उनका समृद्ध पुस्तकालय अपने साथ अणहिलपुर पाटन ले आए। उस समय उनका स्वागत करने के लिए विद्वानों का एक वृंद भी सम्मिलित था। इन विद्वान वृंदों के अग्रणी हेमचंद्रसूरि थे।

ऐसा कहा जाता है कि 'कीर्तिः यस्य सः जीवति।' अर्थात् जिसकी कीर्ति है, वह (मृत होने के उपरान्त भी) जीवित है। ऐसी कीर्ति लक्ष्मी से न मिलकर, सरस्वती से मिलती है। इस बात से विदित राजा सिद्धराज जयसिंह ने हेमचंद्राचार्य से विविध साहित्यिक रचनाएँ करने की प्रार्थना की। सविशेष आग्रह करके उन्होंने हेमचंद्राचार्यसूरि से संस्कृत-व्याकरण का एक अद्भुत ग्रंथ तैयार करवाया। यह ग्रन्थ सिद्धहैमशब्दानुशासन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। गुजरात के सांस्कृतिक इतिहास की इस घटना को ध्यान में रखकर प्रस्तुत पाठ तैयार किया गया है। यहाँ इस तथ्य को उजागर करने का प्रयास किया गया है कि अपनी कीर्ति को अक्षुण बनाए रखने की इच्छावाले प्रत्येक व्यक्ति को साहित्य की उपासना करनी चाहिए।

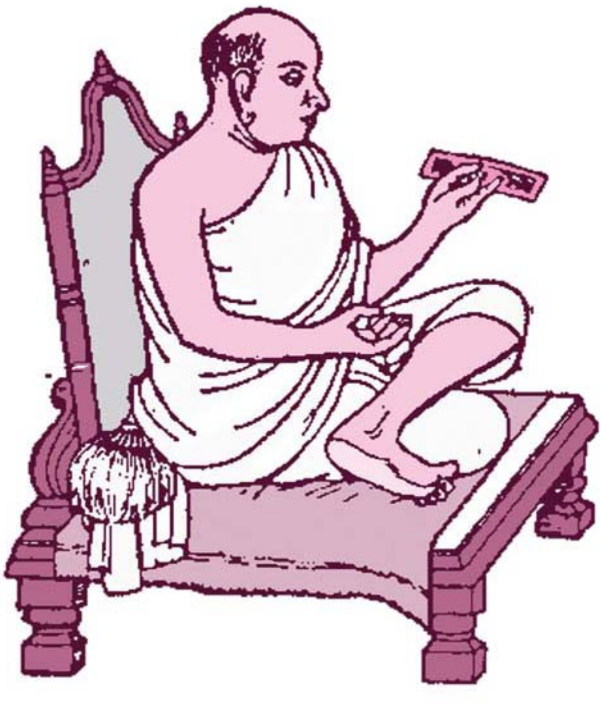

विक्रमस्य द्वादश्यां शताब्द्यां सिद्धराजः जयसिंहः मालवविजयं कृतवान्। विजयानन्तरं जयसिंहः नृपतेः यशोवर्मणः सर्वं धनं गृहीत्वा अणहिलपुरं प्रत्यागतवान्। धनेन सह तत्रत्यः ग्रन्थागारोऽपि तस्य हस्तगतो जातः। अस्मिन् ग्रन्थागारे बहवोऽनुपमाः ग्रन्थाः आसन्। तेषु भोजेन विरचितं सरस्वतीकण्ठाभरणनाम्ना प्रसिद्धं भोजव्याकरणमपि एकतमम् आसीत्।

एकदा सिद्धराजः विचारपथम् आरूढः। सः अचिन्तयत्, 'मालवविजयेन अहं धनस्य स्वामित्वं प्राप्तवान्। तस्य ग्रन्थागारः अपि मया प्राप्तः। परन्तु भोजव्याकरणेन भोजस्य यादृशी कीर्तिर्वर्तते तादृशी कीर्तिर्मया न प्राप्ता। अतः एतादृशं किमपि करणीयं येन मदीया कीर्तिरपि तादृशी भवेत् यादृशी भोजस्यास्ति।'

एवं विचार्य सः जैनमुनिमाचार्यं हेमचन्द्रं प्राप्तवान्, निवेदितवान् च, "अयि आचार्यवर्याः! भवन्तो भोजव्याकरणसदृशं एकं व्याकरणं विरचयन्तु, येन भवतां मम च अमरा कीर्तिभवेत्" इति।

सिद्धराजस्य जयसिंहस्य निवेदनेन प्रेरिताः हेमचन्द्राचार्याः एकमपूर्वं व्याकरणग्रन्थं रचितवन्तः। सः सिद्धहैमव्याकरणम् इति नाम्ना प्रसिद्धः अस्ति। अस्मिन् अष्टौ अध्यायाः सन्ति। तेषु प्रारम्भिकेषु षट्सु अध्यायेषु संस्कृतभाषायाः अन्तिमयोः द्वयोः अध्याययोः प्राकृतभाषाणाञ्च व्याकरणमप्यस्ति।

हेमचन्द्राचार्यैः लक्षश्लोकपरिमितं साहित्यं विरचितमस्ति। अस्मिन् साहित्ये 'अभिधानचिन्तामणिः' नामकः कोषग्रन्थः, 'चालुक्यवंशोत्कीर्तनम्' नामकं संस्कृत-प्राकृतभाषानिबद्धं द्व्याश्रयं महाकाव्यम्, 'काव्यानुशासनम्' नामकः अलंकारशास्त्रीयः ग्रन्थः, 'छन्दोऽनुशासन' ञ्चेत्यादीनां बहूनां ग्रन्थानां समावेशो भवति।

गुर्जरप्रदेशे लब्धजनिरयं हेमचन्द्राचार्यः न केवलं गुर्जरप्रान्तेऽपि तु समग्रेऽपि संस्कृतसाहित्याकाशे सूर्यवत् प्रकाशते।

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) विक्रमः सम्राट विक्रमादित्य (जो आज से लगभग 2070 वर्ष पहले हुए थे।) **ग्रन्थागारः** पुस्तकालय, ग्रंथभंडार **सिद्धराजः** सिद्धराज जयसिंह, अणहिलवाड का राजा **कोषग्रन्थः** शब्दकोष

(स्त्रीलिंग) शताब्दी सौ वर्षों का समूह, एक सौ वर्ष **कीर्तिः** यश, ख्याति **प्राकृतभाषा** संस्कृत नाटकों में कुछ पात्रों द्वारा बोली जानेवाली अलग-अलग प्रादेशिक भाषा (सौरसेनी, अपभ्रंश, मागधी, महाराष्ट्री इत्यादि) जैन ग्रन्थों की भाषा

(नपुंसकलिंग) अणहिलपुरम् पाटन (उ. गुज.) का प्राचीन नाम

सर्वनाम : अस्मिन् (पुं. नपुं.) इसमें **तेषु (पुं. नपुं.)** उसमें (बहुवचन) **भवताम् (पुं. ब. व.)** आपकी

विशेषण : द्वादश्याम् (शताब्द्याम्) बारहवीं सदी में **बहवः अनुपमाः (ग्रन्थाः)** अनेक अनुपम ग्रंथ (बहुवचन) **मदीया (कीर्तिः)** मेरी कीर्ति **अमरा (कीर्तिः)** अमर कीर्ति **अष्टौ (अध्यायाः)** आठ (अध्याय) **प्रारम्भिकेषु षट्सु (अध्यायेषु)** प्रारम्भ के छः (अध्यायों) में **अन्तिमयोः द्वयोः (अध्याययोः)** अन्तिम दो (अध्यायों) में **लक्षश्लोकपरिमितम् (साहित्यम्)** एक लाख श्लोक के माप (परिणाम) वाला साहित्य **अभिधानचिन्तामणिः नामकः (कोषग्रन्थः)** अभिधान चिन्तामणि नामक (शब्दकोष) **चालुक्यवंशोकीर्तनम् नामकं द्व्याश्रयम् (महाकाव्यम्)** चालुक्यवंशोकीर्तनम् नामक द्रव्याश्रय (महाकाव्य) **काव्यानुशासनम् नामकः अलंकारशास्त्रीयः (ग्रन्थः)** काव्यानुशासन नामक अलंकार शास्त्र का (ग्रन्थ) **बहूनाम् (ग्रन्थानाम्)** अनेक ग्रन्थों का

अव्यय : अपि भी **एकदा** एकबार **एवम्** ऐसा **सूर्यवत्** सूर्य की तरह यादृशी, जैसी तादृशी वैसी

कृदन्त : (सं.भू.कृ.) आनीय लाकर **विचार्य** सोच-विचार कर **(कर्तरि भू.कृ.) कृतवान्** किया **प्रत्यागतवान्** वापस आया **प्राप्तवान्** प्राप्त किया **गतवान्** गया **निवेदितवान्** निवेदित किया **रचितवन्तः** रचना की (बहुवचन) **(क.भू.कृ.) जातः** हुआ **विरचितम्** बनाया, रचना की **आरूढः** सवार हुए, चढ़े **प्राप्तः** प्राप्त किया, ले लिया **प्राप्ता** प्राप्त किया

समास : मालवविजयम् (मालवानां विजयः, तम् - षष्ठी तत्पुरुष)। ग्रन्थागारः (ग्रन्थानाम् आगारः - षष्ठी तत्पुरुष)। हस्तगतः (हस्तं गतः - द्वितीया तत्पुरुष)। अनुपमाः (न विद्यते उपमा यस्य सः अनुपमः, ते-बहुव्रीहि)। विचारपथम् (विचारस्य पन्थाः, तम् - षष्ठी तत्पुरुष)। व्याकरणग्रन्थम् (व्याकरणस्य ग्रन्थः, तम् - षष्ठी तत्पुरुष)। लब्धजनिः (लब्धा जनिः येन सः - बहुव्रीहि)। संस्कृतसाहित्याकाशे (संस्कृतसाहित्यस्य आकाशः, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष)।

क्रियापद : प्रथम गण (आत्मनेपद) वृत् (वर्तते) होना

(आत्मनेपद) प्र + काश् (प्रकाशते) प्रकाशित होना, चमकना

दसवाँ गण (परस्मैपदी) वि + रच् (विरचयति) रचना करना, बनाना

विशेष

1. शब्दार्थ : विजयानन्तरम् विजय प्राप्त करने के बाद, विजय प्राप्त करने के उपरान्त **तत्रत्यः** वहाँ का **हस्तगतो जातः** हाथ में आ गया **सरस्वतीकण्ठाभरणनाम्ना प्रसिद्धम्** सरस्वती कंठाभरण (आभरण, अलंकार गहना) के नाम से प्रसिद्ध **भोजव्याकरणमपि** राजा भोज द्वारा रचित व्याकरण भी **धनस्य स्वामित्वम्** धन के

स्वामित्व को, धन पर अधिकार रखने को **एवम् विचार्य** ऐसा विचार करके **अयि आचार्यवर्या:** आदरणीय आचार्य महोदय **प्रेरिता:** प्रेरित किया, प्रेरणा दी **एकम् अपूर्वम्** एक अपूर्व, पहले कभी न देखा हो ऐसा **सिद्धहैमव्याकरणम् इति नाम्ना** सिद्धहैमव्याकरण इस नाम (से) **लक्षश्लोकपरिमितम्** एक लाख श्लोक के प्रमाण में (बत्तीस अक्षरों को एक श्लोक कहा जाता है।) **चालुक्यवंशोत्कीर्तनं नामकं द्व्याश्रयं महाकाव्यम्** चालुक्यवंशोत्कीर्तन नामक (एक ही श्लोक में एक तरफ व्याकरण के उदाहरण दिए गए हैं और दूसरी ओर अपनी कथावस्तु को गति दी गई है, ऐसा) दोनों का आश्रय लेकर रचा गया महाकाव्य **गुर्जरप्रदेशे** गुजरात प्रदेश में **लब्धजनि:** लिया है जन्म जिसने ऐसा **संस्कृतसाहित्याकाशे** संस्कृत साहित्यरूपी आकाश में **सूर्यवत् प्रकाशते** सूर्य की तरह प्रकाशमान है

2. सन्धि : ग्रन्थागारोऽपि (ग्रन्थागार: अपि)। हस्तगतो जात: (हस्तगत: जात:)। बहवोऽनुपमा: (बहव: अनुपमा:)। कीर्तिर्वर्तते (कीर्ति: वर्तते)। कीर्तिर्मया (कीर्ति: मया)। कीर्तिरपि (कीर्ति: अपि)। भोजस्यास्ति (भोजस्य अस्ति)। भवन्तो भोजव्याकरणस्य (भवन्त: भोजव्याकरणस्य)। कीर्तिर्भवेत् (कीर्ति: भवेत्)। प्राकृतभाषाणाञ्च (प्राकृतभाषाणां च)। छन्दोऽनुशासनञ्चेत्यादीनाम् (छन्द: अनुशासनं च इत्यादीनाम्)। समावेशो भवति (समावेश: भवति)। लब्धजनिरयम् (लब्धजनि: अयम्)। गुर्जरप्रान्तेऽपि (गुर्जरप्रान्ते अपि)। समग्रेऽपि (समग्रे अपि)।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्य: विकल्पेभ्य: समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) सिद्धराज: जयसिंह: मालवविजयं कदा कृतवान्। ◯

(क) द्वादश्यां शताब्द्याम् (ख) विंशतितमायां शताब्द्याम्
(ग) एकविंशतितमायां शताब्द्याम् (घ) एकादश्यां शताब्द्याम्

(2) सरस्वतीकण्ठाभरणनाम्ना प्रसिद्धं व्याकरणं केन विरचितम् अस्ति ? ◯

(क) जयसिंहेन (ख) हेमचन्द्रेण (ग) भोजेन (घ) यशोवर्मणा

(3) भोजस्य कीर्ति: केन आसीत् ? ◯

(क) भोजव्याकरणेन (ख) दयाभावेन (ग) न्यायेन (घ) भोजसाहित्येन

(4) हेमचन्द्राचार्येण रचितं व्याकरणं केन नाम्ना प्रसिद्धमस्ति ? ◯

(क) प्राकृतव्याकरणम् (ख) जैनव्याकरणम्
(ग) सिद्धहैमव्याकरणम् (घ) सिद्धव्याकरणम्

(5) सिद्धहैमव्याकरणे कति अध्याया: सन्ति ? ◯

(क) षड् (ख) दश (ग) अष्टौ (घ) सप्त

(6) हेमचन्द्राचार्येण रचितं साहित्यं .... वर्तते। ◯

(क) दशसहस्रश्लोकपरिमितम् (ख) लक्षश्लोकपरिमितम्
(ग) सहस्रश्लोकपरिमितम् (घ) दशलक्षश्लोकपरिमितम्

(7) हेमचन्द्राचार्येण विरचितस्य कोषग्रन्थस्य नाम किमस्ति ? ◯

(क) भट्टिकाव्यम् (ख) अभिधानचिन्तामणि:
(ग) काव्यालंकार: (घ) अमरकोष:

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषया उत्तरत ।

(1) जयसिंहः कं नृपतिं पराजितवान् ?

(2) भोजेन विरचितं व्याकरणं केन नाम्ना प्रसिद्धमस्ति ?

(3) कस्य निवेदनेन प्रेरिताः हेमचन्द्राचार्याः व्याकरणग्रन्थं रचितवन्तः ?

(4) सिद्धहैमव्याकरणस्य षट्सु अध्यायेषु कस्य व्याकरणं वर्तते ?

(5) हेमचन्द्राचार्येण रचितस्य अलंकारशास्त्रीयस्य ग्रन्थस्य नाम किमस्ति ?

3. सन्धिविच्छेदं कुरुत ।

(1) ग्रन्थागारोऽपि ....

(2) कीर्तिर्वर्तते ....

(3) व्याकरणमप्यस्ति ....

(4) प्राकृतभाषाणाञ्च ....

(5) लब्धजनिरयम् ....

4. रेखाङ्कितपदानां स्थाने कर्तरि भूतकृदन्तस्य योग्यं रूपं लिखत ।

(1) विजयानन्तरं जयसिंहः अणहिलपुरं <u>प्रत्यागच्छत्</u>।

(2) एकदा सिद्धराजः <u>अचिन्तयत्</u>।

(3) सः हेमचन्द्रस्य समीपम् <u>अगच्छत्</u>।

(4) हेमचन्द्राचार्याः व्याकरणग्रन्थम् <u>अरचयन्</u>।

(5) सः लक्षश्लोकपरिमितं साहित्यं <u>अरचयत्</u>।

5. सूचनानुसारं शब्दरूपाणां परिचयं कारयत ।

	शब्दः	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
उदाहरणम् – विक्रमस्य	विक्रम	पुंल्लिंग	षष्ठी	एकवचन
(1) शताब्द्याम्	....	....	....	....
(2) नृपतेः	....	....	....	....
(3) धनेन	....	....	....	....
(4) ग्रन्थागारे	....	....	....	....
(5) ग्रन्थानाम्	....	....	....	....
(6) आचार्यवर्याः	....	....	....	....

6. कोष्ठगतपदानि प्रयुज्य वाक्यानि रचयत ।

(1) अभिधान चिन्तामणि एक कोषग्रंथ है।
(अभिधानचिन्तामणि एक कोषग्रन्थ अस्)

(2) हेमचन्द्राचार्य ने एक महाकाव्य की रचना की ।
(हेमचन्द्राचार्य एक महाकाव्य रच्)

(3) जयसिंह अणहिलपुर वापस आए।
(जयसिंह अणहिलपुर प्रति + आ + गम् (कर्तरि भू.कृ. (क्तवतु))

(4) सिद्धहैमशब्दानुशासन में आठ अध्याय हैं।
(सिद्धहैमशब्दानुशासन अष्टन् अध्याय अस्)

(5) जयसिंह ने एकबार विचार किया।
(जयसिंह एकदा विचार कृ (क.भू.कृ. (क्त))

7. मातृभाषया उत्तरत ।

(1) सिद्धराज जयसिंह ने कब मालव विजय किया था ?

(2) मालव विजय से जयसिंह को क्या-क्या प्राप्त हुआ ?

(3) भोज की ख्याति किस कारण थी ?

(4) हेमचन्द्राचार्य द्वारा रचित साहित्य का प्रमाण कितना है ?

8. क-विभागं ख-विभागेन सह संयोजयत ।

क	ख
(1) काव्यानुशासनम्	(1) अन्तिमयोः अध्याययोः
(2) प्राकृतभाषायाः व्याकरणम्	(2) कोषग्रन्थः
(3) अभिधानचिन्तामणिः	(3) जयसिंहः
(4) मालवविजयः	(4) अलंकारशास्त्रीयः ग्रन्थः
(5) सरस्वतीकण्ठाभरणम्	(5) भोजराजः
	(6) शिक्षाशास्त्रम्

प्रवृत्ति

- आचार्य हेमचन्द्र का साहित्य ढूँढ़कर पढ़िए।
- हेमचन्द्राचार्य द्वारा रचित संस्कृत साहित्य की सूची बनाइए।

13. गीतामृतम्

श्रीमद् भगवत्गीता महाभारत के भीष्मपर्व का एक अंश है। उसमें कुल अट्ठारह अध्याय और लगभग सात सौ श्लोक हैं। कुरुक्षेत्र के मैदान में पांडवों और कौरवों के मध्य महायुद्ध हुआ। शत्रु पक्ष में स्थित अर्जुन को अपने ही मित्रों और स्वजनों से युद्ध करना था। यह देखकर उन्हें मोह उत्पन्न होता है और वे विषादग्रस्त हो जाते हैं। स्वजनों के साथ होनेवाले युद्ध के विनाशक परिणाम से डरकर अर्जुन युद्ध न करने का संकल्प करते हैं।

इस स्थिति में अर्जुन के सारथी श्रीकृष्ण उन्हें कर्तव्य और अकर्तव्य का उपदेश देते हैं। श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया यह उपदेश 'गीता' के नाम से सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। उस समय अर्जुन को दिया गया यह उपदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण है। संसार के तत्त्वज्ञान के ग्रन्थों में गीता शीर्ष स्थान पर है।

फल की अपेक्षा किए बिना यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्य कर्म में लगा रहे तो इस संसार में चारों ओर सुख ही सुख फैल जाए। 'फल की अपेक्षा किए बिना कर्म करना' यह गीता का केन्द्रवर्ती उपदेश है। प्रस्तुत पाठ में गीता के आठ श्लोक पसन्द किए गए हैं। इन श्लोकों में क्रमशः आत्मा की अमरता, जन्म-मरण की अनिवार्यता, कर्मयोग का स्वरूप, ज्ञान की महिमा, भक्त के प्रकार तथा स्वभाव और सात्विक बुद्धि का स्वरूप - इन बातों का निरूपण किया गया है। व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करने के लिए ये सभी बातें अति महत्त्वपूर्ण हैं।

न जायते म्रियते वा कदाचि -
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ 1 ॥ (2. 20)

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ 2 ॥ (2. 27)

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥ 3 ॥ (2. 39)

श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥ 4 ॥ (4. 39)

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥ 5 ॥ (7. 16)

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैः मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥ 6 ॥ (12. 15)

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये।
बन्धं मोक्षं च यो वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥ 7 ॥ (18. 30)

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) लोकः लोक, संसार के सभी प्राणी **पार्थः** अर्जुन (कुन्ती का एक नाम पृथा है। पृथा के पुत्र होने के कारण अर्जुन को पार्थ भी कहा जाता है।) **सङ्गः** आसक्ति, मोह

(स्त्रीलिंग) प्रवृत्तिः किसी काम में लगना, व्यवहार में सक्रिय रहना **निवृत्तिः** प्रवृत्त हों ऐसे काम में से (दूर) हट जाना, व्यवहार में निष्क्रिय हो जाना

विशेषण : अजः जन्म न लेने वाला, अजन्मा **नित्यः** हमेशा, सदैव तीनों काल में जिसका अस्तित्व रहता है वह (आत्मा) **शाश्वतः** सनातन, सदैव रहने वाला **पुराणः** पुरानी – अनादि ऐसी (आत्मा) **हन्यमाने (शरीरे)** नश्वर शरीर में, नष्ट हो जानेवाले शरीर में **ध्रुवः (मृत्युः)** निश्चित ऐसा (मृत्यु) **ध्रुवम् (जन्म)** निश्चित जन्म **पराम् (शान्तिम्)** परम शान्ति को **आर्तः** दु:खी **सात्त्विकी (बुद्धिः)** सतोगुण धारण करने वाली बुद्धि, उत्तम बुद्धि (बुद्धि के अन्य दो प्रकार – राजसी और तामसी है।)

अव्यय : भूयः फिर, पुनः **कदाचन** कभी

समास : गीतामृतम् (गीतायाः अमृतम् – षष्ठी तत्पुरुष)। अपरिहार्ये (न परिहार्यम्, तस्मिन् – नञ् तत्पुरुष)। कर्मफलहेतुः (कर्मणः फलम्, कर्मफलम्, (षष्ठी तत्पुरुष) कर्मफलस्य हेतुः – षष्ठी तत्पुरुष)। अकर्मणि (न कर्म, अकर्म, तस्मिन् – नञ् तत्पुरुष)। संयतेन्द्रियः (संयतानि इन्द्रियाणि यस्य सः – बहुव्रीहि)। हर्षामर्षभयोद्वेगैः (हर्षः च अमर्षः च भयम् च उद्वेगः च इति हर्षामर्षभयोद्वेगाः, तैः हर्षामर्षभयोद्वेगैः – इतरेतर द्वन्द्व)। कार्याकार्ये (कार्यम् च अकार्यं च, कार्याकार्ये – इतरेतर द्वन्द्व)। भयाभये (भयं च अभयं च – इतरेतर द्वन्द्व)।

कृदन्त : (सं.भू.कृ.) भूत्वा होकर, बनकर **लब्ध्वा** प्राप्त करके **(हे.कृ) शोचितुम्** शोक करने के लिए

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपदी) अधि + गम् > गच्छ (अधिगच्छति) पाना, जाना, पहुँचना (आत्मनेपदी) **लभ् (लभते)** प्राप्त करना **भज् (भजते)** सेवा करना **उद् + विज् (उद्विजते)** उद्विग्न होना, बेचैन होना

विशेष

1. शब्दार्थ : न जायते जन्म नहीं लेता, **म्रियते न** मरता नहीं, मृत्यु को प्राप्त नहीं होता **भविता वा न भूयः** फिर होगा या फिर होनेवाला है ऐसा भी नहीं **न हन्यते** मरता नहीं है **हन्यमाने शरीरे** जब नश्वर शरीर मरता है तब, नष्ट होनेवाला शरीर नष्ट होता है तब **जातस्य** उत्पन्न हुए को, पैदा हुए को **अपरिहार्ये अर्थे** टाली नहीं जा सकती, रोकी नहीं जा सकती ऐसी बात में **मा कर्मफलहेतुः भूः** कर्म के फल की इच्छावाला बनना नहीं (कर्म के फल की प्राप्ति को, तुम कर्म करने का प्रयोजन मत मानना) **अकर्मणि ते सङ्गः मा अस्तु** कर्म के अभाव में, कर्म न करने में तुम्हारा संग न हो **तत्परः** उसके बाद, उससे आगे **संयतेन्द्रियः** वश में है इन्द्रियाँ जिसकी, वह **चतुर्विधाः** चार प्रकार के **सुकृतिनः** अच्छे काम करने वाले, पुण्यशाली व्यक्ति (अच्छे काम करने से ही व्यक्ति सुकृति बनता है।) **आर्तः** दुःखी (जब किसी कारण वश कोई दुःखी व्यक्ति भगवान का भजन करता है तो उसे आर्त प्रकार का भक्त कहा जाता है।) **जिज्ञासुः** (ईश्वर के स्वरूप को) जानने की इच्छावाला (जो भक्त अन्य किसी सांसारिक वस्तु को प्राप्त करने की कामना न रखते हुए सिर्फ एक मात्र ईश्वर के रूप को जानने की कल्पना रखता हो, उसे जिज्ञासु भक्त कहा जाता है।) **अर्थार्थी** सांसारिक पदार्थों की कामना करनेवाला (धन, पद या पुत्र इत्यादि जैसे सांसारिक पदार्थों को प्राप्त करने की कामना से भगवान की भक्ति करने वाला अर्थार्थी भक्त है।) **ज्ञानी** ज्ञानी, ज्ञान सम्पन्न विद्वान (जिसे सांसारिक नश्वरता का और आत्मा की अमरता का तथा ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान हो गया है, उस भक्त को ज्ञानी भक्त कहा जाता है।) **भरतर्षभ** हे उत्तम भरतवंशी राजा ! (अर्जुन का जन्म भरत के वंश में हुआ है) **न उद्विजते** (जिससे कोई) संताप प्राप्त नहीं होता **न उद्विजते च यः** और जो अपने आप भी (अन्य प्राणियों से) संताप या उद्वेग प्राप्त नहीं करता **हर्षामर्षभयोद्वेगैः** हर्ष (अर्थात् अनुकूल परिस्थिति में हर्ष का अनुभव करते रहने की क्रिया (वृत्ति), अमर्ष (अर्थात् दूसरों के सुख को सहन न करने की वृत्ति), भय (डर जाने की वृत्ति) और उद्वेग (निरन्तर उद्विग्न (खिन्न) रहने की वृत्ति) से **मुक्तः** मुक्त हुआ, छूटा हुआ **कार्याकार्ये** कर्तव्य और अकर्तव्य में **भयाभये** भय और अभय में **बन्धनं मोक्षं च** बंधन और मोक्ष को **वेत्ति** जानता है **सात्त्विकी** सात्विक है, सतोगुण से उत्पन्न हुई – निकली हुई

2. सन्धि : नायम् (न अयम्)। अजो नित्यः (अजः नित्यः)। शाश्वतोऽयम् (शाश्वतः अयम्)। पुराणो न (पुराणः न)। ध्रुवो मृत्युः (ध्रुवः मृत्युः)। तस्मादपरिहार्येऽर्थे (तस्मात् अपरिहार्ये अर्थे)। कर्मण्येवाधिकारस्ते (कर्मणि एव अधिकारः ते)। कर्मफलहेतुर्भूः (कर्मफलहेतुः भूः)। सङ्गोऽस्त्वकर्मणि (सङ्गः अस्तु अकर्मणि)। शान्तिमचिरेणाधिगच्छति (शान्तिम् अचिरेण अधिगच्छति)। सुकृतिनोऽर्जुन (सुकृतिनः अर्जुन)। आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी (आर्तः जिज्ञासुः अर्थार्थी)। यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते (यस्मात् न उद्विजते लोकः लोकात् न उद्विजते)। मुक्तो यः (मुक्तः यः)। स च (सः च)। यो वेत्ति (यः वेत्ति)।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) कः न जायते म्रियते वा कदाचित् ? ◯

(क) मनुष्यः (ख) भक्तः (ग) आत्मा (घ) देहः

(2) कस्य मृत्युः ध्रुवः ? ◯

(क) पदार्थस्य (ख) जातस्य (ग) धनस्य (घ) आत्मनः

(3) कस्मिन् अर्थे त्वं न शोचितुमर्हसि ? ◯

(क) अपरिहार्ये (ख) परिहार्ये (ग) मरणे (घ) दुःखे

(4) कस्मिन् ते सङ्गः न स्यात् ? ◯

(क) कर्मणि (ख) अकर्मणि (ग) ज्ञाने (घ) धने

(5) ज्ञानं कः लभते ? ◯

(क) भक्तिमान् (ख) गुणवान् (ग) श्रद्धावान् (घ) धनवान्

(6) कतिविधाः भक्ताः भवन्ति ? ◯

(क) चतुर्विधाः (ख) द्वाविधौ (ग) त्रिविधाः (घ) एकविधः

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषयाम् उत्तरत ।

(1) अजः नित्यः शाश्वतः पुराणः कः ?

(2) मृतस्य किं ध्रुवम् ?

(3) कस्मिन् ते अधिकारः अस्ति ?

(4) कदा शान्तिम् अधिगच्छति ?

(5) कः भक्तः भगवतः प्रियः ?

3. वचनानुसारं शब्दरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
(1)	शरीरे	....	....
(2)	....	....	जनाः
(3)	लोकात्	....	....
(4)	प्रवृत्तिः	....	....

4. रिक्तस्थानानां पूर्तिः विधेया ।

(1) न .... म्रियते वा कदाचित् आत्मा।

(2) कर्मण्येवाधिकारस्ते मा .... कदाचन।

(3) आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी .... च भरतर्षभ।

(4) बन्धं मोक्षं च यो वेत्ति सा .... सात्त्विकी।

5. रेखाङ्कितपदानां स्थाने प्रश्नवाचकं पदं लिखित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत।

(कम्, कीदृशे, किम्, कीदृशी, कस्य)

(1) आत्मा हन्यमाने शरीरे न हन्यते।

(2) ज्ञानं लब्धा शान्तिम् अधिगच्छति।

(3) सुकृतिनः जनाः मां भजन्ते।

(4) सा बुद्धिः सात्त्विकी वर्तते।

6. सन्धिविच्छेदं कुरुत ।

(1) अजो नित्यः। ....

(2) शाश्वतोऽयम्। ....

(3) कर्मण्येवाधिकारस्ते। ....

(4) सङ्गोऽस्त्वकर्मणि। ....

7. समासप्रकारं लिखत ।

(1) गीतामृतम् ....

(2) अपरिहार्ये। ....

(3) संयतेन्द्रियः। ....

(4) हर्षामर्षभयोद्वेगाः ....

(5) भयाभये। ....

8. अधस्तनयोः श्लोकयोः पूर्तिं कुरुत ।

(1) जातस्य हि .... शोचितुमर्हसि॥

(2) यस्मान्नोद्विजते .... मे प्रियः॥

9. अर्थविस्तारं कुरुत ।

(1) कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

(2) श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥

(3) चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥

प्रवृत्ति

- भगवत् गीता का हिन्दी अनुवाद प्राप्त करके पढ़िए।
- गीता के अपने मनपसन्द अन्य तीन श्लोक लिखिए और उनका अनुवाद कीजिए।

14. क इदं दुष्करं कुर्यात्

ई.स. पूर्व चौथी शताब्दी में मगध में नंदवंश का राज्य था। मगध की राजधानी पाटलिपुत्र में जन्म लेनेवाले विष्णुगुप्त ने नंद के अत्याचारी शासन का अन्त किया। ये विष्णुगुप्त तक्षशिला विद्यापीठ में राजनीतिशास्त्र के आचार्य थे। व्यवसाय से शिक्षक, ऐसे उस राजनीतिशास्त्र के पंडित ने खंडित राज्यों को अखंड बनाने के लिए तथा अत्याचार से पीड़ित प्रजा को अत्याचार से मुक्ति दिलाने के लिए सक्रिय राजनीति करते हुए नंदवंश के अत्याचारी शासन का अन्त किया। सामान्य परिवार में जन्म लेनेवाले चन्द्रगुप्त नामक बालक को आचार्य कौटिल्य ने राजनीति का पाठ पढ़ाया। अपनी अति कठिन परीक्षा को उतीर्ण करनेवाले इस सुयोग्य शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य को मगध के राजसिंहासन पर राजा के रूप में स्थापित किया। इस ऐतिहासिक घटना को कथावस्तु बनाकर, विक्रम की सातवीं से नवीं शताब्दी के बीच हुए विशाखदत्त नामक संस्कृत कवि ने मुद्राराक्षस नामक एक नाटक रचा है। सात अंक वाले इस नाटक के प्रथम अंक में से यह दृश्य पसंद कर, उसे सम्पादित कर पाठ के रूप में यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

नंदराजा का राक्षस नामक एक आमात्य था। वह अति सज्जन, वफादार और प्रजावत्सल था। नंदवंश के राज्य का अन्त होते ही अमात्य राक्षस स्वयं पदभ्रष्ट हो जाते हैं। साथ ही छदम् वेश धारण कर अपरिचित स्थान पर चले जाते हैं। अपने कर्तव्य और देशहित के लिए प्रसिद्ध अति निष्ठावान इस अमात्य को आचार्य चाणक्य अपने पक्ष में सम्मिलित कर, मगध में नव प्रस्थापित चन्द्रगुप्त के अमात्य के रूप में नियुक्त करना चाहते हैं। अतः उनका (राक्षस का) मन (विचार) जानने के लिए आचार्य चन्दनदास नामक श्रेष्ठी को बुलाते हैं। चन्दनदास अमात्य राक्षस का अन्तरंग मित्र था। उन्होंने अमात्य राक्षस के परिवार को गुप्त रूप से अपने घर संरक्षण प्रदान किया था। चाणक्य को जब इस तथ्य का पता चलता है तब वे चन्दनदास को बुलाते हैं और अमात्य राक्षस से मिलने (मिलवाने) की इच्छा प्रकट करते हैं। प्रस्तुत पाठ में इसी संदर्भ में चाणक्य और चन्दनदास के साथ हुए संवाद को प्रस्तुत किया गया है।

यहाँ चंदनदास की राक्षस के प्रति वफादारी और मित्रता का सुन्दर निरूपण किया गया है। अपने मित्र और उनके परिवार की रक्षा के लिए चन्दनदास स्वयं अपना और अपने परिवार का बलिदान देने के लिए तैयार हो जाते हैं। मित्र प्राणों से भी अधिक प्रिय है, यह सिद्ध कर देते हैं। मित्र के प्रति चन्दनदास की भावना को देख चाणक्य प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। संवाद में आनेवाले वाक्यों में प्रस्तुत विध्यर्थ कृदन्त के रूपों का भी अभ्यास करना है।

चाणक्यः – (स्वशिष्यं प्रति) वत्स, श्रेष्ठी चन्दनदासः अत्र आनेतव्यः।

शिष्यः – यदाज्ञापयति उपाध्यायः।

(इति निष्क्रम्य चन्दनदासेन सह पुनः प्रविश्य)

चन्दनदासः – (स्वगतम्) चाणक्यः यदा आह्वयति तदा निर्दोषस्य अपि शङ्का वर्धते किं पुनः जातदोषस्य। अत एव मया अमात्यराक्षसस्य गृहजनोऽन्यत्र प्रेषितः। मम तावत् यद्भवति तद्भवतु नाम।

शिष्यः – भोः श्रेष्ठिन् ! इतः इतः।

चन्दनदासः – अयमागतोऽस्मि। (उभौ परिक्रामतः।)

शिष्यः – उपाध्याय, अयं श्रेष्ठी चन्दनदासः।

चन्दनदासः – (उपसृत्य) जयतु जयत्वार्यः।

चाणक्यः – श्रेष्ठिन्, स्वागतं ते। इदमासनम्, तत्र स्थातव्यम्।

चन्दनदासः – यदार्य आज्ञापयति। (उपविष्टः।)

चाणक्यः – अपि प्रचीयन्ते संव्यवहाराणां वृद्धिलाभाः वः।

चन्दनदासः – (स्वगतम्) अत्यादरः शङ्कनीयः। (प्रकाशम्) आर्य ! अथ किम्, आर्यस्य प्रसादेन अखण्डिता मे वाणिज्या।

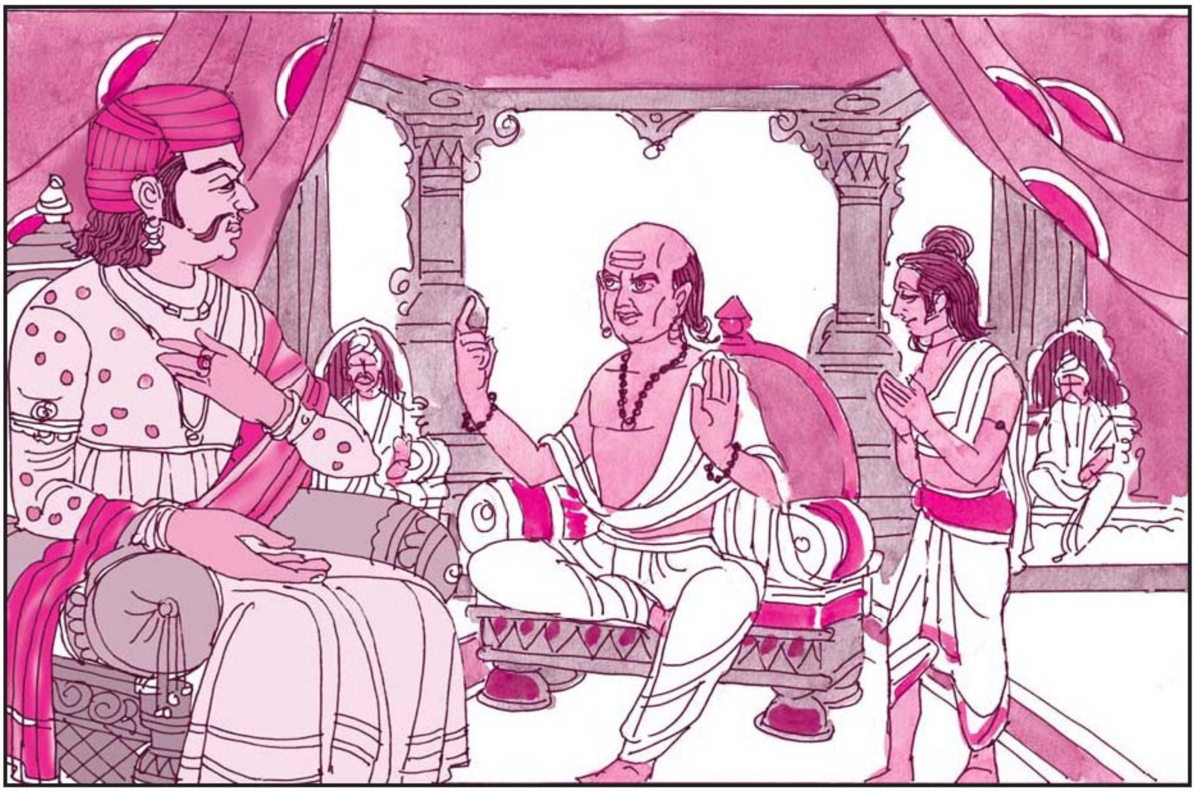

चाणक्यः – भोः श्रेष्ठिन् ! अपि कदाचित् चन्द्रगुप्तस्य दोषान् पूर्वनृपतेः नन्दस्य गुणान् अधुना स्मरन्ति प्रकृतयः ?

चन्दनदासः – शान्तं पापम्। शारदनिशासमुद्गतेन पूर्णिमाचन्द्रेण अधिकं नन्दन्ति प्रकृतयः।

चाणक्यः – भोः श्रेष्ठिन्! प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति प्रकृतयः।

चन्दनदासः – आज्ञापयतु आर्यः। किं कियत् च अर्थजातम् अस्माज्जनादिष्यते।

चाणक्यः – भोः श्रेष्ठिन्, चन्द्रगुप्तराज्यमिदं, न नन्दराज्यम्। अर्थः तु नन्दाय एव रोचते स्म, चन्द्रगुप्तस्य तु प्रजानां परिक्लेशाभावे एव रुचिः।

चन्दनदासः – (सहर्षम्) अनुगृहीतोऽस्मि।

चाणक्यः – स च परिक्लेशाभावः कथमाविर्भवतीति न प्रष्टव्यम्।

चन्दनदासः – आज्ञापयतु आर्यः।

चाणक्यः – संक्षेपतः नृपतिं प्रति अविरुद्धा वृत्तिः वर्तितव्या।

चन्दनदासः – कः पुनः अधन्यो नृपतेः विरुद्धमाचरति।

चाणक्यः – भवानेव तावत् प्रथमः।

चन्दनदासः – शान्तं पापम् शान्तं पापम्। कीदृशस्तृणानाम् अग्निना सह विरोधः।

चाणक्यः – अयम् ईदृशः विरोधः यत् त्वमद्यापि राजविरोधिनः अमात्यराक्षसस्य गृहजनं स्वगृहम् अभिनीय रक्षसि।

चन्दनदासः – आर्य, अलीकमेतत्, केनापि अनभिज्ञेन आर्यस्य एतत् निवेदितम्।

चाणक्यः – भोः श्रेष्ठिन् ! अलमाशङ्कया। भीताः पूर्वराजपुरुषाः पौराणां गृहेषु गृहजनं निक्षिप्य देशान्तरं व्रजन्ति। ततः तत्प्रच्छादनमेव दोषमुत्पादयति।

चन्दनदासः – एवं नु इदम्। तस्मिन् समये अमात्यराक्षसस्य गृहजनः मम गृहे आसीत्।

चाणक्यः – प्रथमम् अनृतम्, इदानीम् आसीत् इति परस्परविरुद्धे वचने।

चन्दनदासः – एतावदेव अस्ति मे वाक्छलम्।

चाणक्य: – भो: श्रेष्ठिन् ! चन्द्रगुप्तस्य राज्ये अपरिग्रह: छलानाम्। तत् समर्पयितव्य: राक्षसस्य गृहजन:। अच्छलेन भवितव्यम् भवता।

चन्दनदास: – आर्य ! ननु विज्ञापयामि, तस्मिन् समये आसीत् मम गृहे अमात्यराक्षसस्य गृहजन:।

चाणक्य: – अथ इदानीं क्व गत:।

चन्दनदास: – न जानामि कुत्र गत:।

चाणक्य: – कथं न जानासि नाम। भो: श्रेष्ठिन् चन्दनदास ! राजविरोधिषु तीक्ष्णदण्ड: नृपति: चन्द्रगुप्त:। स: न मर्षयिष्यति राक्षसकलत्रस्य प्रच्छादनं भवत:। तत् रक्षितव्यं परकलत्रेण आत्मन: कलत्रं जीवितं च।

चन्दनदास: – आर्य, किं मे भयं दर्शयति भवान्। सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षसस्य गृहजनं न समर्पयामि, किं पुन: असन्तम्।

चाणक्य: – चन्दनदास, एष एव ते निश्चय:।

चन्दनदास: – बाढम्, एष मे स्थिर: निश्चय:।

चाणक्य: – (स्वगतम्) साधु चन्दनदास ! साधु।

सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जन: ।
क इदं दुष्करं कुर्यात् इदानीं शिबिना विना ॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) चाणक्य: पाटलिपुत्र के महामंत्री कौटिल्य का एक नाम **वत्स:** पुत्र, शिष्य **चन्दनदास:** इस नाम का एक धनवान व्यापारी **उपाध्याय:** गुरू (जिसके पास जाकर अध्ययन किया जाए, उसे उपाध्याय कहा जाता है।) **गृहजन:** घर का व्यक्ति, अपना आदमी **प्रसाद:** कृपा, प्रसन्नता **अर्थ:** धन, रुपया–पैसा **अपरिक्लेश:** क्लेश–दु:ख का अभाव, दु:ख न हो ऐसी स्थिति **अधन्य:** भाग्यहीन, अभागा, दुर्भाग्यशाली व्यक्ति **अमात्यराक्षस:** इस नाम का राजा नंद का महामंत्री **आर्य:** श्रेष्ठ व्यक्ति, प्रतिष्ठित व्यक्ति, महानुभाव (किसी व्यक्ति को सम्मान से बुलाने या सम्बोधित करने के लिए संस्कृत में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। कहा गया है कि – कर्तव्यमाचरन् कर्म अकर्तव्यमनाचरन्। तिष्ठति प्रकृताचारे स वै आर्य इति स्मृत:॥ अर्थात् जिस व्यक्ति का जो कर्तव्य कर्म हो, उसका वह आचरण करता हो और जो अकर्तव्य हो उसका आचरण न करता हो इस प्रकार जो अपने आचरण में सदैव स्थिर रहता है उसे 'आर्य' कहा जाता है।) **अनभिज्ञेन** अज्ञानी, अपरिचित, न जानने वाला व्यक्ति **चन्द्रगुप्त:** चाणक्य का शिष्य (नंदवंश का नाश कर पाटलिपुत्र के सिंहासन पर आरूढ़ होने वाला राजा) **पौर:** (पुर) शहर में रहने वाले, शहरीजन, नागरिक

(स्त्रीलिंग) वाणिज्या आजीविका, व्यापार, धंधा **प्रकृति:** (राजा की) प्रजा, जनता **वृत्ति:** व्यवहार

(नपुंसकलिंग) अलीकम् असत्य, झूठ, गलत **प्रच्छादनम्** छिपाया जाए वह **अनृतम्** असत्य, झूठ **कलत्रम्** पत्नी **जीवितम्** जीवन **गेहम्** घर

सर्वनाम : उभौ (पुं) दोनों **इदम्** (नपुं.) यह **अस्मात्** (पुं, नपुं.) इसलिए, इसमें से **भवताम्** तुम्हारा, आपका **क:** (पुं.) कौन **एतत्** (नपुं.) यह

विशेषण : अखण्डिता (वाणिज्या) खंडित न हो ऐसा (व्यापार–वाणिज्य) **शारदनिशासमुद्गतेन (पूर्णिमाचन्द्रेण)** शरद ऋतु की रात में निकले हुए (पूर्णिमा के चाँद के द्वारा) **पूर्वनृपते: (नन्दस्य)** पहले के राजा (नंद) का **कियत् (अर्थजातम्)** कितना, (धन), कितने प्रमाण (अनुपात) में (धन–सम्पत्ति) **प्रीताभ्य: (प्रकृतिभ्य:)** प्रसन्न हुई प्रजा के पास से **अविरुद्धा (वृत्ति:)** अनुकूल (व्यवहार) **कीदृश: ईदृश: (विरोध:)** कैसा ऐसा (विरोध) **भीता: (पूर्वराजपुरुषा:)** भयग्रसित, डरे हुए (पहले के राजपुरुष) **परस्परविरुद्धे (वचने)** परस्पर विरोधी (वचन) **तीक्ष्णदण्ड: (नृपति:)** जिसका दंड उग्र है वह (राजा), भयंकर सजा देने वाला (राजा) **स्थिर: (निश्चय:)** टिका रहने वाला, स्थिर रहने वाला (निश्चय) **सुलभेषु (अर्थलाभेषु)** सरलता से प्राप्त हो जाने वाले, सभी को प्राप्य होने वाले (धन के लाभ में)

अव्यय : प्रति की तरफ, की ओर **अत एव** इस कारण से ही, इसीलिए **अन्यत्र** दूसरी जगह, अन्य स्थान पर **इतः इतः** इस तरफ से, इधर से **अपि** संभावना के अर्थ के संदर्भ को बताने के लिए वाक्य में इस अव्यय का प्रयोग किया जाता है। **अथ किम्** तो क्या, इसी तरह, हाँ **संक्षेपतः** संक्षेप में **अद्यापि** आज भी **अलम्** बस, पर्याप्त, समर्थ **नु** निश्चितता का अर्थ बताने के लिए प्रयुक्त होता है। **कुत्र** कहाँ **कथम्** किसलिए, किस कारण से **बाढम्** बराबर, ठीक (स्वीकार का अर्थ बताने वाला अव्यय) **साधु** ठीक, बराबर **कीदृशः** कैसा **इदृशः** ऐसा

समास : स्वशिष्यम् (स्वस्य शिष्यः, तम् – षष्ठी तत्पुरुष)। जातदोषस्य (जातः दोषः यस्य सः, तस्य – बहुव्रीहि)। गृहजनः (गृहस्य जनः – षष्ठी तत्पुरुष)। वृद्धिलाभाः (वृद्धेः लाभः, ते – षष्ठी तत्पुरुष)। अखण्डिता (न खण्डिता – नञ् तत्पुरुष)। पूर्वनृपतेः (पूर्वस्य नृपतिः, तस्य – षष्ठी तत्पुरुष)। शारदनिशासमुद्गतेन (शारदस्य निशा शारदनिशा (षष्ठी तत्पुरुष), शारदनिशायां समुद्गतः, तेन – सप्तमी तत्पुरुष)। पूर्णिमाचन्द्रेण (पूर्णिमायाः चन्द्रः, तेन – षष्ठी तत्पुरुष)। प्रतिप्रियम् (प्रतिगतं प्रियम्)। चन्द्रगुप्तराज्यम् (चन्द्रगुप्तस्य राज्यम् – षष्ठी तत्पुरुष)। नन्दराज्यम्। (नन्दस्य राज्यम् – षष्ठी तत्पुरुष)। परिक्लेशाभावे (परिक्लेशस्य अभावः, तस्मिन् – षष्ठी तत्पुरुष)। अविरुद्धा (न विरुद्धा – नञ् तत्पुरुष)। अधन्यः (न धन्यः – नञ् तत्पुरुष)। राजविरोधिनः (राज्ञः विरोधिनः – षष्ठी तत्पुरुष)। स्वगृहम् (स्वस्य गृहम्, तस्मिन् – षष्ठी तत्पुरुष))। अनभिज्ञेन (न अभिज्ञः, तेन – नञ् तत्पुरुष)। पूर्वराजपुरुषाः (राज्ञः पुरुषाः, राजपुरुषाः (षष्ठी तत्पुरुष), पूर्वे च ते राजपुरुषाः – कर्मधारय)। देशान्तरम् (अन्यः देशः – कर्मधारय)। अनृतम् (न ऋतम् – नञ् तत्पुरुष)। परस्परविरुद्धे (परस्परस्मात् विरुद्धम्, ते – पञ्चमी तत्पुरुष)। वाक्छलम् (वाचः छलम् – षष्ठी तत्पुरुष))। अपरिग्रहः (न परिग्रहः – नञ् तत्पुरुष)। तीक्ष्णदण्डः (तीक्ष्णः दण्डः यस्य सः – बहुव्रीहि)। नृपतिः (नृणाम् पतिः – षष्ठी तत्पुरुष)। राक्षसकलत्रस्य (राक्षसस्य कलत्रम्, तस्य – षष्ठी तत्पुरुष)। परकलत्रेण (परस्य कलत्रम्, तेन – षष्ठी तत्पुरुष))। असन्तम् (न सत्, तम् – नञ् तत्पुरुष) अर्थलाभेषु (अर्थस्य लाभाः, तेषु – षष्ठी तत्पुरुष)। परसंवेदने (परस्य संवेदनम्, तस्मिन् – षष्ठी तत्पुरुष)।

कृदन्त : (सं.भू.कृ.) निष्क्रम्य निकलकर **प्रविश्य** प्रवेश करके **अभिनीय** ले जाकर **निक्षिप्य** रखकर **(क.भू.कृ) प्रेषितः** भेजा, भेज दिया **आगतः** आया हुआ, आया **उपविष्टः** बैठो, बैठा हुआ **अनुगृहीतः** अनुग्रह किया हुआ **निवेदितम्** निवेदन किया, निवेदन किया हुआ **भीताः** भय ग्रसित, डरा हुआ **गतः** गया, गया हुआ **(वि.कृ.) आनेतव्यः** लाना चाहिए, ले आओ, लाओ **स्थातव्यम्** बैठना चाहिए, बैठो **प्रष्टव्यम्** पूछना चाहिए, पूछने योग्य **वर्तितव्या** व्यवहार करना चाहिए **समर्पयितव्यः** समर्पित कर देना चाहिए, समर्पित करने योग्य **भवितव्यम्** होना चाहिए, होने लायक **रक्षितव्यम्** रक्षा करनी चाहिए, रक्षा करने योग्य

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपदी) जि (जयति) जीतना **नन्द् (नन्दति)** खुश होना, प्रसन्न होना **व्रज् (व्रजति)** जाना **आ + ह्वे > ह्वय् (आह्वयति)** बुलाना

(आत्मनेपदी) वृध् (वर्धते) बढ़ना, वृद्धि प्राप्त करना

दशम गण (परस्मैपदी) मर्ष् (मर्षयति) क्षमा करना, माफ करना

विशेष

1. शब्दार्थ : श्रेष्ठी सेठ, साहूकार **स्वगतम्** स्वयं को ही सुनाई दे इस तरह से बोली जाने वाली उक्ति, मन ही मन में बोली जाने वाली उक्ति **जातदोषस्य** जिनसे दोष उत्पन्न हुआ है उसको **मम तावत् यद्भवति तद्भवतु नाम** मेरा जो होना है उसे होने दो (**उभौ परिक्रामतः।** दोनों घूमते हैं।) (कोष्ठक में दिए गए वाक्य नाटककार द्वारा दी गई रंग सूचनाएँ हैं। नाटक का अभिनय करते समय पात्र इन सूचनाओं के अनुसार अभिनय करता है।) **प्रचीयन्ते** बढ़ रहा है **संव्यवहाराणाम्** खरीदना और बेचना, व्यापार **वृद्धिलाभाः** व्यापार वृद्धि के लाभ (वृद्धि का अर्थ ब्याज भी होता है।) **(प्रकाशम्)**स्वगत उक्ति के उपरान्त सब सुन सकें उस तरह से बोला जाने वाला संवाद (सामान्यतः नाटक में सभी संवाद 'प्रकाशम्' होते हैं, परन्तु स्वगत उक्ति बोली जाने के तुरन्त बाद पुनः जोर से संवाद (सुनाई दे इस तरह) बोलना शुरू करना हो तब (प्रकाशम्) ऐसी सूचना दी जाती है **आर्यस्य प्रसादेन** आप महानुभाव की कृपा से

प्रकृतयः अपि प्रजा भी, जनता भी **प्रतिप्रियम्** प्रिय के सामने किया गया प्रिय **अर्थजातम्** धन का समूह, धन का ढेर **ईष्यते** चाहा जा रहा है, प्रेम करते हो, इच्छा रखते हो **परिक्लेशाभावे** दु:ख के अभाव में, क्लेश न होने में **सहर्षम्** हर्ष के साथ **कथमाविर्भवतीति** कैसे पैदा होता है, किस तरह से उत्पन्न होता है **अलमाशङ्कया** शंका मत करो, शंका करने की आवश्यकता नहीं है **देशान्तरं व्रजन्ति** अन्य देश में चले जाते हैं, जा रहे हैं **तत्प्रच्छादनमेव** तुम को छिपा दूँ **दोषमुत्पादयति** दोष उत्पन्न करता है, गुनाह पैदा करता है **वाक्छलम्** वाणी का छल-दोष, बहाना **छलानाम्** छल का, दोष का **अपरिग्रहः** संग्रह का अभाव, त्यागभाव **अच्छलेन** छल या दोष बिना रहने से, निर्दोष रहने से **भवता भवितव्यम्** आप को होना चाहिए, तुमको (आप को) बनना चाहिए **न मर्षयिष्यति** माफ नहीं करेंगे, क्षमा नहीं करेंगे **गेहे सन्तमपि** घर में हो तो भी **न समर्पयामि** समर्पित नहीं करूँ, सौंपूँ नहीं **किं पुनः असन्तम्** तो फिर (घर में) न हो उसका क्या **परसंवेदने** दूसरों के दु:ख में, (अन्य) दूसरों की तकलीफ में **दुष्करम्** मुश्किल कार्य, कठिन काम **शिबिना विना** शिबि नामक राजा के अलावा (प्राचीन काल में एक शिबि नाम के राजा हुए। उन्होंने अपने यहाँ आश्रय लेने के लिए आए हुए पंडुक पक्षी को बचाने के लिए बाज पक्षी को अपने शरीर का मांस दे दिया था। जबकि यह प्रसंग उनकी परीक्षा के लिए था, जिसके विषय में राजा कुछ नहीं जानते थे।)

2. सन्धि : गृहजनोऽन्यत्र (गृहजनः अन्यत्र)। यद्भवति (यत् भवति)। तद्भवतु (तत् भवतु)। अयमागतोऽस्मि (अयम् आगतः अस्मि)। अस्माज्जनादिष्यते (अस्मात् जनात् इष्यते)। अनुगृहीतोऽस्मि (अनुगृहीतः अस्मि)। कथमाविर्भवतीति (कथम् आविर्भवति इति)। कीदृशस्तृणानाम् (कीदृशः तृणानाम्)। त्वमद्यापि (त्वम् अद्य अपि)। एष एव (एषः एव)। एष मे (एषः मे)। क इदानीम् (कः इदानीम्)।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) चन्दनदासेन अमात्यराक्षसस्य गृहजनः कुत्र निर्वाहितः ? ◯

(क) स्वगृहे (ख) अन्यत्र (ग) मित्रगृहे (घ) अरण्ये

(2) नन्दाय किं रोचते स्म ? ◯

(क) अर्थः (ख) प्रजाकल्याणम् (ग) युद्धम् (घ) धर्मवृद्धिः

(3) तृणानाम् .... सह विरोधः कीदृशः ? ◯

(क) अग्निम् (ख) अग्निना (ग) अग्नेः (घ) अग्निः

(4) चन्दनदासः स्वगतं वदति, अहं तु .... । ◯

(क) निर्दोषः (ख) साशङ्कः (ग) मुक्तदोषः (घ) जातदोषः

(5) भीताः पूर्वराजपुरुषाः पौराणां गृहेषु गृहजनं निक्षिप्य देशान्तरं .... । ◯

(क) व्रजति (ख) व्रजतः (ग) व्रजन्ति (घ) व्रजन्ते

(6) चाणक्यः यदा आह्वयति तदा .... अपि साशङ्कः भवति। ◯

(क) निर्दोषः (ख) निर्दोषाः (ग) निर्दोषेन (घ) निर्दोषैः

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषयाम् उत्तरत ।

(1) चाणक्य: स्वशिष्याय किं कथयति ?

(2) चन्द्रगुप्ताय किं रोचते ?

(3) भूपा: प्रीताभ्य: प्रकृतिभ्य: किम् इच्छन्ति ?

(4) भीता: राजपुरुषा: कुत्र गृहजनं निक्षिपन्ति ?

3. अधोलिखितानां कृदन्तानां प्रकारं लिखत ।

(1) निष्क्रम्य	....	(2) निर्वाहित:	....
(3) शङ्कनीय:	....	(4) इष्ट:	....
(5) प्रष्टव्यम्	....	(6) निक्षिप्य	....

4. समासप्रकारं लिखत ।

(1) जातदोष:	....	(2) वृद्धिलाभा:	....
(3) नन्दराज्यम्	....	(4) परकलत्रम्	....
(5) देशान्तरम्	....		

5. वचनानुसारं धातुरूपै: रिक्तस्थानानि पूरयत ।

(1)	इच्छामि	....	....
(2)	....	....	व्रजन्ति
(3)	....	परिक्रामत:	....
(4)	पराजेष्यति	....	....

6. रेखाङ्कितानां पदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(केन, क:, किम्, कीदृशम्, कस्य)

(1) <u>नन्दस्य</u> अर्थसम्बन्ध: प्रीतिजनक:।

(2) एतत् <u>प्रच्छादनदोषम्</u> उत्पादयति।

(3) <u>अमात्यराक्षस:</u> चन्द्रगुप्तं न पराजेष्यति।

(4) शिष्य: <u>चन्दनदासेन</u> सह प्रविशति।

7. मातृभाषया उत्तराणि लिखत ।

(1) चाणक्य किस तरह चन्दनदास के प्रति अति आदर व्यक्त करते हैं ?

(2) चाणक्य के मतानुसार नंद और चन्द्रगुप्त के राज्य में क्या अन्तर है ?

(3) चाणक्य चन्दनदास को चन्द्रगुप्त का प्रथम विरोधी क्यों मानते हैं ?

(4) चाणक्य चन्दनदास को किस तरह डराते हैं ?

(5) राक्षस के परिवार को सौंपने के संदर्भ में चन्दनदास क्या उत्तर देते हैं ?

(6) इस पाठ में मित्र की महिमा किस तरह उभर कर आती है ?

प्रवृत्ति

- विष्णुगुप्त-कौटिल्य के जीवन के विषय में जानकारी एकत्र कीजिए।
- चाणक्य के प्रेरणादायी वचनों को अपनी पाठशाला में सुविचार के रूप में लिखिए।

15. जयः पराजयो वा

युद्ध का परिणाम सदैव भयंकर होता है। फिर भी मनुष्य सदैव युद्ध करता रहता है। आधुनिक युग में विविध प्रकार के रासायनिक अस्त्र-शस्त्र के कारण युद्ध खूब अनिष्टकारी बन गए हैं। इस भयानकता का वर्णन ही प्रस्तुत पाठ का विषय है।

प्राचीन समय में युद्ध होते थे और उनमें खूब नरसंहार भी होता था। जिसके परिणाम स्वरूप स्त्रियाँ और बालक निराधार बनते थे, परन्तु पृथ्वी, जल, वायु, आकाश इत्यादि प्राकृतिक तत्त्वों को किसी भी प्रकार की हानि नहीं होती थी। वे उसी तरह शुद्ध रहते थे। आधुनिक युग में रासायनिक शस्त्रों का प्रयोग बढ़ जाने से प्राकृतिक-तत्त्व प्रदूषित होने लगे हैं। दूषित जल और वायु के कारण लोग असाध्य रोगों से ग्रसित हो रहे हैं। साथ ही प्रत्यक्ष और सक्रिय रूप से युद्ध से जुड़े ना भी हों तो भी लोग मृत्यु के वशीभूत हो जाते हैं। इतना ही नहीं आनेवाली अनेक पीढ़ियों को इस प्रकार के दुष्परिणामों को भोगना पड़ता है।

इस प्रकार के दुष्परिणामों को देनेवाले युद्ध में विजय चाहे जिस पक्ष की हो, परन्तु उस विजय को विजय कहा जाए या नहीं यह एक विकट प्रश्न है। महाभारत कालीन युद्ध और आधुनिक युद्ध के अन्तर को स्वर्ग में रहनेवाले अर्जुन स्वयं पृथ्वी पर आकर प्रत्यक्ष देखते हैं। स्वर्गीय पात्र को पृथ्वी पर उतारने की कल्पना ने प्रवर्तमान समय में चलनेवाले युद्ध के दुष्परिणामों की ओर ध्यान आकर्षित किया है। युद्ध के परिणाम से निर्दोष व्यक्तियों को जिन दु:खों को झेलना पड़ता है उसका अनुमान लगाकर युद्ध से दूर रहने की भावना जाग्रत हो, इसी उद्देश्य पर इस पाठ की कथावस्तु आधारित है।

एकदा स्वर्गस्थितः अर्जुनः पृथिवीं द्रष्टुकामः भूलोकमागच्छत्। प्राप्तभूलोकः सः महान्तं जयघोषं श्रुतवान्। सः जयघोषकारकं जनसमूहस्य समीपं गच्छति। सद्यः विरमिते विश्वयुद्धे लब्धविजयाः जनाः विजयोत्सवम् अनुभावयन्तः आसन्। तान् दृष्ट्वा अर्जुनोऽपि पुरातनं महाभारतविजयं तदानीन्तनान् प्राप्तविजयान् जनान् च स्मरति। एतम् अपरिचितपूर्वं समुपस्थितम् अर्जुनं ते जनाः स्वकीये विजयोत्सवे योजितवन्तः। अर्जुनोऽपि जातहर्षः तैः सह संलग्नोऽभवत्।

कञ्चित्कालानन्तरं सः तृषामनुभूतवान्। अभ्यागतेन तेन अश्व एको याचितः। याचिताश्वोऽसौ अश्वमारुह्य जलं पातुं नगराद्बहिः स्थितमेकं परिचितपूर्वं सरोवरं गतवान्। तत्र यदा सः जलपानाय उद्यतो भवति, तदा कस्यचित् पुरुषस्य ध्वनिं श्रुतवान् – ''महाशय, सगरम् इदं जलम्। अधुना अपेयमस्ति।'' अर्जुनः साश्चर्यः तमदृष्टपूर्वं पुरुषं पृच्छति, ''कथमिदं सगरं जलम्। प्रकृतिनिर्मिताः सरोवराः तु सर्वदैव पेयजलाः एव भवन्तीति।''

स्वरेण युवकः कायेन वृद्धः इव कश्चित् भग्नदन्तः धवलकेशः सदण्डः एकः जनः अर्जुनस्य समीपमागतवान्। अदृष्टपूर्वं तादृशं जनं दृष्ट्वा अर्जुनः आश्चर्यचकितः सञ्जातः। महाभारतकालिकान् स्थूलकायान् बलिष्ठान् जनान् स्मरन् स कष्टमपि अनुभूतवान्। अस्य एतादृशीं स्थितिं दृष्ट्वा अर्जुनः साश्चर्यं पृष्टवान् – ''को भवान् ? कस्मात् तव ईदृशी अवस्था जाता।''

स प्रत्यवदत् – "अहम् अस्य देशस्य एकः सैनिकः। विगतेषु कतिपयेषु मासेषु बहूनां देशानां परस्परं युद्धम् अभवत्। तत्र विविधानि शस्त्राणि प्रयुक्तानि। तस्मात् कारणात् जलं स्थलं वायुः प्राणिनः इत्येवं बहुविधं जगत् विविधरूपेण प्रभावितमस्ति। किं ते कथयामि, शस्त्रास्त्रनिर्गतैः प्रदूषितैः सर्वं वस्तुजातं प्रदूषितं विषमयं च सञ्जातम्। अस्य सरोवरस्य जलमपि एतस्मादेव कारणात् सगरमस्ति। अत्रत्यं जलं पीत्वा पीत्वा मदीया एषा स्थितिः सञ्जाता। मदीयः पुत्रः इदमेव जलं पीत्वा विगतदृष्टिः गभीरे कूपे पतितो मृतश्च। मदीया भार्या विषमयस्य वायोः प्रभावेन निरुद्धश्वासा दिवंगता। प्रतिदिनं जलस्यास्य पानेन गतप्राणान् जीवान् पश्यन् भुक्तभोगः अहमत्र स्थित्वा पशुपक्षिमानवान् अस्य जलपानात् वारयामि।"

अर्जुनः वृत्तान्तमेतं श्रुत्वा पुरातनीयस्य महाभारताभिधस्य युद्धस्य परिणामं स्मृतिपथमानयति। स विचारयति यत् तदा बहूनां जनानां संहारः सञ्जातः, तेन च परिवारेषु आपदानां परम्परा प्रवर्तिता। परन्तु जलवायुभूम्याकाशादयो महाभूतास्तथैव शुद्धाः आसन्। ते जीवानां कृते यथापूर्वम् उपयोगिनः एवासन्। सम्प्रति यदहं पश्यामि तत् अधिकं शोचनीयमस्ति। किमयम् अधुना प्रवर्तितः मावनस्य जयः, जयः अस्ति पराजयो वा ? एवं सशोकः अर्जुनः अपीतजलः एव गृहीतचिन्तश्च पुनः स्वर्गं प्रत्यावर्तत।

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) अर्जुनः महाभारत के प्रसिद्ध योद्धा (इस पाठ की कथावस्तु में उन्हें काल्पनिक पात्र के रूप में लिया गया है।) **भूलोकः** पृथ्वीलोक **महाशयः** महान है आशय जिनका वे (सज्जन व्यक्ति को सम्बोधित करने के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।) **अभ्यागतः** मेहमान, अतिथि **सरोवरः** बड़ा तालाब **जीवः** प्राणी, सजीव **परिणामः** परिणाम, फल (संस्कृत भाषा में यह शब्द पुल्लिंग में है।) **महाभूताः** महाभूत (अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी और आकाश ये पाँच महाभूत कहे जाते हैं।) **पराजयः** हार **स्वर्गः** जहाँ सिर्फ सुख ही सुख हो वह स्थान, देवलोक

(स्त्रीलिंग) तृषा प्यास **भार्या** पत्नी **आपदा** आफत, मुसीबत **परंपरा** अनवरत चलने वाला प्रवाह

विशेषण : स्वर्गस्थितः (अर्जुनः) स्वर्ग में रहने वाला (अर्जुन) **जयघोषकारकम् (जनसमूहम्)** जय घोष करने वाले (मनुष्यों का समूह) **विरमिते (विश्वयुद्धे)** रुक जाने पर (विश्वयुद्ध के) **लब्धविजयाः (जनाः)** जिन्होंने विजय प्राप्त कर ली है वे (मनुष्य) **तदानीन्तनान् प्राप्तविजयान् (जनान्)** उस समय के विजय प्राप्त करने वाले (व्यक्तियों) को **एतम् अपरिचितपूर्वं समुपस्थितम् (अर्जुनम्)** इस पूर्व से परिचित नहीं है ऐसे उपस्थित हुए (अर्जुन) को **परिचितपूर्वम् (सरोवरम्)** पहले से ही परिचित (सरोवर) की ओर **सगरम् इदम् (जलम्)** 'गर' अर्थात् विष, विष से विषाक्त यह (जल) **प्रकृतिनिर्मिताः (सरोवराः)** प्रकृति द्वारा निर्मित (तालाब) **भग्नदन्तः धवलकेशः सदण्डः एकः (जनः)** टूटे हुए दाँतवाला, सफेद बालवाला, डंडे के साथ वाला एक (आदमी) **अदृष्टपूर्वम् (जनम्)** पहले (कभी) न देखा हो ऐसा (व्यक्ति) **महाभारतकालिकान् स्थूलकायान् बलिष्ठान् (जनान्)** महाभारत कालीन मोटे शरीर वाले, अत्यन्त बलशाली (व्यक्तियों को) **विगतेषु कतिपयेषु (मासेषु)** बीते हुए कुछ महीनों में **बहूनाम् (देशानाम्)** बहुत सारे (देशों) का **शस्त्रास्त्रनिर्गतैः प्रदूषितैः (पदार्थैः)** अस्त्र-शस्त्र में से निकले हुए प्रदूषित (पदार्थों) से **मदीया (स्थितिः)** मेरी दशा (स्थिति-दशा) **मदीयः (पुत्रः)** मेरा पुत्र **गभीरे (कूपे)** गहरे (कुएँ) में **गतप्राणान् (जीवान्)** जिसके प्राण चले गए हैं उन (प्राणियों) को, मृत प्राणियों को

अव्यय : सद्यः तुरन्त, फौरन **सर्वदैव** हमेशा ही **इत्येवम्** इस तरह **प्रतिदिनम्** प्रतिदिन, हर-रोज, रोज-रोज **कृते** के लिए **यथापूर्वम्** पहले की तरह **सम्प्रति** अभी

समास : स्वर्गस्थितः (स्वर्गं स्थितः – द्वितीया तत्पुरुष)। प्राप्तभूलोकः (प्राप्तः भूलोकः येन सः – बहुव्रीहि)। जयघोषम् (जयस्य घोषः, तम् – षष्ठी तत्पुरुष)। जयघोषकारकम् (जयघोषस्य कारकः, तम् – षष्ठी तत्पुरुष)। जनसमूहम् (जनानां समूहः, तम् – षष्ठी तत्पुरुष)। विश्वयुद्धे (विश्वस्य युद्धम्, तस्मिन् – षष्ठी तत्पुरुष)। लब्धविजयाः (लब्धः विजयः येन सः, ते – बहुव्रीहि)। विजयोत्सवम् (विजयस्य उत्सवः, तम् – षष्ठी तत्पुरुष)। महाभारतविजयम् (महाभारतस्य विजयः, तम् – षष्ठी तत्पुरुष)। अपरिचितपूर्वम् (न परिचितपूर्वम् – नञ् तत्पुरुष)। जातहर्षः (जातः हर्षः

यस्य सः – बहुव्रीहि)। याचिताश्वः (याचितः अश्वः येन सः – बहुव्रीहि)। जलपानाय (जलस्य पानम्, तस्मै – षष्ठी तत्पुरुष)। सगरम् (गरेण सहितः, तम् – बहुव्रीहि)। अपेयम् (न पेयम् – नञ् तत्पुरुष)। साश्चर्यः (आश्चर्येण सहितः – बहुव्रीहि)। अदृष्टम् (न दृष्टः, तम् – नञ् तत्पुरुष)। प्रकृतिनिर्मिताः (प्रकृत्या निर्मितः, ते – तृतीया तत्पुरुष)। पेयजलाः (पेयं जलं यस्य सः, ते – बहुव्रीहि)। भग्नदन्तः (भग्नाः दन्ताः यस्य सः – बहुव्रीहि)। धवलकेशः (धवलाः केशाः यस्य सः – बहुव्रीहि)। सदण्डः (दण्डेन सहितः – बहुव्रीहि)। अदृष्टपूर्वम् (न दृष्टपूर्वः, तम् – नञ् तत्पुरुष)। आश्चर्यचकितः (आश्चर्येण चकितः – तृतीया तत्पुरुष)। स्थूलकायान् (स्थूलः कायः यस्य सः, तान् – बहुव्रीहि)। विविधरूपेण (विविधं रूपं यस्य सः, तेन – बहुव्रीहि)। शस्त्रास्त्रनिर्गतैः (शस्त्रं च अस्त्रं च शस्त्रास्त्रे, – इतरेतर द्वन्द्व) शस्त्रास्त्रेभ्यः निर्गतम्, तैः – पञ्चमी तत्पुरुष)। विगतदृष्टिः (विगता दृष्टिः यस्य सः – बहुव्रीहि)। निरुद्धश्वासा (निरुद्धः श्वासः यस्याः सा – बहुव्रीहि)। गतप्राणान् (गताः प्राणाः येषां ते, तान् – बहुव्रीहि)। भुक्तभोगः (भुक्तः भोगः येन सः – बहुव्रीहि)। पशुपक्षिमानवान् (पशवः च पक्षिणः च मानवाः च, तान् – इतरेतर द्वन्द्व)। महाभारताभिधस्य (महाभारतम् अभिधा यस्य सः, तस्य – बहुव्रीहि)। स्मृतिपथम् (स्मृतेः पन्थाः, तम् – षष्ठी तत्पुरुष)। जलवायुभूम्याकाशादयः (जलं च वायुः च भूमिः च आकाशः च –जलवायुभूम्याकाशाः, इतरेतर द्वन्द्व), जलवायुभूम्याकाशाः आदिः येषाम् ते –जलवायुभूम्याकाशादयः – बहुव्रीहि)। महाभूताः (महान् चासौ भूतः, ते – कर्मधारय)। अपीतजलः (पीतं जलं येन सः –पीतजलः, बहुव्रीहि, न पीतजलः – नञ् तत्पुरुष)। सशोकः (शोकेन सहितः – बहुव्रीहि)। गृहीतचिन्तः (गृहीता चिन्ता येन सः, – बहुव्रीहि)।

कृदन्त (क. भू. कृ.) अनुभूतम् अनुभव किया **समुपस्थितम्** उपस्थित हुए को, उपस्थित रहनेवाले को **(कर्तरि भू.कृ.) श्रुतवान्** सुना **अनुभूतवान्** अनुभव किया **पृष्टवान्** पूछा **गतवान्** गया **आगतवान्** आया **याचितः** माँगा **सञ्जातः** हुआ **जाता** हुई, बनी **पतितः** पड़ा, पतन हुआ **मृतः** मर गया, गुजर गया **प्रवर्तिता** फैल रही है **(वि.कृ) शोचनीयम्** विचार करने लायक, चिन्ता या शोक करने योग्य **(हे.कृ.) पातुम्** पीने के लिए **(सं.भू.कृ.) श्रुत्वा** सुनकर

विशेष

1. शब्दार्थ : पृथ्वीं द्रष्टुकामः पृथ्वी को देखने की कामना वाला, पृथ्वी को देखने की इच्छावाला **महान्तं जयघोषं श्रुतवान्** उच्च स्वर में जयनाद सुना **तेन अनुभूतम्** उन्होंने अनुभव किया **समीपं गच्छति** पास जाते हैं **सद्यः विरमिते विश्वयुद्धे** तुरन्त ही बन्द हुए विश्वयुद्ध में **विजयोत्सवम् अनुभावयन्तः आसन्** विजय का उत्सव मना रहे थे तब **तदानीन्तनान्** उस समय में, उस समय के **विजयोत्सवे योजितवन्तः** विजय के उत्सव में जोड़ दिया, लगा दिया, जोत दिया **जातहर्षः** जिसे हर्ष उत्पन्न हुआ हो वह, उत्पन्न हुआ है हर्ष जिसे वह **तैः सह संलग्नोऽभवत्** उनके साथ संलग्न हो गए – जुड़ गए **कञ्चित्कालानन्तरम्** थोड़े (कुछ) समय के बाद **तृषामनुभूतवान्** प्यास का अनुभव किया, प्यास लगी **अभ्यागतेन तेन** आए हुए उस अतिथि ने **अश्व एको याचितः** एक घोड़ा मँगवाया, मांगा **याचिताश्वोऽसौ** माँगे हुए घोड़े वाले (उसने) **जलपानाय** पानी पीने के लिए **उद्यतो भवति** उद्यत होता है, तैयार हुआ **अपेयमस्ति** पीने लायक (योग्य) नहीं है, पीने योग्य नहीं **तमदृष्टं पुरुषम्** उस न दिखाई देनेवाले पुरुष ने (अपरिचित पुरुष ने) **सर्वदैव** सदैव, हमेशा **पेयजलाः एव भवन्तीति** पीने योग्य पानी वाले होते हैं ऐसा **स्वरेण युवकः** आवाज (के माध्यम) से पुरुष **कायेन वृद्धः** शारीरिक रूप से वृद्ध **कश्चित्** कोई **समीपमागतवान्** पास आया **आश्चर्यचकितः सञ्जातः** आश्चर्य चकित हो गया **कष्टमपि अनुभूतवान्** दु:ख का भी अनुभव किया **साश्चर्यं पृष्टवान्** आश्चर्य से पूछा **कस्मात्** किस लिए, क्यों **ईदृशी अवस्था जाता** ऐसी दशा हुई **सः प्रत्यवदत्** उसने उत्तर दिया, वह बोला **बहुविधम्** अनेक प्रकार का **किं ते कथयामि** तुम्हें क्या कहूँ **सर्वं वस्तुजातम्** सभी (समान) वस्तुएँ **अत्रत्यं जलम्** यहाँ के पानी को **पीत्वा पीत्वा** पी–पीकर **विगतदृष्टिः** चली गई है दृष्टि जिसकी – वह **विषमयस्य वायोः** विषाक्त वायु के **प्रभावेन** प्रभाव से

निरुद्धश्वासा अटक गई है, रुक गई है साँस (श्वास) जिसकी वह **दिवंगता** मर गया **पश्यन्** देखते-देखते **पशुपक्षिमानवान्** पशुओं, पक्षियों और मनुष्यों को **अस्य जलपानात्** इस (जलाशय) का जलपान करने से **वारयामि** रोकता हूँ **स्मृतिपथमानयति** स्मृति में ले आता है, याद करता है **संहारः** मार देना, विनाश **आपदानां परम्परा प्रवर्तिता** आपत्तियों की परम्परा चल पड़ी **परन्तु जलवायुभूम्याकाशादयो महाभूताः** परन्तु पानी, वायु, पृथ्वी और आकाश इत्यादि महाभूत **तथैव** उसी तरह **जीवानां कृते** जीवों के लिए, प्राणियों के लिए **शोचनीयमस्ति** चिन्ता करने योग्य है **प्रवर्तितः** चली आ रही है, फैल रही है, फैली हुई **जयः अस्ति पराजयो वा** विजय है या पराजय-हार है ? **स्वर्गं प्रत्यावर्तत** स्वर्ग में वापस चले गए।

2. सन्धि : श्रुतपूर्वोऽयम् (श्रुतपूर्वः अयम्)। ध्वनिरिति (ध्वनिः इति)। अर्जुनोऽपि (अर्जुनः अपि)। संलग्नोऽभवत् (संलग्नः अभवत्)। अश्व एको याचितः (अश्वः एकः याचितः)। याचिताश्वोऽसौ (याचिताश्वः असौ)। उद्यतो भवति (उद्यतः भवति)। पतितो मृतश्च (पतितः मृतः च)। स्मृतिपथमानयति (स्मृतिपथम् आनयति)। स विचारयति (सः विचारयति)। महाभूतास्तथैव (महाभूताः तथा एव)। एवासन् (एव आसन्)। पराजयो वा (पराजयः वा)। गृहीतचिन्तश्च (गृहीतचिन्तः च)।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) अर्जुनः किं द्रष्टुकामः भूलोकम् आगच्छत् ? ◯

(क) युद्धम् (ख) विजयोत्सवम् (ग) पृथिवीम् (घ) जनस्थितिम्

(2) तृषातुरः अर्जुनः कुत्र गतवान् ? ◯

(क) नगरम् (ख) नदीम् (ग) सागरम् (घ) सरोवरम्

(3) प्रकृतिनिर्मिताः सरोवराः कीदृशाः भवन्ति ? ◯

(क) अपेयजलाः (ख) अगाधजलाः (ग) उष्णजलाः (घ) पेयजलाः

(4) युवकः कीदृशः आसीत् ? ◯

(क) भग्नहस्तः (ख) भग्नदन्तः (ग) भग्नदण्डः (घ) भग्नपादः

(5) महाभारतकालिकाः जनाः कीदृशाः आसन् ? ◯

(क) स्थूलकायाः (ख) हतबलाः (ग) कृशकायाः (घ) स्थूलोदराः

(6) भटस्य पुत्रः कीदृशे कूपे पतितः ? ◯

(क) निर्जले (ख) गभीरे (ग) क्षीणजले (घ) विशाले

(7) कीदृशः अर्जुनः पुनः स्वर्गं प्रस्थितः ? ◯

(क) गृहीतचिन्तः (ख) गृहीतजलः (ग) क्रोधाविष्टः (घ) पराजितः

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषायाम् उत्तरत ।

(1) अर्जुनः कस्य समीपं गच्छति ?

(2) सरोवरस्य जलं कीदृशम् आसीत् ?

(3) अपरिचितः स्वरेण कीदृशः आसीत् ?

(4) सर्वं वस्तुजातं केन प्रदूषितं विषमयं च संजातम् ?

(5) कः विगतदृष्टिः जातः ?

3. ह्यस्तनभूतकाले धातुरूपाणि परिवर्तयत ।

(1) स्मरति ....

(2) पश्यामि ....

(3) वदति ....

4. समासप्रकारं लिखत ।

(1) लब्धविजयाः .... (2) तृषातुरः ....

(3) धवलकेशः .... (4) प्रकृतिनिर्मिताः ....

(5) सशोकः ....

5. निम्नशब्दरूपाणां विभक्तिं वचनं च लिखत ।

(1) नगरात् ....

(2) बलिष्ठान् ....

(3) स्थितिम् ....

(4) मासेषु ....

(5) बहूनाम् ....

6. मातृभाषयाम् उत्तरत ।

(1) अर्जुन जलाशय का पानी पीने गए तब उस अपरिचित व्यक्ति ने क्या कहा ?

(2) अपरिचित व्यक्ति को देखकर अर्जुन आश्चर्यचकित क्यों हो गए ?

(3) युद्ध में प्रयुक्त अस्त्र-शस्त्रों से क्या-क्या प्रदूषित हो गया है ?

(4) अपरिचित व्यक्ति के पुत्र की क्या दशा हुई थी ?

(5) आधुनिक युद्ध और महाभारतकालीन युद्ध में क्या अन्तर है ?

प्रवृत्ति

- युद्ध के कारण आने वाली मुसीबतों की सचित्र सूची बनाइए।
- युद्ध की भयानकता दर्शाने वाले चित्रों का संग्रह कीजिए।

•

16. अद्भुतं युद्धम्

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण आदिकाव्य के रूप में प्रसिद्ध है। रामायण को आदिकाव्य कहा जाता है अत: उसके रचयिता महर्षि वाल्मीकि आदिकवि हैं। रामायण में कुल सात कांड और चौबीस हजार श्लोक हैं। रामायण की कथावस्तु सुप्रसिद्ध है। कथा के अनुसार राजा दशरथ राम को अयोध्या की राजगद्दी देना चाहते थे। परन्तु कैकेयी के वचन के अनुसार राम को जंगल में जाना पड़ा। सीता और लक्ष्मण ने भी राम के साथ वन-गमन किया। जंगल में घूमते-घूमते राम दंडकारण्य के पंचवटी क्षेत्र में पहुँचे। जहाँ वे पर्णकुटीर बनाकर सुखपूर्वक निवास करने लगे। इस समय के दौरान जो घटना घटी, उसका वर्णन रामायण के चौथे काण्ड अरण्यकांड में है। इस पाठ में प्रस्तुत पद्य उसी कांड से लिए गए हैं।

इसी निवास स्थान से रावण ने सीता का हरण किया था। सीता को बलपूर्वक ले जाते समय रावण को मार्ग में गिद्धराज जटायु मिलते हैं। सीता गिद्धराज जटायु से मदद के लिए निवेदन करती हैं। रावण खूब शक्तिशाली था। उसके पास धनुष, बाण, रथ इत्यादि अनेक साधन थे, जबकि जटायु के पास अपने शारीरिक अंगों जैसे - चोंच, पंख तथा नाखून के अतिरिक्त और कोई आयुध नहीं था। अपनी सीमित और रावण की असीमित शक्ति को जानते हुए भी जटायु ने रावण को ललकारा और उन्हें रोकने का भरपूर प्रयास किया। दुर्भाग्यवश जटायु को सफलता नहीं मिली, फिर भी जटायु के इस प्रयास ने, रामायण की कथा में इस पात्र को अमर कर दिया।

जटायु पक्षी होते हुए भी रावण के साथ युद्ध करता है क्योंकि एक दु:खी नारी को, प्राण देकर भी बचाना अपना कर्तव्य समझता है। जटायु द्वारा किए गए संघर्ष को देख थोड़ी देर के लिए रावण भी हतप्रभ रह जाता है। इस प्रसंग का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत काव्यांश में किया गया है। इस काव्यांश में से यह सीख लेनी चाहिए कि अत्याचारी चाहे जितना समर्थ हो, हम चाहे जितने निर्बल हों फिर भी अपनी तथा पीडितों की रक्षा करने के लिए पूरी शक्ति से अत्याचारी का सामना करना चाहिए। दु:खी व्यक्तियों के दु:ख दूर करना अपना मानव-धर्म समझना चाहिए।

ततः पर्वतशृङ्गाभः तीक्ष्णतुण्डः खगोत्तमः।
वनस्पतिगतः श्रीमान् व्याजहार शुभां गिराम् ॥ 1 ॥

यत् कृत्वा न भवेद् धर्मो न कीर्तिः न यशो ध्रुवम्।
शरीरस्य च भवेत् खेदः कस्तत् कर्म समाचरेत् ॥ 2 ॥

निवर्तय गतिं नीचां परदाराभिमर्शनात्।
न तत् समाचरेत् धीरो यत्परोऽस्य विगर्हयेत् ॥ 3 ॥

वृद्धोऽहं त्वं युवा धन्वी सरथः कवची शरी।
न चाप्यादाय कुशली वैदेहीं मे गमिष्यसि ॥ 4 ॥

इत्युक्तः क्रोधताम्राक्षः तप्तकाञ्चनकुण्डलः।
राक्षसेन्द्रोऽभिदुद्राव पतगेन्द्रम् अमर्षणः ॥ 5 ॥

तद् बभूवाद्भुतं युद्धं गृध्रराक्षसयोस्तदा।
सपक्षयोर्माल्यवतोः महापर्वतयोरिव ॥ 6 ॥

विददार नखैरस्य तुण्डं पृष्ठे समर्पयन्।
केशांश्चोत्पाटयामास नखपक्षमुखायुधः ॥ 7 ॥

ततोऽस्य सशरं चापं मुक्तामणिविभूषितम्।
चरणाभ्यां महातेजा बभञ्ज पतगोत्तमः ॥ 8 ॥

स भग्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।
हस्तेनादाय वैदेहीं पपात भुवि रावणः ॥ 9 ॥

जटायुस्तमतिक्रम्य तुण्डेनास्य खगाधिपः।
वामबाहून् दश तदा व्यपाहरत् अरिन्दमः ॥ 10 ॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) खेदः दुःख, निराशा **धीरः** धैर्यवान, गम्भीर **पतगोत्तमः** पक्षियों में उत्तम **जटायुः** इस नाम का रामायण का एक प्रसिद्ध पात्र, पक्षीराज **चापम्** धनुष्य **वामबाहुः** बाईं भुजा **अरिन्दमः** शत्रु का दमन करने वाला

(स्त्रीलिंग) गिरा वाणी **वैदेही** सीता विदेहराज की पुत्री

(नपुंसकलिंग) तुण्डम् मुख, चोंच **पृष्ठम्** पीठ

सर्वनाम : परः अन्य, दूसरा

विशेषण : पर्वतशृङ्गाभः तीक्ष्णतुण्डः खगोत्तमः वनस्पतिगतः श्रीमान् महातेजाः पतगोत्तमः (जटायुः) पर्वत के शिखर के समान आभा से युक्त, तीक्ष्ण अर्थात् नुकीले चोंचवाले, खग अर्थात् पक्षियों में उत्तम, वनस्पति में रहने वाले – वनस्पति को प्राप्त हुए, शोभा से युक्त, महान तेजवाला, महातेजस्वी – पतग अर्थात् पक्षियों में उत्तम ऐसा जटायु **शुभाम् (गिराम्)** शुभ कल्याणकारी वाणी (से) को **नीचाम् (मतिम्)** नीच (बुद्धि विचार) को **त्वं धन्वी (युवा)** तुम धनुषधारी (युवक) **सरथः कवची शरी (रावणः)** रथवाला, कवचवाला, बाणवाला (रावण) **कुशली** कुशल, सकुशल **वैदेहीम्** वैदेही, सीता को **क्रोधताम्राक्षः तप्तकाञ्चनकुण्डलः राक्षसेन्द्रः अमर्षणः (रावणः)** क्रोध के कारण तांबे जैसी (लाल) आँखों वाला, तपे हुए सोने के समान कुंडलवाला, राक्षसों का राजा, क्रोधी (रावण) **सपक्षयोः महापर्वतयोः (माल्यवतोः)** पंखों वाले महान पर्वत (दो माल्यवान पर्वतों का) **नखपक्षमुखायुधः (जटायुः)** नाखून, पंख और मुख (चोंच) रूपी आयुध – हथियारवाला (जटायु) **मुक्तामणिविभूषितम् सशरम् (चापम्)** मुक्ता नामक मणि से सुशोभित बाण के साथ वाले धनुष को **भग्नधन्वा विरथः हताश्वः हतसारथिः (रावणः)** टूटे हुए धनुषवाला, रथ बिना का – रथ विहीन, मारे गए घोड़ेवाला, मृत सारथीवाला (रावण) **खगाधिपः अरिन्दमः (जटायुः)** पक्षीराज, शत्रु का दमन करने वाला (जटायु)

अव्यय : मुहुर्मुहुः बार-बार **आशु** जल्दी, शीघ्र

समास : पर्वतशृङ्गाभः (पर्वतस्य शृङ्गम् पर्वतशृङ्गम् (षष्ठी तत्पुरुष), पर्वतशृङ्गस्य आभा इव आभा यस्य सः – (बहुव्रीहि)। तीक्ष्णतुण्डः (तीक्ष्णं तुण्डं यस्य सः – बहुव्रीहि)। खगोत्तमः (खगेषु उत्तमः – सप्तमी तत्पुरुष)। वनस्पतिगतः (वनस्पतिं गतः – द्वितीया तत्पुरुष)। परदाराभिमर्शनात् (परस्य दाराः, परदाराः (षष्ठी तत्पुरुष), परदाराणाम् अभिमर्शनम्, तस्मात् – षष्ठी तत्पुरुष)। सरथः (रथेन सहितः – बहुव्रीहि)। नखपक्षमुखायुधः (नखाः च पक्षौ च मुखं च (नखपक्षमुखानि – इतरेतर द्वन्द्व), नखपक्षमुखानि आयुधानि यस्य सः – बहुव्रीहि)। सशरः (शरेण सहितः – बहुव्रीहि)। मुक्तामणिविभूषितम् (मुक्ता चासौ मणिः (मुक्तामणिः – कर्मधारय), मुक्तामणिना विभूषितः, तम् – तृतीया तत्पुरुष)। महातेजाः (महत् तेजः यस्य सः – बहुव्रीहि)। पतगोत्तमः (पतगेषु उत्तमः – षष्ठी तत्पुरुष)। भग्नधन्वा (भग्नं धनुः यस्य सः – बहुव्रीहि)। हताश्वः (हताः अश्वाः यस्य सः – बहुव्रीहि)। हतसारथिः (हतः सारथिः यस्य सः – बहुव्रीहि)। गृध्रराजेन (गृध्राणां राजा, तेन – षष्ठी तत्पुरुष)। क्रोधमूर्छितः (क्रोधेन मूर्छितः – तृतीया तत्पुरुष)। खगाधिपः (खगानाम् अधिपः – षष्ठी तत्पुरुष)। वामबाहून् (वामः च असौ बाहुः च, तान् – कर्मधारय)।

कृदन्त : (सं.भू.कृ.) कृत्वा करके **आदाय** ले करके **अतिक्रम्य** अतिक्रमण करके, हद के बाहर जाकर

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपदी) पत् (पतति) पड़ना, नीचे गिरना

दसवाँ गण (परस्मैपदी) वि + गर्ह् (विगर्हयति) निन्दा करना

विशेष

1. शब्दार्थ : व्याजहार बोला **न भवेद् धर्मः** धर्म नहीं होता **न कीर्तिः** न कीर्ति होती **न यशो ध्रुवम्** स्थिर रहनेवाला यश नहीं होगा **शरीरस्य च भवेत् खेदः** और शरीर को दु:ख हो **कस्तत्** कौन वह **समाचरेत्** आचरण करता है **परदाराभिमर्शनात्** परस्त्री का स्पर्श करने से होने वाली **नीचा** निम्न, नीच **गतिम्** गति को (प्राप्त करने से) **निवर्तय** अटक जा, रुक जा **यत्परः अस्य विगर्हयेत्** अन्य व्यक्ति जिसकी निन्दा करें **इत्युक्तः** इस तरह कहा गया, ऐसा कहा (तब) **अमर्षणः राक्षसेन्द्रः** क्रोधित राक्षस राज (रावण) **अभिदुद्राव पतगेन्द्रम्** पगतेन्द्र-पक्षीराज जटायु की ओर दौड़े **तद् बभूव अद्भुतम् युद्धम्** तदुपरान्त अद्भुत युद्ध हुआ **गृध्रराक्षसयोः** गिद्ध-जटायु और राक्षस-रावण का **विददार नखैः** नाखून से खरोंचा, चोट पहुँचाई **तुण्डं पृष्ठे समर्पयन्** चोंच को पीठ के ऊपर रखकर- मारते हुए **केशान् च उत्पाटयामास** बाल को उखाड़ दिया **चरणाभ्याम्** दो पैरों से **बभञ्ज** तोड़ दिया **हस्तेनादाय** हाथ से लेकर **वैदेहीम्** वैदेही को, सीता को **पपात भुवि रावणः** रावण जमीन पर गिर गया **दश वामबाहून्** दाहिने तरफ की दस बाहुओं को **व्यपाहरत्** उखाड़ दिया

2. सन्धि : धर्मो न (धर्मः न)। यशो ध्रुवम् (यशः ध्रुवम्)। कस्तत् (कः तत्)। धीरो यत्परोऽस्य (धीरः यत्परः अस्य)। वृद्धोऽहम् (वृद्धः अहम्)। चाप्यादाय (च अपि आदाय)। इत्युक्तः (इति उक्तः)। राक्षसेन्द्रोऽभिदुद्राव (राक्षसेन्द्रः अभिदुद्राव)। बभूवाद्भुतम् (बभूव अद्भुतम्)। गृध्रराक्षसयोस्तदा (गृध्रराक्षसयोः तदा)। सपक्षयोर्माल्यवतोः (सपक्षयोः माल्यवतोः)। महापर्वतयोरिव (महापर्वतयोः इव)। नखैरस्य (नखैः अस्य)। केशांश्चोत्पाटयामास (केशान् च उत्पाटयामास)। ततोऽस्य (ततः अस्य)। महातेजा बभञ्ज (महातेजाः बभञ्ज)। स भग्नधन्वा (सः भग्नधन्वा)। विरथो हताश्वो हतसारथिः (विरथः हताश्वः हतसारथिः)। हस्तेनादाय (हस्तेन आदाय)। जटायुस्तमतिक्रम्य (जटायुः तम् अतिक्रम्य)। तुण्डेनास्य (तुण्डेन अस्य)।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) सीतायाः अपनयनकाले जटायुः कुत्र आसीत् ? ◯

(क) वनस्पतिम् (ख) पर्वतशृङ्गम् (ग) रथम् (घ) समीपम्

(2) जटायुः रावणस्य कस्मिन् गात्रे तुण्डं समर्पयत् ? ◯

(क) नेत्रे (ख) चरणे (ग) मुखे (घ) पृष्ठे

(3) क्रोधमूर्च्छितः रावणः जटायुं कथम् अभिजघान ? ◯

(क) तलेन (ख) हस्तेन (ग) बाणेन (घ) खड्गेन

(4) जटायुः तुण्डप्रहारेण किं व्यपाहरत् ? ◯

(क) दश मस्तकानि (ख) दश मुखानि (ग) दश दक्षिणबाहून् (घ) दश वामबाहून्

(5) जटायुः वदति – परदाराभिमर्शनात् नीचां गतिं .... । ◯

(क) निवर्तय (ख) निवर्तते (ग) निवर्तयन्तु (घ) निवृत्तिः

(6) किं विशेषणं जटायोः पक्षिराजत्वं सूचयति ? ◯

(क) तीक्ष्णतुण्डः (ख) अरिन्दमः (ग) महाबलः (घ) खगाधिपः

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषयाम् उत्तरत ।

(1) श्रीमान् जटायुः कीदृशीं गिरां व्याजहार ?

(2) जटायुरावणयोः कः वृद्धः, कः च युवा ?

(3) रावणस्य चापं कीदृशम् आसीत् ?

(4) भग्नधन्वा रावणः कुत्र पतितः ?

(5) जटायुः रावणस्य किम् उत्पाटयामास ?

3. समासप्रकारं लिखत ।

(1) खगोत्तमः .... (2) तीक्ष्णतुण्डः ....

(3) भग्नधन्वा .... (4) हतसारथिः ....

(5) वामबाहून् .... (6) क्रोधमूर्च्छितः ....

4. उदाहरणानुसारम् अनुस्वारस्य स्थाने परसवर्णम् अनुनासिकं वा लिखत ।

उदाहरणम् : पर्वतशृंगः पर्वतशृङ्गः

(1) तीक्ष्णतुंडः ....

(2) बभंज ....

(3) अरिंदमः ....

5. वचनानुसारं शब्दरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

(1)	....	निवर्तयत
(2) समाचरेत्	....	....
(3) गमिष्यसि	....	गमिष्यथ

6. रेखाङ्कितानां पदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत।

(काम्, कुत्र, कीदृशीम्, कः, केन, कीदृशः)

(1) जटायुः <u>शुभां</u> गिरां व्याजहार।

(2) विरथः रावणः <u>भुवि</u> पपात।

(3) <u>जटायुः</u> तस्य पृष्ठे तुण्डं समर्पयत्।

(4) रावणः <u>वैदेहीम्</u> आदाय गच्छति।

(5) जटायुः <u>तुण्डेन</u> तस्य दश वामबाहून् व्यपाहरत्।

7. मातृभाषया उत्तराणि लिखत ।

(1) वृद्ध जटायु रावण को किन शब्दों में ललकारता है ?

(2) जटायु के पास कौन-कौन से आयुध हैं ?

(3) रावण किस तरह धरती पर गिरा ?

(4) क्रुद्ध मूर्छित रावण ने क्या किया ?

(5) अन्त में जटायु ने क्या किया ?

8. निम्नलिखित विशेषणों में से रावण और जटायु के विशेषणों को अलग कीजिए।

कवची, श्रीमान्, अरिन्दमः, भग्नधन्वा, धन्वी, पर्वतशृङ्गाभः, युवा, पतगोत्तमः, विरथः, क्रोधमूर्च्छितः, वृद्धः, तीक्ष्णतुण्डः, महातेजाः।

प्रवृत्ति

- जटायु के समान अन्य परोपकारी पशु-पक्षियों की कथाओं का संग्रह कीजिए।
- रामायण के जटायु वध प्रसंग के समान अन्य प्रसंगों की चित्र प्रदर्शनी लगाइए।

●

17. स्वाभाविकं सादृश्यम्

आज से लगभग छब्बीस सौ वर्ष पहले आचार्य पाणिनि ने अष्टाध्यायी नामक संस्कृत भाषा में व्याकरण ग्रंथ की रचना की। सूत्रात्मक शैली में रचे गए इस ग्रन्थ में लगभग चार हजार जितने सूत्रों में समग्र संस्कृत भाषा के व्याकरण को समाहित किया गया है। आचार्य पाणिनि के पश्चात् लगभग सौ-डेढ़ सौ वर्ष के बाद आचार्य कात्यायन ने इन सूत्रों पर आधारित वार्तिकों की रचना की। इन वार्तिकों में पाणिनि के सूत्रों पर विचार-विमर्श किया गया है। तदुपरान्त सौ-ड़ेढ सौ वर्ष के बाद आचार्य पतंजलि हुए, जिन्होंने सूत्रों और वार्तिकों को आधार बनाकर महाभाष्य नामक एक भाष्य ग्रन्थ की रचना की। महाभाष्य में से इस पाठ की विषय-सामग्री पसंद की गई है।

आचार्य पतंजलि का महाभाष्य नाम से प्रसिद्ध ग्रंथ वैसे तो व्याकरण शास्त्र का ग्रन्थ है। किन्तु उसमें वर्णित कुछ प्रसंगों के दौरान सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, विज्ञान, खगोलशास्त्र तथा भूगोल जैसे विविध भौतिक विज्ञान के कुछ सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया है। यह उल्लेख उस समय प्रचलित ज्ञान-विज्ञान के विस्तार का द्योतक है।

प्रस्तुत पाठ में 'स्थानेऽन्तरमः' (पा. 1. 1. 49) पाणिनि के सूत्र की चर्चा के अन्तर्गत मानव द्वारा किए गए परस्पर व्यवहार का, गुरुत्वाकर्षण का और पृथ्वी के ऊपर स्थित अग्नि का सूर्य के साथ जो सम्बन्ध है उनकी स्वीकृति देनेवाले सिद्धान्तों का सूचन है। भाषा के व्याकरण का विचार करने वाले ग्रंथ में विविध शास्त्रों से संबंधित बातों का संग्रह करने की यह रीति विविध शास्त्रों में पारंगत होने की प्रेरणा देती है। किसी एक शास्त्र का विद्यार्थी होने पर भी विविध शास्त्रों के सिद्धांतों की जानकारी उसे होनी चाहिए, यह कुशलता प्राप्त करने की प्रेरणा मिले, इस हेतु प्रस्तुत पाठ यहाँ रखा गया है।

संसारे विविधाः पदार्थाः सन्ति। तद्यथा, स्वर्ण-लौहादयो धातवः, वट-खदिरादयो वृक्षाः, गो-घोटकादयः पशवः च। एषु पुनः प्रत्येकमपि पदार्थाः भिन्नाः भिन्नाः भवन्ति। तद्यथा - स्वर्णं लौहात् भिन्नं भवति। अथ च प्रत्येकः सुवर्णखण्डः परस्परम् आकारेण प्रकारेण च भिन्नः भिन्नः भवति।

वस्तुतः अस्तित्वरूपेण सत्तारूपेण वा एते पदार्थाः परस्परं भिन्नाः सन्तीति प्रतीयन्ते। परन्तु प्रत्यक्षतः परस्परं भिन्नेषु पदार्थेषु अपि किञ्चिदेकं स्वाभाविकम् आन्तर्यमपि भवति। ते ते पदार्थाः यदा क्रियायां प्रयुक्ताः भवन्ति, तदा अस्य प्रतीतिः भवति। अस्य सिद्धान्तस्य उपदेशः द्वाविंशतिशतवर्षेभ्यः पूर्वम् आचार्येण पतञ्जलिना स्वकीये व्याकरणमहाभाष्ये कृतः। तत्र ते कथयन्ति -

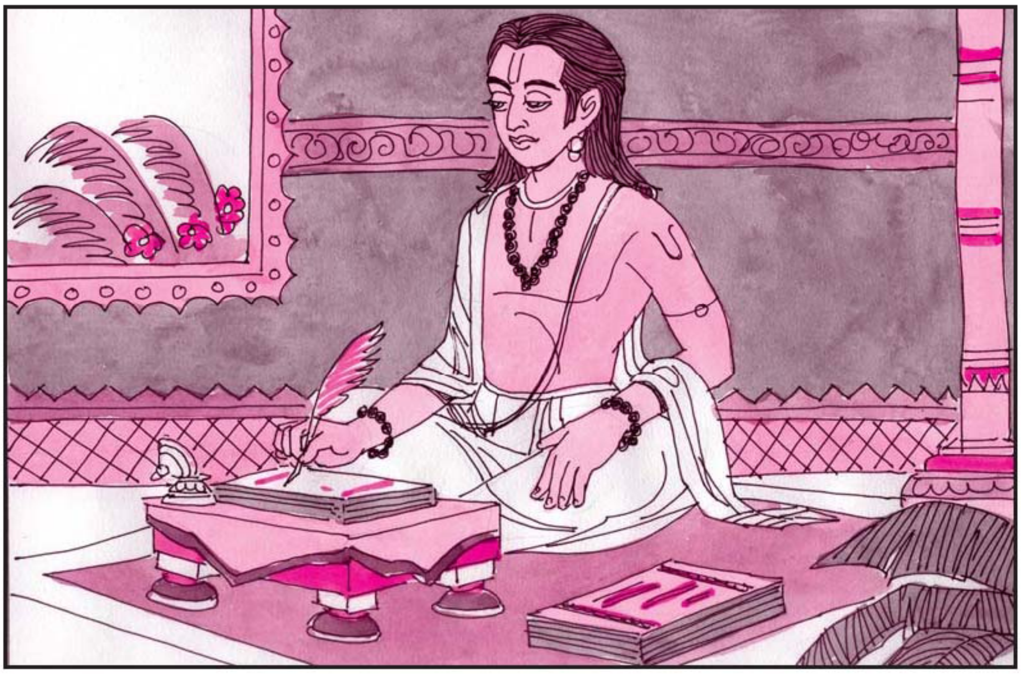

'समाजेषु समाशेषु समवायेषु चास्यताम् इत्युक्ते नैव कृशाः कृशैः सहासते, न पाण्डवः पाण्डुभिः। येषामेव किंचिदर्थकृतमान्तर्यं तैरेव सहासते।' अर्थात् सामाजिके व्यवहारे भोजनार्थं निमन्त्रिताः जनाः आकारतः प्रकारतश्च भिन्नाः भिन्नाः भवन्ति। परन्तु यदा तेषां भोजनविधौ प्रवृत्तिः भवति, तदा ते स्वकीयम् आन्तरिकं समानत्वं पश्यन्तः परस्परं निकटासनाः भवन्ति। आकारेण कश्चित् कृशः जनः कृशेन सह न तिष्ठति, न तु कश्चित् पीनः पीनेन सह। परन्तु येषां किञ्चिदर्थकृतम् अर्थात् प्रयोजनकृतं सादृश्यं भवति, तत् सादृश्यमनुसरन्तः ते एव परस्परं निकटासनाः भवन्ति। मातुलकुलाः मातुलकुलैः सह, पितृव्याः पितृव्यैः सह, उपवेशिनः उपवेशिभिः सह तिष्ठन्ति।

एवमेव गवादीनां पशूनामपि प्रवृत्तिर्भवति। गावो दिवसं चरितवत्यो सायंकाले गोष्ठेषु समागत्य यो यस्याः वत्सो भवति तेन सह शेरते।

गवादीनामिव अचेतनेषु अपि पदार्थेषु नियमोऽयं दृश्यते। तद्यथा – लोष्टः क्षिप्तो बहुवेगं गत्वा नैव तिर्यग् गच्छति नोर्ध्वमारोहति। सः पृथिव्याः विकारः वर्तते इति कृत्वा पृथिवीमेव आगच्छति, सादृश्यत्वात्। तथा ज्योतिषो विकारः अर्चिः आकाशदेशे निवाते सुप्रज्वलितं नैव तिर्यग् गच्छति नार्वागारोहति। ज्योतिषो विकारो ज्योतिरेव गच्छत्यान्तर्यतः।

एवमत्र महाभाष्यकाराः मानवीयं व्यावहारिकं सिद्धान्तमुपदिशन्ति। तेन सह च गुरुत्वाकर्षणस्य सिद्धान्तं पार्थिवाग्नेः सूर्येण सह सम्बन्धस्य च सिद्धान्तं सूचयन्ति।

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) सिद्धान्तः नियम, कायदा (कोई एक सच्चा साबित हुआ हो ऐसा निश्चित मत या निर्णय) **उपदेशः** बोध, शिक्षा, निर्देश **समाजः** मनुष्यों का समूह **समाशः** समान भोजनवाले **समवायः** समुदाय, मेला-सम्मेलन **पाण्डुः** पीलाश वाला सफेद रंग (यहाँ सफेद चमड़ी वाले गोरे व्यक्ति के लिए इस शब्द का प्रयोग किया गया है।) **मातुलः** मामा **पितृव्यः** चाचा, काका **लोष्टः** मिट्टी का ढेला **निवातः** वायु विहीन आकाश की जगह, पृथ्वी से बहुत ऊपर का भाग

(स्त्रीलिंग) प्रतीतिः निश्चित करना, ज्ञान होना **क्रिया** हलन-चलन, सक्रियता

(नपुंसकलिंग) आन्तर्यम् समानता, कुछ लोगों का समान होना **गोष्ठेषु** गाय के तबेले (घारी) में **अचेतनेषु** जड़ पदार्थ में

सर्वनाम : अस्य (पुं. नपुं.) इसका **येषाम् (पुं. नपुं.)** जिनका

विशेषण : विविधाः (पदार्थाः) विभिन्न (पदार्थ) **भिन्नेषु (पदार्थेषु)** भिन्न-भिन्न (पदार्थों में) **कृशः** पतला, दुबला **पीनः** मोटा स्थूल **एकम् स्वाभाविकम् (आन्तर्यम्)** एक स्वाभाविक (ऐसा सादृश्य), एक प्राकृतिक (समानता) **सामाजिके (व्यवहारे)** समाज से सम्बन्धित व्यवहार में **निमन्त्रिताः (जनाः)** बुलाए गए (लोग) (मनुष्य), निमंत्रित लोग **स्वकीयम् आन्तरिकम् (समानत्वम्)** अपनी आंतरिक - अंदर स्थित (समानता) **प्रयोजनकृतम् (सादृश्यम्)** प्रयोजन द्वारा किया गया (सादृश्य - समान रूप रंग) **गवादीनाम् (पशूनाम्)** गाय इत्यादि (पशुओं) को **अचेतनेषु (पदार्थेषु)** अचेतन - जड़ (पदार्थों) में **मानवीयं व्यावहारिकम् (सिद्धान्तम्)** मानवीय व्यवहार से सम्बन्धित (सिद्धान्त) को

अव्यय : तद्यथा जैसे कि **नैव** नहीं **अर्थात्** मतलब कि, अर्थात् **आकारतः** आकार से, आकार के कारण **प्रकारतः** प्रकार के कारण **तिर्यग्** तिरछा, टेढ़ा-मेढ़ा **ऊर्ध्वम्** ऊपर की ओर **इति कृत्वा** ऐसा करके **अर्वाक्** सामने, नीचे की ओर **आन्तर्यतः** समानता के कारण **अथ च** और फिर

समास : स्वर्ण-लौहादयः (स्वर्णं च लौहं च (-स्वर्णलौहे, इतरेतर द्वन्द्व), स्वर्णलौहे आदिः येषां ते - बहुव्रीहि)। वट-खदिरादयः (वटश्च खदिरश्च -वटखदिरौ, इतरेतर द्वन्द्व), वटखदिरौ आदिः येषाम् ते - बहुव्रीहि)। गो-घोटकायः (गौः च घोटकः च (-गोघोटकौ, इतरेतर द्वन्द्व), गोघोटकौ आदिः येषां ते - बहुव्रीहि)। अस्तित्वरूपेण (अस्तित्वं रूपं यस्य, तेन - बहुव्रीहि)। सत्तारूपेण (सत्ता रूपं यस्य, तेन - बहुव्रीहिः)। अर्थकृतम् (अर्थेन कृतम् - तृतीया तत्पुरुष)। भोजनविधौ (भोजनस्य विधिः, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष)। निकटासनाः (निकटे आसनानि येषां ते - बहुव्रीहि)। प्रयोजनकृतम् (प्रयोजनेन कृतम् - तृतीया तत्पुरुष)। मातुलकुलाः (मातुलं कुलं येषां ते - बहुव्रीहि)। अचेतनेषु (न चेतनम् - अचेतनम्, तेषु - नञ् तत्पुरुष)। आकाशदेशे (आकाशस्य देशः, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष)।

कृदन्त : (क.भू.कृ.) कृतः किया गया **निमन्त्रितः** निमंत्रित, किसी कार्य में बुलाए गए **क्षिप्तः** फेंका गया, फेंका हुआ **सुप्रज्वलितम्** अच्छी तरह से प्रज्वलित हुआ **(सं.भू.कृ.) समागत्य** आकर **गत्वा** जाकर

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपद) आ + रुह् (आरोहति) चढ़ना, ऊपर जाना

दसवाँ गण : (परस्मैपदी) सूच् (सूचयति) सूचना देना

विशेष

1. शब्दार्थ : स्वर्ण-लौहादयो धातवः सोना, लोहा इत्यादि धातु **वट-खदिरादयो वृक्षाः** बरगद तथा खैर इत्यादि के वृक्ष **गो-घोटकादयः पशवः** गाय, घोड़ा इत्यादि पशु **परस्परं भिन्नाः** एक दूसरे से भिन्न **सत्तारूपेण भिन्नाः सन्तीति** सत्ता के रूप में अलग-अलग हैं ऐसा **प्रतीयन्ते** प्रतीत होता है, दिखाई देता है **प्रत्यक्षतः** प्रत्यक्ष रूप से **क्रियायां प्रयुक्ताः** क्रिया में प्रयोग (किए गए) **द्वाविंशतिशतवर्षेभ्यः पूर्वम्** बाईस सौ वर्ष पहले **आचार्येण पतञ्जलिना** आचार्य पतंजलि ने **स्वकीये व्याकरणमहाभाष्ये** स्वयं रचित व्याकरण महाभाष्य नामक ग्रंथ में **आस्यताम् इति उक्ते** (खाने) बैठो ऐसा कहे जाने पर **नैव कृशाः कृशैः सह आसते** पतला, दुबला व्यक्ति दुबले व्यक्ति के साथ नहीं बैठता **न पाण्डवः पाण्डुभिः** न तो गोरा व्यक्ति गोरे व्यक्ति के साथ **किंचित्** थोड़ा **अर्थकृतम् आन्तर्यम्** अर्थ (अर्थात् कोई हेतु-प्रयोजन) को लेकर की गई अत्यन्त निकटता **तैः एव सह आसते** उन्हीं के साथ बैठते हैं **भोजनविधौ प्रवृत्तिः भवति** खाने की क्रिया में प्रवृत्ति होती है **समानत्वं पश्यन्तः** समानता-निकटता देखकर **परस्परम्** परस्पर, आपस में **निकटासनाः** पास-पास आसन वाले **भवन्ति** होते हैं, बनते हैं **आकारेण कश्चित् कृशः** आकार से कोई दुबला **पीनेन सह** मोटे के साथ **किञ्चित् अर्थकृतम्** किसी कारण (अर्थ-हेतु) वश किया गया **तं सादृश्यम् अनुसरन्तः** उस सादृश्य-समानता का अनुसरण करते हुए **उपवेशिनः उपवेशिभिः सह तिष्ठन्ति** पड़ोसी-पड़ोसी के साथ बैठते हैं **गावः दिवसं चरितवत्यः** गायें सारे दिन चरती रहकर **यः यस्याः वत्सः भवति** जो जिस का बछड़ा होता है **तेन सह शेरते** उनके साथ सो जाते हैं **बहुवेगं गत्वा** अति वेग से (ऊपर) जाकर **नैव तिर्यग् गच्छति** तिरछा नहीं जाता **नोर्ध्वमारोहति** ऊपर की ओर नहीं जाता **इति कृत्वा** ऐसा करके **पृथिवीमेव आगच्छति** पृथ्वी की ओर आता है **सादृश्यत्वात्** सादृश्य के कारण **एवमेव** इस तरह **ज्योतिषो विकारः** ज्योति-सूर्य का विकार **अर्चिः** प्रकाश की किरण **आकाशदेशे** आकाश में **नार्वागारोहति** न तो नीचे की ओर उतरता है **ज्योतिरेव गच्छत्यान्तर्यतः** अतः ज्योति की ओर जाता है समानता के कारण **गुरुत्वाकर्षणस्य सिद्धान्तम्** गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त को **पार्थिवाग्नेः** पृथ्वी के ऊपर के अग्नि का **सूर्येण सह** सूर्य के साथ **सम्बन्धस्य** संबंध का

2. सन्धि : स्वर्णादयो धातवः (स्वर्णादयः धातवः)। चास्यताम् (च आस्यताम्)। इत्युक्ते (इति उक्ते)। सहास्ते (सह आस्ते)। किञ्चिदर्थकृतमान्तर्यम् (किञ्चित् अर्थकृतम् आन्तर्यम्)। तैरेव (तैः एव)। सहासते (सह आसते)। प्रकारतश्च (प्रकारतः च)। सादृश्यमनुसरन्तः (सादृश्यम् अनुसरन्तः)। प्रवृत्तिर्भवति (प्रवृत्तिः भवति)। गावो दिवसम् (गावः दिवसम्)। यो यस्याः (यः यस्याः)। प्रसवो भवति (प्रसवः भवति)। नियमोऽयम् (नियमः अयम्)। क्षिप्तो बहुवेगम् (क्षिप्तः बहुवेगम्)। नोर्ध्वमारोहति (न ऊर्ध्वम् आरोहति)। ज्योतिषो विकारः (ज्योतिषः विकारः)। नार्वागारोहति (न अर्वाक् आरोहति)। ज्योतिषो विकारो ज्योतिरेव (ज्योतिषः विकारः ज्योतिः एव)। गच्छत्यान्तर्यतः (गच्छति आन्तर्यतः)।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) केन रूपेण पदार्थाः परस्परं भिन्नाः प्रतीयन्ते ? ◯

(क) आकारेण (ख) सत्तारूपेण (ग) मूल्येन (घ) प्रदेशरूपेण

(2) यदा पदार्थाः क्रियायां प्रयुक्ताः भवन्ति तदा कस्य प्रतीतिः भवति ? ◯

(क) सादृश्यस्य (ख) भिन्नतायाः (ग) आकारस्य (घ) प्रकारस्य

(3) स्वर्णादयः .... सन्ति। ◯

(क) पशवः (ख) धातवः (ग) मनुष्याः (घ) भिन्नाः

(4) पतञ्जले: स्थितिकाल: कति वर्षेभ्य: पूर्वमस्ति ?

(क) द्वाविंशतिशतवर्षेभ्य: पूर्वम् (ख) विंशतिसहस्रवर्षेभ्य: पूर्वम्

(ग) द्विसहस्रेभ्य: वर्षेभ्य: पूर्वम् (घ) शतेभ्य: वर्षेभ्य: पूर्वम्

(5) समाशेषु आस्यताम् इत्युक्ते कीदृशा: जना: परस्परं निकटासना: भवन्ति ?

(क) आन्तरिकं समानत्वं पश्यन्त: (ख) आकारं पश्यन्त:

(ग) भारं पश्यन्त: (घ) पदवीं पश्यन्त:

2. विशेष्यानुसारं विभक्तिवचनयुक्तम् उपयुक्तं विशेषणपदं रिक्तस्थाने लिखत ।

(1) संसारे .... पदार्था: सन्ति। (विविध)

(2) .... व्यवहारे भोजनार्थं जना: निमन्त्रिता:। (सामाजिक)

(3) एवमेव .... पशूनामपि प्रवृत्तिर्भवति। (गवादि)

(4) .... व्यावहारिकं सिद्धान्तमुपदिशन्ति। (मानवीय)

(5) आकारेण कश्चित् कृश: .... कृशेन .... सह न तिष्ठति। (जन)

3. एकवाक्येन संस्कृतभाषयाम् उत्तरत ।

(1) परस्परं भिन्नेषु पदार्थेषु कीदृशम् आन्तर्यं भवति ?

(2) के निकटासना: भवन्ति ?

(3) गोष्ठेषु गाव: केन सह शेरते ?

(4) लोष्ट: कस्य विकार: वर्तते ?

(5) पार्थिवाग्ने: केन सह सम्बन्ध: वर्तते ?

4. विसर्गसन्धिं प्रयोजयत।

(1) स्वर्णादय: धातव: ....

(2) कृशै: सहास्ते ....

(3) तै: एव ....

(4) प्रकारत: च ....

(5) नियम: अयम् दृश्यते ....

5. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कुत्र, कै:, कस्या:, कस्य, कस्मात्)

(1) कृशा कृशै: सहासते।

(2) गोष्ठेषु समागत्य यो यस्या: प्रसवो भवति तेन सह गाव: शेरते।

(3) स: पृथिव्या: विकार: वर्तते।

(4) महाभाष्यकार: सम्बन्धस्य सिद्धान्तं सूचयति।

6. मातृभाषायाम् उत्तराणि लिखत ।

(1) सजीवों में स्वाभाविक सादृश्य किस कारण से होता है ?

(2) अचेतन पदार्थों में सादृश्य का कारण क्या है ?

(3) ज्योति ऊपर की ओर क्यों जाती है ?

प्रवृत्ति

- संस्कृत साहित्य के वैज्ञानिक ग्रंथों के नाम तथा उन ग्रन्थों के रचयिता के नाम का संग्रह कीजिए।

18. मुक्तानि मुक्तकानि

संस्कृत साहित्य में प्रहेलिका, कूटश्लोक, प्रश्नोत्तर जैसे विविध प्रकार के हास्य उत्पन्न करनेवाले मुक्तक विपुल मात्रा में रचे गए हैं। मुक्तक प्रकार की यह रचना कभी श्लेष तो कभी संधि का प्रयोग करके चमत्कार उत्पन्न करती है। तो कभी समास को बदल देने से या फिर कभी अन्वय को बदल देने से द्विविध (दोहरा) अर्थ दे करके चमत्कार उत्पन्न करती है।

इस प्रकार के मुक्तक एक साथ, एक ग्रंथ में नहीं पाए जाते उनकी रचना एक साथ नहीं की जाती, अपितु ऐसे मुक्तक समय-समय पर अलग-अलग प्रदेशों में विद्वान कवियों द्वारा रचे जाते हैं और इनका संग्रह भी भिन्न ग्रंथों में होता रहता है। वर्तमान-समय में ऐसे मुक्तकों का संग्रह करके उसे 'सुभाषितरत्नभाण्डागार' के नाम से प्रकाशित किया गया है।

प्रस्तुत पाठ में अनेक प्रकार से, अनेक प्रकार का चमत्कार उत्पन्न करनेवाले आठ पद्यों का संग्रह किया गया है। इस प्रकार के चमत्कार मात्र मनोरंजन के लिए ही हैं, ऐसा बिल्कुल नहीं है। शाब्दिक और आर्थिक रूप से चमत्कार उत्पन्न करनेवाले इन पद्यों में मानव जीवन को उत्तम बनाने के लिए उपाय और उपदेश दिए गए हैं। इन उपदेशों के अनुसार जीवन जीकर मानव चहुँमुखी सफलता प्राप्त कर सकता है, साथ ही अपने जीवन को सुखी बना सकता है।

पिनाक-फणि-बालेन्दु-भस्म-मन्दाकिनीयुता।
पवर्गरचिता मूर्तिरपवर्गप्रदास्तु वः ॥ 1 ॥

भगवन् किमुपादेयं गुरुवचनम्, हेयमपि च किमकार्यम्।
को गुरुरधिगततत्त्वः, शिष्यहितायोद्यतः सततम् ॥ 2 ॥

अपूर्वोऽयं मया दृष्टः कान्तः कमललोचने।
शोऽन्तरं यो विजानाति स विद्वान्नात्र संशयः ॥ 3 ॥

शस्त्रं न खलु कर्तव्यमिति पित्रा नियोजितः।
तदेव शस्त्रं कृतवान् पितुराज्ञा न लङ्घिता ॥ 4 ॥

वृक्षस्याग्रे फलं दृष्टं फलाग्रे वृक्ष एव च।
अकारादि सकारान्तं यो जानाति स पण्डितः ॥ 5 ॥

यथा नयति कैलासं नगं गानसरस्वती।
तथा नयति कैलासं न गङ्गा न सरस्वती ॥ 6 ॥

युधिष्ठिरः कस्य पुत्रो गङ्गा वहति कीदृशी।
हंसस्य शोभा का वास्ति धर्मस्य त्वरिता गतिः ॥ 7 ॥

द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मद्गेहे नित्यमव्ययीभावः।
तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः ॥ 8 ॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) उद्यतः उद्यत, तैयार **कान्तः** प्रियजन **शः** 'श' वर्ण, शकार **नगः** पर्वत, गिरि **कैलासः** (कैलास) इस नाम का पर्वत **द्वन्द्वः, द्विगुः, अव्ययीभावः, तत्पुरुषः, कर्मधारयः, बहुव्रीहिः** ये सभी समास के प्रकारों के नाम हैं (समास के इन प्रकारों में से कुछ समास आप कक्षा नौ में सीख चुके हैं। अन्य समास अभ्यास पाँच में दिए गए हैं) इसके साथ इन शब्दों का अपना भी एक अर्थ होता है, जैसे **द्वन्द्वः** दो-दो की जोड़, युग्म **द्विगुः** दो गायों का समूह **अव्ययीभाव** अर्थात् जिसका व्यय न हो, जिसमें घटने का अभाव हो ऐसे समास को अव्ययीभाव कहा जाता है। **तत्पुरुष** (इस पद में अलग-अलग विभक्तियों वाला तत्पुरुष समास माना जा सकता है। इनके अनेक अर्थ निकलते हैं। यहाँ षष्ठी तत्पुरुष समास मानकर 'तस्य पुरुषः उसका पुरुष'-ऐसा अर्थ लिया जाता है।) कर्मधारय (इस पद को कर्म और धारय - इस तरह दो भागों में बाँटकर कर्म को धारण करना - ऐसा अर्थ मिलता है।) बहुव्रीहि शब्द में (बहवः व्रीहयः सन्ति यस्य सः बहुव्रीहिः - इस विग्रह के अनुसार) बहुव्रीहि समास मानकर अति (खूब) व्रीहि है जिसमें वह, ढेर सारे धान्य-अनाजवाला - ऐसा अर्थ मिलता है।)

(स्त्रीलिंग) पवर्गरचिता मूर्तिः 'प' वर्ग (अर्थात् प, फ, ब, भ और म वर्ण) के द्वारा रची गई मूर्ति यहाँ श्लोक के पूर्वार्द्ध में जो शब्द प्रयोग है, उसमें प-वर्ग के वर्णों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों (जैसे कि - पिनाक-फणि-बालेन्दु-भस्म-मन्दाकिनीयुता) का प्रयोग करके भक्त अपने मन में ईश्वर की एक मूर्ति 'छवि' बनाता है **अपवर्गप्रदा** अपवर्ग अर्थात् मुक्ति-मोक्ष और प्रदा अर्थात् देनेवाली, मुक्ति देनेवाली (दूसरी तरह से देखा जाए तो श्लोक के पूर्वार्द्ध में जिस मूर्ति की कल्पना की गई है वह 'प' वर्ग रचित है। अब इस 'प' वर्ग रचित मूर्ति अपवर्ग - वर्ग बिना की कैसे होगी ? तब कहा गया है कि - अपवर्ग अर्थात् मुक्ति इस अर्थ को समझते हुए यहाँ मुक्ति माँगी जा रही है। यहाँ विरोध समझ में आ रहा है। परन्तु अपवर्ग = समझते ही विरोध दूर हो जाता है। **लङ्घिता** लाँघी नहीं **गानसरस्वती** गान रूपी सरस्वती **गंगा, सरस्वती** नामक प्रसिद्ध नदियाँ **त्वरिता** त्वरित जल्दी से, खूब गति से

(नपुंसकलिंग) अकार्यम् न करने जैसा **नखलु** नाखून काटने का साधन (न और खलु - इस तरह अलग करके भी अर्थ करना है। न अर्थात् नहीं, खलु अर्थात् निश्चित रूप से) (यह खलु अव्यय कभी-कभी वाक्य में कोई अर्थ नहीं बताता। वह मात्र वाक्य में अलंकार के रूप में, वाक्य की शोभा बढ़ाने के लिए प्रयोग किया जाता है।)

सर्वनाम : कस्य किसका **का** (स्त्री.) कौन

विशेषण : पिनाक-फणि-बालेन्दु-भस्म-मन्दाकिनीयुता पिनाक-धनुष, फणी-नाग, बालेन्दु-बाल चन्द्र, भस्म-राख, मंदाकिनी-गंगा-इन (प, फ, ब, भ और म इन पाँच वर्णों से प्रारम्भ होने वाला) पदार्थों से युक्त, धनुष्य इत्यादि वाली ('प' वर्ग रचित मूर्ति का विशेषण) **उपादेयम्** ग्रहण करने योग्य, स्वीकार करने लायक **हेयम्** छोड़ देने लायक, त्यागने योग्य **अधिगततत्त्वः** जिसका रहस्य जान लिया है वह, जिसने तत्व प्राप्त कर लिया है वह **कीदृशी** कैसी, किसकी तरह **त्वरिता** शीघ्र, तेज

अव्यय : अनन्तरम् बाद में, तदुपरान्त **खलु** निश्चित, निश्चय ही **इति** ऐसा ही

समास : पिनाक-फणि-बालेन्दु-भस्म-मन्दाकिनीयुता (पिनाकः च फणी च बालेन्दुः च भस्म च मन्दाकिनी च इति पिनाक-फणि-बालेन्दु-भस्म-मन्दाकिन्यः (इतरेतर द्वन्द्व), पिनाक-फणि-बालेन्दु-भस्म-मन्दाकिनीभिः युता - तृतीया तत्पुरुष)। पवर्गरचितामूर्तिः (पवर्गेण रचिता पवर्गरचिता (तृतीया तत्पुरुष), पवर्गरचिता चासौ मूर्तिः - कर्मधारय)। गुरुवचनम् (गुरोः वचनम् - षष्ठी तत्पुरुष)। अकार्यम् (न कार्यम् - नञ् तत्पुरुष)। अधिगततत्त्वः (अधिगतं तत्त्वं येन सः - बहुव्रीहि)। शिष्यहिताय (शिष्यस्य हितम्, तस्मै - षष्ठी तत्पुरुष)। कमललोचने (कमले इव लोचने यस्याः सा बहुव्रीहि)। नखलु (नखं लुनाति (लुनीते) - उपपद तत्पुरुष)। फलाग्रे (फलस्य अग्रम्, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष)। अकारादिसकारान्तम् (अकारः आदिः यस्य तत्, अकारादि - बहुव्रीहि। सकारः अन्ते यस्य तत्, सकारान्तम् - बहुव्रीहि। अकारादि च सकारान्तं च - समाहार द्वन्द्व)। गानसरस्वती (गानस्य सरस्वती - षष्ठी तत्पुरुष)।

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपदी) वह् (वहति) वहन करना, एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना

विशेष

1. शब्दार्थ : अपूर्वः पूर्व (पहले) में अर्थात् पहले कभी न हुआ हो वह **दृष्टः** देखा हुआ **कान्तः** प्रिय, पसंदीदा, जिसकी कामना की जाए वह **कमललोचने** हे कमल के समान नेत्रों वाले **नियोजितः** संलग्न हुए, लगाया, योजित किया **लङ्घिता** उल्लंघन किया, पार, लांघ दिया **अकारादि-सकारान्तम्** आदि में 'अ'कार (अ) अंत में स-कार (स) हो, तो (अनानास नामक फल के संदर्भ में यह कथन है) **मद्गेहे** मेरे घर में **स्याम्** होना, (बनना) बनू **विजानाति** जानते हैं।

(प्रस्तुत पाठ में विविध प्रकार के पद्यों और श्लोकों का संग्रह है। प्रथम श्लोक में शाब्दिक चमत्कार है। प-वर्ग की मूर्ति (के पास) से अपवर्ग की कामना की गई है। द्वितीय श्लोक में प्रश्न और उत्तर है। प्रथम चरण में **भगवन् किमुपादेयम्** प्रश्न है और उसका उत्तर **गुरुवचनम्** है। इसी तरह **हेयमपि च किम्** यह प्रश्न है और उसका उत्तर **अकार्यम्** है। इसके बाद तीसरा और अन्तिम प्रश्न है **को गुरुः** और उसका उत्तर है **अधिगततत्त्वः, शिष्यहिताय उद्यतः सततम्.** तृतीय श्लोक में (पहेलिका) पहेलियाँ हैं और **अशोक** शब्द को ध्यान में रखकर पहेलियाँ पूछी गई हैं। चतुर्थ श्लोक रहस्यात्मक है। उसमें प्रयोग किए गए **शस्त्रं न खलु** पदों को दो तरह से पढ़ना चाहिए 1. **शस्त्रं न खलु।** और 2. **शस्त्रं नखलु।** प्रथमानुसार पढ़ने में समस्या उत्पन्न होती है जबकि दूसरे के अनुसार पढ़ने में कथन का रहस्य स्पष्ट होता है। पाँचवें श्लोक में पहेली प्रश्न है और उसका उत्तर अनानास है। छठे श्लोक में शाब्दिक चमत्कार है। श्लोक के दूसरे और चौथे चरण में अक्षर समान हैं। परन्तु उन अक्षरों को दो तरह से जोड़कर दो अलग-अलग अर्थ लिखना और समझना है। यथा 1. **कैलासं नगं गानसरस्वती।** और 2. **कैलासं न गङ्गा न सरस्वती।** सातवें श्लोक में प्रथम तीन चरण में तीन प्रश्न हैं और चौथे चरण में उन प्रश्नों के क्रमशः उत्तर दिए गए हैं। अन्तिम और आठवें श्लोक में समास के प्रकारों के नाम का प्रयोग करके एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के पास कुछ प्राप्त करने की प्रार्थना करता है)

2. सन्धि : मूर्तिरपवर्गप्रदास्तु (मूर्तिः अपवर्गप्रदा अस्तु)। को गुरुरधिगततत्त्वः (कः गुरुः अधिगततत्त्वः)। शिष्यहितायोद्यतः (शिष्यहिताय उद्यतः)। अपूर्वोऽयम् (अपूर्वः अयम्)। शोऽन्तरं यो विजानाति स विद्वान्नात्र (शः अन्तरम् यः विजानाति सः विद्वान् न अत्र)। तदेव (तत् एव)। पितुराज्ञा (पितुः आज्ञा)। वृक्षस्याग्रे (वृक्षस्य अग्रे)। वृक्ष एव (वृक्षः एव)। यो जानाति (यः जानाति)। स पण्डितः (सः पण्डितः)। पुत्रो गङ्गा (पुत्रः गङ्गा)। वास्ति (वा अस्ति)। द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहम् (द्वन्द्वः द्विगुः अपि च अहम्)।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) कस्य मूर्तिः पवर्गरचिता अस्ति ? ◯

(क) कृष्णस्य (ख) रामस्य (ग) शिवस्य (घ) विष्णोः

(2) किम् उपादेयम् अस्ति ? ◯

(क) कार्यम् (ख) अकार्यम् (ग) गुरुवचनम् (घ) मित्रवचनम्

(3) यः शिष्यस्य .... उद्यतः सः गुरुः ? ◯

(क) हिताय (ख) सुखाय (ग) धनाय (घ) रक्षणाय

(4) का नदी त्वरिता वहति ? ◯

(क) गङ्गा (ख) यमुना (ग) सरस्वती (घ) नर्मदा

(5) कर्मणा पुरुषः .... भवति। ◯

(क) द्विगुः (ख) तत्पुरुषः (ग) द्वन्द्वः (घ) बहुव्रीहिः

(6) मद्गेहे नित्यं किं वर्तते ? ◯

(क) अव्ययीभावः (ख) बहुव्रीहिः (ग) द्विगुः (घ) द्वन्द्वः

(7) तृतीयाविभक्तेः रूपं किम् ?

(क) वः (ख) मया (ग) द्विगुः (घ) कदा

(8) विध्यर्थकृदन्तस्य उदाहरणं किम् ? ◯

(क) कृतवान् (ख) दृष्ट्वा (ग) रचिता (घ) कर्तव्यम्

2. एकेन वाक्येन संस्कृतभाषयाम् उत्तरत ।

(1) हेयं किम् अस्ति ?
(2) का कैलासं नगं नयति ?
(3) पितुः का आज्ञा ?

3. रेखाङ्कितानां पदानां स्थाने प्रकोष्ठात् पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत।

(का, किम्, केन, कस्य)

(1) युधिष्ठिरः धर्मस्य पुत्रः।
(2) गङ्गा कैलासं न नयति।
(3) वृक्षस्याग्रे फलं दृष्टम्।

4. सन्धिविच्छेदं कुरुत ।

(1) अपवर्गप्रदास्तु ....
(2) अपूर्वोऽयम् ....
(3) पितुराज्ञा ....
(4) द्विगुरपि ....

5. समासप्रकारं लिखत ।

(1) गुरुवचनम् .... (2) फलाग्रे ....
(3) गानसरस्वती .... (4) बहुव्रीहिः ....

6. शब्दरूपाणां परिचयं कारयत ।

(1) हिताय ....
(2) हंसस्य ....
(3) मया ....
(4) कमललोचने ....

7. मातृभाषया संक्षिप्तं टिप्पणं लिखत ।

(1) अपवर्गप्रदा शिव की मूर्ति प-वर्ग से कैसे रची गई ?

(2) गुरु कैसा होना चाहिए ?

(3) कोई भी व्यक्ति बहुव्रीहि कैसे बन सकता है ?

8. मातृभाषयाम् अर्थविस्तारं कुरुत

(1) भगवन् किमुपादेयं गुरुवचनम्, हेयमपि च किमकार्यम्।
को गुरुरधिगततत्त्वः, शिष्यहितायोद्यतः सततम् ॥

(2) यथा नयति कैलासं नगं गानसरस्वती।
तथा नयति कैलासं न गङ्गा न सरस्वती ॥

प्रवृत्ति

- पाठ में आने वाली पहेली के समान कोई एक अन्य पहेली ढूँढ़कर लिखिए।
- शब्द को अलग-अलग तरह से अलग करने पर दो अर्थ प्राप्त होते हैं, इसी तरह अलग-अलग भाषा के तीन शब्द ढूँढ़िए और उनके अर्थ लिखिए।

•

19. सत्यं मयूरः

संस्कृत रूपक के दस प्रकार हैं। उनमें से एक प्रकार प्रहसन है। ये प्रहसन एकांकी होते हैं और उनकी कथावस्तु एक दिन जितनी मर्यादित होती है। संस्कृत साहित्य में ऐसे जो अनेक प्रहसन लिखे गए हैं, उनमें सबसे अधिक प्रसिद्धि 'भगवदज्जुकीयम्' नामक प्रहसन को मिली है। कुछ विद्वानों के मतानुसार इसके रचयिता बोधायन नामक कवि हैं, जबकि कुछ विद्वान इस रचना को बोधायन की नहीं, बल्कि किसी अज्ञात कवि की मानते हैं। इसका रचनाकाल लगभग ई.स. की चौथी शताब्दी है। प्रस्तुत नाट्यांश इसी 'भगवदज्जुकीयम्' प्रहसन में से संपादित करके लिया गया है।

गरीब परिवार में जन्म लेने वाला शांडिल्य सरलता से खाने को मिल जाएगा, ऐसी भावना से घर छोड़ देता है और बौद्ध साधू बन जाता है। परन्तु यहाँ तो बार-बार उपवास करना पड़ता था, जिससे वह शांडिल्य बौद्ध साधु का वेश छोड़कर एक दूसरे पहुँचे हुए योगी का शिष्य बन जाता है। यहाँ भी उसका ध्यान खाने में ही रहता है, परन्तु उसके ये गुरु हमेशा पढ़ने के लिए ही कहते हैं। रोज भिक्षा लेने के लिए नगर में आने वाले ये गुरु-शिष्य एक दिन समय से पहले नगर में आ गए। समय का महत्त्व समझने वाले गुरु अपने शिष्य को इस समय दरम्यान रास्ते में आए बगीचे में बैठकर थोड़ा पढ़ने के लिए कहते हैं। दोनों लोग बगीचे में प्रवेश करते हैं, उसी समय का दृश्य इस नाट्यांश में है।

शांडिल्य की बहानाबाजी हास्य उत्पन्न करती है। इस संवाद पर से इस बात का ख्याल आता है कि बचपन में माता की कही बातों का कितना गंभीर प्रभाव मनुष्य के जीवन पर पड़ता है। मनुष्य चाहे जितना बड़ा हो जाए तो भी माता द्वारा कही बातों से उसमें जो संस्कार पड़ जाते हैं, वे दूर नहीं हो सकते हैं। साथ ही विद्याध्ययन किसलिए करना चाहिए इस प्रश्न का उत्तर भी यहाँ आने वाले संवादों से मिलता है।

शाण्डिल्यः – भो भगवन् ! इदमुद्यानम्।

परिव्राजकः – प्रविश अग्रतः।

शाण्डिल्यः – भगवान् एव पुरतः प्रविशतु। अहं पृष्ठतः प्रविशामि।

परिव्राजकः – किमर्थम्।

शाण्डिल्यः – पौराणिक्याः मम मातुः श्रुतम् अशोकपल्लवान्तरनिरुद्धो व्याघ्रः प्रतिवसति। तत् भगवानेव पुरतः प्रविशतु अहं पृष्ठतः प्रविशामि।

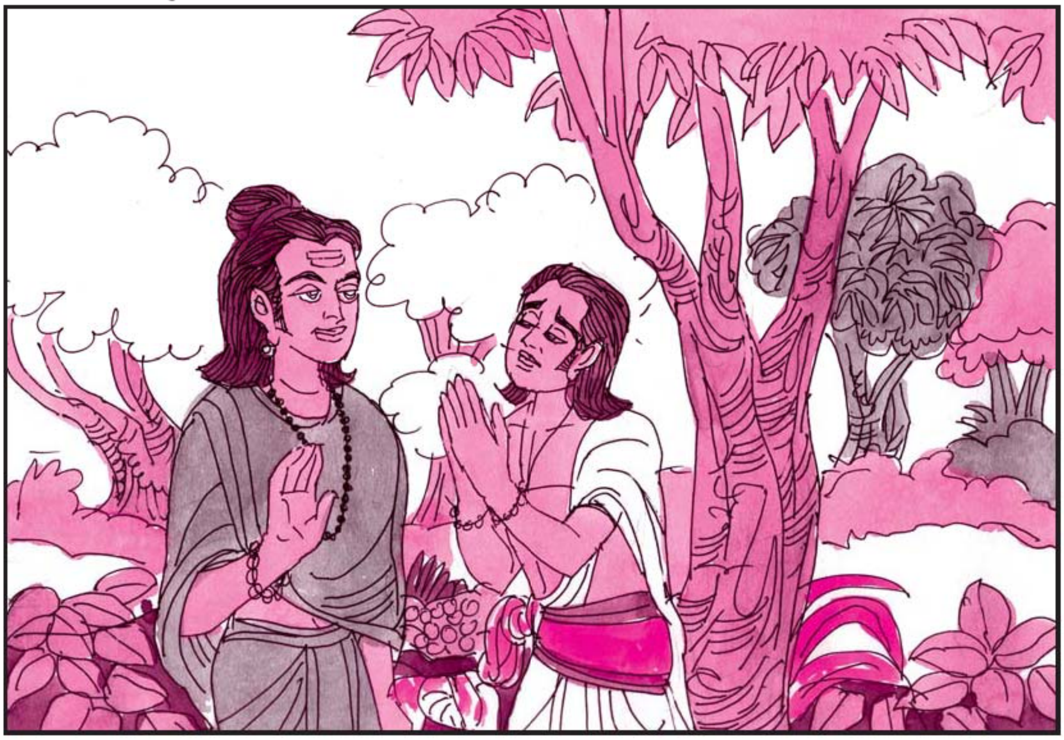

परिव्राजकः – बाढम्। (प्रविशति।)

(ततः प्रविशति शाण्डिल्यः।)

शाण्डिल्यः – अविहा ! व्याघ्रेण गृहीतोऽस्मि। मोचयथ मां व्याघ्रमुखात्। अनाथ इव व्याघ्रेण खादितोऽस्मि। इदं खलु रुधिरं प्रस्रवति कण्ठात्।

परिव्राजकः – शाण्डिल्य ! न भेतव्यं, न भेतव्यम्। मयूरः खलु एषः।

शाण्डिल्यः – सत्यं मयूरः।

परिव्राजकः – अथ किम्। सत्यं मयूरः।

शाण्डिल्यः – यदि मयूरः उद्घाटयामि अक्षिणी।

परिव्राजकः – छन्दतः।

शाण्डिल्यः – अविधा ! दास्याः पुत्रो व्याघ्रो मद्भयेन मयूररूपं गृहीत्वा पलायते। ही ही ! चम्पक-कदम्ब-सप्तपर्ण-चन्दन-तगर-खदिर-कदलीसमवकीर्णं मालती-लता-मण्डप-मण्डितं सुखावहमहो रमणीयं खलु इदम् उद्यानम्।

परिव्राजकः – मूर्ख ! क्षणे क्षणे क्षीयमाणे शरीरे किं ते रमणीयम्। आगच्छ वत्स ! पठ तावत्।

शाण्डिल्यः – न तावत् पठिष्यामि।

परिव्राजकः – किमर्थम् ?

शाण्डिल्यः – पठनस्य तावत् अर्थं ज्ञातुम् इच्छामि।

परिव्राजकः – पठितपाठैः अपि कालान्तरविज्ञेया भवन्ति पठनार्थाः। तस्मात् पठ तावत्।

शाण्डिल्यः – पठनेन किं भविष्यति ?

परिव्राजकः – शृणु – पठनेन विना न प्राप्यते विद्या।

न विद्यया विना सौख्यं नराणां जायते ध्रुवम्।

अतो धर्मार्थमोक्षेभ्यो विद्याभ्यासं समाचरेत्॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) शाण्डिल्यः इस नाम का शिष्य **व्याघ्रः** बाघ **मयूरः** मोर

(स्त्रीलिंग) पौराणिकीः पुराणों का अध्ययन करने वाली, पुराण को जानने वाली

(नपुंसकलिंग) उद्यानम् उपवन, बाग **रुधिरम्** लहू, रक्त

विशेषण : सुखावहम् रमणीयम् (उद्यानम्) सुख का वहन करने वाला, पसंद आए वैसा – आनन्दित कर दे ऐसा बाग **क्षीणमाणे (शरीरे)** दुर्बल होते शरीर में, क्षीण होते शरीर में

अव्यय : अग्रतः आगे से **पुरतः** सामने से **पृष्ठतः** पीछे से **अविहा** दुःख मिश्रित आश्चर्य को व्यक्त करने वाला अव्यय, हाय रे ! **अथ किम्** हाँ तो, तो क्या **छन्दतः** इच्छा के अनुसार **अविधा** दुःख मिश्रित आश्चर्य को व्यक्त करने वाला (शब्द) अव्यय, हाय रे! **तावत्** उतना, उसके अनुसार

समास : अशोकपल्लवान्तरनिरुद्धः (अशोकस्य पल्लवः (अशोकपल्लवः, षष्ठी तत्पुरुष), अशोकपल्लवस्य अन्तरम् (अशोकपल्लवान्तरम्, षष्ठी तत्पुरुष), अशोकपल्लवान्तरे निरुद्धः – सप्तमी तत्पुरुष)। व्याघ्रमुखात् (व्याघ्रस्य मुखम्, तस्मात् – षष्ठी तत्पुरुष))। मद्भयेन (मत् भयम्, तेन – पञ्चमी तत्पुरुष)। मयूररूपम् (मयूरस्य रूपम् – षष्ठी तत्पुरुष)। चम्पक-कदम्ब-सप्तपर्ण-चन्दन-तगर-खदिर-कदलीसमवकीर्णम् (चम्पकः च कदम्बः च सप्तपर्णः च चन्दनः च तगरः च खदिरः च कदली च चम्पक-कदम्ब-सप्तपर्ण-चन्दन-तगर-खदिर-कदल्यः (इतरेतर द्वन्द्व), ताभिः समवकीर्णम् – तृतीया तत्पुरुष)। मालती-लता-मण्डप-मण्डितम् मालतीलतायाः मण्डपम् (-मालतीलतामण्डपम्, षष्ठी तत्पुरुष), मालतीलतामण्डपेन मण्डितम् – तृतीया तत्पुरुष)। पठितपाठैः (पठितः पाठः येन – पठितपाठः, तैः – बहुव्रीहि)। कालान्तरविज्ञेया (कालस्य अन्तरम् (कालान्तरम्, षष्ठी तत्पुरुष), कालान्तरे विज्ञेया – सप्तमी तत्पुरुष)। धर्मार्थमोक्षेभ्यः (धर्मः च अर्थः च मोक्षः च – धर्मार्थमोक्षाः, तेभ्यः – इतरेतर द्वन्द्व)। विद्याभ्यासः (विद्यायाः अभ्यासः – षष्ठी तत्पुरुष)।

कृदन्त : (क.भू.कृ.) गृहीत ग्रहण किया, पकड़ा, लिया **खादित** खाया हुआ, खा लिया **(वि.कृ) भेतव्यम्** ड्ररना चाहिए, डरने योग्य **रमणीयम्** सुन्दर, आनन्दित करने वाला

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपदी) आ + गम् > गच्छ् (आगच्छति) प्रवेश करना, अन्दर आना **पठ् (पठति)** पढ़ना, पाठ करना **इष् > इच्छ् (इच्छति)** चाहना, इच्छा करना

छठा गण : (परस्मैपदी) प्र + विश् (प्रविशति) प्रवेश करना

विशेष

1. शब्दार्थ : अशोकपल्लवान्तरनिरुद्धो व्याघ्रः अशोक के पत्तों के पीछे टिक कर, रुका हुआ-छिपा हुआ बाघ **प्रतिवसतीति** रहता है ऐसा, निवास करता है ऐसा **तत्** इसलिए **बाढम्** ठीक है **व्याघ्रेण गृहीतोऽस्मि** बाघ ने मुझे पकड़ लिया है, बाघ के द्वारा मैं पकड़ लिया गया हूँ **मोचयथ मां व्याघ्रमुखात्** बाघ के मुख में से मुझे छुड़वाइए **अनाथ इव** अनाथ की तरह **व्याघ्रेण खादितोऽस्मि** शेर ने मुझे खा लिया है, बाघ के द्वारा मैं खा लिया गया हूँ **रुधिरं प्रस्रवति** रक्त बह रहा है **कण्ठात्** गले में से, कंठ में से **मयूरः खल्वेषः** यह तो सच में मोर है **सत्यं मयूरः** सच में मोर है ? **यदि मयूरः उद्घाटयाम्यक्षिणी** यदि मोर ही है तो मैं अपनी आँखें खोलता हूँ **दास्याः पुत्रो व्याघ्रः** दासी का पुत्र ऐसा बाघ (संस्कृत भाषा में दास्याः पुत्रः – इस शब्द का प्रयोग किसी व्यक्ति की ओर हेय भावना व्यक्त करने के लिए किया जाता है।) **मद्भयेन** मेरे डर से, मेरे भय से **मयूररूपं गृहीत्वा** मोर का रूप धारण करके **पलायते** भाग जाता है, भाग गया **ही ही !** ओह हो **चम्पक-कदम्ब-सप्तपर्ण-चन्दन-तगर-खदिर-कदलीसमवकीर्णम्** चम्पक, कदम, सप्तपर्णी, चन्दन, तगर, खैर और केले से भरे हुए **मालती-लता-मण्डप-मण्डितम्** मालती की लताओं से सुशोभित मंडप **मूर्ख** अरे मूर्ख **क्षणे क्षणे क्षीयमाणे शरीरे** क्षण-क्षण क्षीण होने वाले शरीर में, जब क्षण-क्षण में शरीर क्षीण हो रहा है तब **किं ते रमणीयम्** तुम्हारे लिए क्या रमणीय होगा ? **न तावत् पठिष्यामि** तब तो मैं नहीं पढ़ूँगा **ज्ञातुम् इच्छामि** जानने का इच्छुक हूँ, जिज्ञासु हूँ **पठितपाठैः अपि** पाठ को जो लोग पढ़ चुके हैं, उन लोगों को भी **कालान्तरविज्ञेयाः** समय आने पर जानकारी में आएँ ऐसे **पठनार्थाः** पढ़ने का अर्थ **तस्मात् पठ तावत्** इस लिए तुम पढ़ो **पठनेन किं भविष्यति** पढ़ने से क्या होगा ? **पठनेन विना** पढ़े बिना **न प्राप्यते विद्या** विद्या प्राप्त नहीं होती **विद्यया विना** विद्या बिना **सौख्यम्** सुख का भाव, सुखी **ध्रुवम्** निश्चित

2. सन्धि : अशोकपल्लवान्तरनिरुद्धो व्याघ्रः (अशोकपल्लवान्तरनिरुद्धः व्याघ्रः)। प्रतिवसतीति (प्रतिवसति इति)। गृहीतोऽस्मि (गृहीतः अस्मि)। अनाथ इव (अनाथः इव)। खादितोऽस्मि (खादितः अस्मि)। पुत्रो व्याघ्रो मद्भयेन (पुत्रः व्याघ्रः मद्भयेन)। अतो धर्मार्थमोक्षेभ्यो विद्याभ्यासम् (अतः धर्मार्थमोक्षेभ्यः विद्याभ्यासम्)।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्य: विकल्पेभ्य: समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) शाण्डिल्य: उद्याने कस्मात् भयम् अनुभवति ? ◯

(क) चौरात् (ख) सिंहात् (ग) व्याघ्रात् (घ) परिव्राजकात्

(2) क्षणे क्षणे .... शरीरे किं रमणीयम् ? ◯

(क) नूतने (ख) क्षीयमाणे (ग) जायमाने (घ) वर्धमाने

(3) केन विना जनानां सौख्यं न भवति ? ◯

(क) शक्त्या (ख) सम्पत्त्या (ग) विद्यया (घ) बुद्ध्या

(4) पुरत: शब्दस्य विरुद्धार्थक: क: शब्द: ? ◯

(क) अग्रत: (ख) पृष्ठत: (ग) अनन्तरम् (घ) अपर:

(5) शाण्डिल्यस्य .... रुधिरं प्रस्रवति। ◯

(क) कण्ठात् (ख) कण्ठे (ग) कण्ठम् (घ) कण्ठेन

(6) व्याघ्र: मयूररूपं .... पलायते। ◯

(क) ग्रहीतुम् (ख) गृहीतम् (ग) ग्राह्यम् (घ) गृहीत्वा

(7) यदि मयूर: उद्घाटयामि अक्षिणी। अत्र अक्षिणी-शब्दस्य स्थाने उचितं शब्दं चिनुत। ◯

(क) नेत्राणि (ख) नेत्रे (ग) नेत्रम् (घ) नेत्रस्य

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषयाम् उत्तरत ।

(1) कुत्र निरुद्ध: व्याघ्र: उद्याने प्रतिवसति ?

(2) उद्यानं क: पुरत: प्रविशति ?

(3) शाण्डिल्य: कं व्याघ्रं मत्वा आक्रोशति ?

(4) विद्यां विना मनुष्याणां किं न जायते ?

3. अधोलिखितानां कृदन्तानां प्रकारं लिखत ।

(1) श्रुतम् .... (2) निरुद्ध: ....

(3) भेतव्यम् .... (4) विज्ञेया: ....

(5) रमणीयम् ....

4. समासप्रकारं लिखत ।

(1) व्याघ्रमुखात्	....	(2) धर्मार्थमोक्षेभ्यः	....
(3) पठितपाठैः	....	(4) मयूररूपम्	....
(5) पठनार्थाः	....		

5. वचनानुसारं धातुरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

(1)	प्रविश	....	....
(2)	....	....	प्रस्रवन्ति
(3)	पठ	पठतम्	....
(4)	समाचरेत्	....	....

6. मातृभाषयाम् उत्तराणि लिखत ।

(1) शांडिल्य उद्यान में प्रवेश करते समय क्यों भय का अनुभव करता है ?

(2) बाघ ने पकड़ लिया है यह मानकर शांडिल्य क्या चिल्लाता है ?

(3) शांडिल्य द्वारा किए गए उद्यान का वर्णन लिखिए ?

(4) पढ़ने का अर्थ कौन कब समझ सकता है ?

(5) विद्याभ्यास क्यों करना चाहिए ?

प्रवृत्ति

- संस्कृत भाषा में इस प्रकार के अन्य प्रहसन और उनके रचयिता के नाम की सूची बनाइए।
- अपने शहर या गाँव के बगीचे में जाइए और संक्षिप्त में उसके विषय में लिखिए।

•

20. तथैव तिष्ठति

जिस तरह प्रत्येक फल का अपना विशिष्ट रस होता है, उसी तरह संस्कृत के प्रत्येक कवि द्वारा रचित हर एक पद्य में अपना विशिष्ट रस होता है। फिर भी हमारी व्यक्तिगत रुचि के कारण किसी फल को अधिक पसंद करते हैं। यह व्यवहार जिस तरह किसी फल के महत्त्व को हानि नहीं पहुँचाता, उसी तरह महाकवियों के कुछ पद्य को पसंद करके रसास्वाद करने का भाव प्रस्तुत पाठ में होने से उन कवियों के अन्य पद्यों का महत्त्व किसी तरह कम नहीं होता है।

इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर यहाँ अलग-अलग कालखंड में हो गए और नाटक, महाकाव्य, कथा, आख्यायिका जैसे विविध साहित्य स्वरूप की काव्यरचना करके साहित्यजगत् में अमर हो गए छः महाकवियों की एक-एक रचना पसंद करके यहाँ प्रस्तुत की गई है।

पहला श्लोक महाकवि भास के एकांकी 'कर्णभार' में से लिया गया है। उसमें दान और होम की महिमा दर्शाई गई है। दूसरा श्लोक महाकवि कालिदास के 'मालविकाग्निमित्र' में से है, जिसमें दूसरे के बहकावे में आए बिना अपनी बुद्धि से अच्छे-बुरे का विचार करके निश्चय करने के लिए कहा गया है। भवभूति के 'उत्तररामचरित' में से लिए गए तीसरे श्लोक में महापुरुषों के मन की जिस तरह से लाक्षणिकता का वर्णन किया गया है, उससे पता चलता है कि प्रत्येक महापुरुष का मन वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल होता है। चौथा श्लोक गद्यकार बाण की प्रसिद्ध रचना है, उसमें दुष्ट मनुष्य के स्वभाव की वास्तविकता का वर्णन है। पाँचवाँ श्लोक नाटककार शूद्रक के 'मृच्छकटिक' में से पसंद किया गया है। उसमें दरिद्र मनुष्य के हृदय का दयाजनक दु:ख वर्णित है। अंतिम श्लोक रविगुप्त नामक कवि की रचना है। जिसमें सज्जन की प्रशंसा की गई है। इस वर्णन में सूचित वास्तविकता आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। वह मनुष्य जीवन का हिस्सा बनना चाहिए, तभी काव्यशिक्षा सफल हो सकती है।

शिक्षा क्षयं गच्छति कालपर्ययात्
सुबद्धमूलाः निपतन्ति पादपाः।
जलं जलस्थानगतं च शुष्यति
हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति ॥ 1 ॥ – भासस्य ॥

पुराणमित्येव न साधु सर्वं
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते
मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः ॥ 2 ॥ – कालिदासस्य ॥

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति ॥ 3 ॥ – भवभूतेः ॥

अन्यस्माल्लब्धपदो नीचः प्रायेण दु:सहो भवति।
रविरपि न दहति तादृग् यादृग् दहति वालुकानिकरः ॥ 4 ॥ – बाणस्य ॥

सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते
घनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम्।
सुखात्तु यो याति नरो दरिद्रतां
धृतः शरीरेण मृतः स जीवति ॥ 5 ॥ – शूद्रकस्य ॥

सुजनो न याति वैरं परहितनिरतो विनाशकालेऽपि।
छेदेऽपि चन्दनतरुः सुरभयति मुखं कुठारस्य ॥ 6 ॥ – रविगुप्तस्य ॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिंग) क्षयः विनाश, नाश **पादपः** वृक्ष, पेड़ (पाद अर्थात् पैर से–मूल से पानी पीता है, अतः वृक्ष पादप कहा जाता है।) **मूढः** मूर्ख, कम बुद्धिवाला **रविः** सूर्य **बालुकानिकरः** बालू का ढेर **सुजनः** सज्जन, अच्छे व्यक्ति **चन्दनतरुः** चन्दन का वृक्ष

(स्त्रीलिंग) शिक्षा शिक्षण, शिक्षा **दरिद्रता** गरीबी, दारिद्र्य

(नपुंसकलिंग) मुखम् नोंक, धार, अग्रभाग **पदम्** = स्थान, पदवी

सर्वनाम : अन्यतरत् (नपुं.) दोनों में से कोई एक **अन्यः** (पुं.) दूसरा, पराया व्यक्ति

विशेषण : सुबद्धमूलाः (पादपाः) अच्छी तरह से फैली हुई जड़वाले (वृक्ष) **जलस्थानगतम् (जलम्)** पानी का स्थान (तालाब या समुद्र) में रहने वाला (पानी) **पुराणम् (काव्यम्)** प्राचीन-पुराना (काव्य) **नवम् (काव्यम्)** नया, ताजा (तुरन्त रचा गया काव्य) **लब्धपदः (नीचः)** जिसने पद प्राप्त किया है ऐसा (नीच व्यक्ति, गुणहीन व्यक्ति) **नीचः** नीच, दुष्ट मानव **हुतम्** (यज्ञ की अग्नि में) होमा हुआ **दत्तम्** (किसी जरूरतमंद इंसान को) दिया हुआ **पुराणम्** पुराना, प्राचीन

अव्यय : तथैव वैसे का वैसा, जैसा है वैसा ही **प्रायेण** अधिकतर

समास : कालपर्ययात् (कालस्य पर्ययः, तस्मात् – षष्ठी तत्पुरुष)। सुबद्धमूलाः (सुबद्धानि मूलानि येषां ते – बहुव्रीहि)। जलस्थानगतम् (जलस्य स्थानम् (–जलस्थानम्, षष्ठी तत्पुरुष), जलस्थानं गतम् –द्वितीया तत्पुरुष)। पर-प्रत्यय-नेय-बुद्धिः (परेषां प्रत्ययः (परप्रत्ययः, षष्ठी तत्पुरुष), परप्रत्ययेन नेया (–परप्रत्ययनेया, तृतीया तत्पुरुष), परप्रत्ययनेया बुद्धिः यस्य सः – बहुव्रीहि)। लोकोत्तराणाम् (लोकेभ्यः उत्तराः, तेषाम् – पञ्चमी तत्पुरुष)। लब्धपदः (लब्धं पदं येन सः – बहुव्रीहि)। वालुकानिकरः (वालुकानां निकरः – षष्ठी तत्पुरुष)। घनान्धकारेषु (घनः चासौ अन्धकारः, तेषु – कर्मधारय)। दीपदर्शनम् (दीपस्य दर्शनम् – षष्ठी तत्पुरुष)। परहितनिरतः (परेभ्यः हितम् (परहितम्, चतुर्थी तत्पुरुष), परहितेषु निरतः – सप्तमी तत्पुरुष)। विनाशकाले (विनाशस्य कालः, तस्मिन् – षष्ठी तत्पुरुष)। चन्दनतरुः (चन्दनस्य तरुः – षष्ठी तत्पुरुष)।

कृदन्त : (क.भू.कृ.) धृतः धारण किया हुआ **मृतः** मरा हुआ **(सं.भू.कृ.) परीक्ष्य** जाँचकर, परीक्षण करके, परीक्षा करके **अनुभूय** अनुभव करके **(हे.कृ.) विज्ञातुम्** जानने के लिए

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपदी) नि + पत् (निपतति) नीचे गिरना, गिरना **दह् (दहति)** जलना **जीव् (जीवति)** जीना, जीवित रहना

(आत्मनेपदी) भज् (भजते) भजना (ईश्वर की भक्ति करना) **शुभ् (शोभते)** सुशोभित होना

विशेष

1. शब्दार्थ : कालपर्ययात् समय के बदलाव से **निपतन्ति** नीचे गिर जाते हैं **साधु** योग्य, अच्छा **अवद्यम्** निन्दा न की जा सके ऐसा **पर-प्रत्यय-नेय-बुद्धिः** पर अर्थात् दूसरे के प्रत्यय अर्थात् ज्ञान से, विश्वास से नेय संचालित

बुद्धिवाला **लोकोत्तराणाम्** लोक-संसार से ऊपर रहने वाले (महापुरुषों का) सामान्य लोगों से उत्तम कक्षा के व्यक्ति **विज्ञातुम् अर्हति** जाना जा सकता है, जानने योग्य है **अन्यस्मात्** दूसरे व्यक्ति के पास से **यादृग् दहति** जैसे जलता है **घनान्धकारेषु** गहरे अंधकार में **दीपदर्शनम्** दीपक का दर्शन **परहितनिरतः** परहित में संलग्न, दूसरों के हित में रत **छेदे अपि** काट दिया जाए तो भी **सुरभयति** सुगंधयुक्त बनाता है **कुठारस्य** कुल्हाड़ी (अर्थात् लकड़ी काटने का औजार) को

2. सन्धि : पुराणमित्येव (पुराणम् इति एव)। न चापि (न च अपि)। नवमित्यवद्यम् (नवम् इति अवद्यम्)। वज्रादपि (वज्रात् अपि)। कुसुमादपि (कुसुमात् अपि)। को नु (कः नु)। अन्यस्माल्लब्धपदो नीचः (अन्यस्मात् लब्धपदः नीचः)। दुःसहो भवति (दुःसहः भवति)। रविरपि (रविः अपि)। दुःखान्यनुभूय (दुःखानि अनुभूय)। घनान्धकारेष्विव (घनान्धकारेषु इव)। सुखात्तु (सुखात् तु)। यो याति (यः याति)। नरो दरिद्रताम् (नरः दरिद्रताम्)। सुजनो न (सुजनः न)। परहितनिरतो विनाशकालेऽपि (परहितनिरतः विनाशकाले अपि)। छेदेऽपि (छेदे अपि)।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) शिक्षा कस्मात् कारणात् क्षयं गच्छति ? ◯

(क) अवस्थापर्ययात् (ख) कालपर्ययात् (ग) बुद्धिपर्ययात् (घ) गुरुपर्ययात्

(2) सन्तः किं कृत्वा अन्यतरत् भजन्ते ? ◯

(क) परीक्ष्य (ख) दृष्ट्वा (ग) अनुभूय (घ) विचार्य

(3) कीदृशः नीचः प्रायेण दुःसहो भवति ? ◯

(क) लब्धपदः (ख) लब्धधनः (ग) लब्धयशाः (घ) लब्धविद्यः

(4) दुःखानि अनुभूय किं शोभते ? ◯

(क) धर्मः (ख) धनम् (ग) विद्या (घ) सुखम्

(5) सुजनो न याति वैरं .... विनाशकाले अपि। ◯

(क) परहितनिरतः (ख) परकर्मनिरतः (ग) परधर्मनिरतः (घ) परहानिनिरतः

2. एकेन वाक्येन संस्कृतभाषयाम् उत्तरत ।

(1) सुबद्धमूलाः पादपाः कस्मात् कारणात् निपतन्ति ?

(2) मूढः जनः कीदृशः भवति ?

(3) लोकोत्तराणां चेतांसि कस्मादपि मृदूनि भवन्ति ?

(4) सुखं कदा शोभते ?

3. सन्धिविच्छेदं कुरुत ।

(1) नवमित्यवद्यम्। ....

(2) कुसुमादपि। ....

(3) अन्यस्माल्लब्धपदो नीचः। ....

(4) यो याति। ....

(5) विनाशकालेऽपि। ....

4. समासप्रकारं लिखत ।

(1) सुबद्धमूलः .... (2) लोकोत्तराणाम् ....

(3) लब्धपदः .... (4) वालुकानिकरः ....

(5) परहितनिरतः ....

5. रिक्तस्थाने विशेष्यानुसारं योग्यं कोष्ठगतं विशेषणपदं लिखत ।

(1) .... पादपाः निपतन्ति। (सुबद्धमूल)

(2) .... काव्यम् अवद्यं भवति इति न। (नव)

(3) लोकोत्तराणां चेतांसि वज्रादपि .... भवन्ति। (कठोर)

(4) नीचः प्रायेण .... भवति। (दु:सह)

(5) .... सुजनः विनाशकालेऽपि वैरं न याति। (परहितनिरत)

6. मातृभाषया संक्षिप्तं टिप्पणं लिखत ।

(1) मूर्ख और सज्जन का भेद

(2) नीच व्यक्ति की मानसिकता

(3) सुजन की सुजनता का स्वरूप

7. अर्थविस्तार कीजिए।

(1) शिक्षा क्षयं गच्छति कालपर्ययात्
सुबद्धमूलाः निपतन्ति पादपाः।
जलं जलस्थानगतं च शुष्यति
हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति ॥

(2) वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति ॥

(3) सुखं हि दु:खान्यनुभूय शोभते
घनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम्।
सुखात्तु यो याति नरो दरिद्रतां
धृतः शरीरेण मृतः स जीवति ॥

प्रवृत्ति

- महाकवि कालिदास के महाकाव्य में से आपकी पसंद का कोई एक पद्य लिखिए।
- कर्णभार की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

•

अभ्यास 1 : पुनरावर्तन और क्रियापद परिचय

(1) पुनरावर्तन

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) अंश: क्रीडनकानि क्रीडति।

(2) नित्या प्रात:काले विद्यालयं गच्छति।

(3) दिव्य: हस्ते चषकम् आदाय जलं पिबति।

कक्षा नौ में उपर्युक्त वाक्य-रचनाओं का आप अध्ययन कर चुके हैं। इस प्रकार की वाक्य रचना से आगे की वाक्य रचना पर विचार करें, उससे पहले थोड़ा पुनरावर्तन कर लें।

उपर्युक्त वाक्यों में 1. क्रीडति 2. गच्छति और 3. पिबति – ये तीन क्रियापद हैं। ये क्रियापद क्रमश: क्रीड्, गम् > गच्छ् और पा > पिब् – प्रथम गण के धातुओं के वर्तमान काल, प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष), एक वचन के हैं।

इन क्रियापदों के साथ 'अंश:' कर्ताकारक (प्रथमा विभक्ति) और क्रीडनकानि (द्वितीया विभक्ति) कर्मकारक – इस तरह दो कारक पद प्रयुक्त हुए हैं। (इस तरह यहाँ वाक्य में मात्र तीन पद हैं।) दूसरे वाक्य में 'गच्छति' क्रियापद के साथ 'नित्या' कर्ताकारक (सप्तमी विभक्ति) और 'विद्यालयम्' कर्मकारक (द्वितीया विभक्ति) है। (इस तरह यहाँ वाक्य में चार पद हैं) तीसरे वाक्य में 'पिबति' क्रियापद के साथ 'दिव्य:' कर्ताकारक (प्रथमा विभक्ति) 'हस्ते' अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति) 'आदाय' (उपक्रिया) अव्यय पद है। 'पिबति' यह मुख्य क्रियापद के कर्मकारक के रूप में 'चषकम्' है और इसीलिए वह द्वितीया विभक्ति में प्रयुक्त हुआ है। इसी तरह 'आदाय' गौण क्रियापद के कर्मकारक के रूप में 'जलम्' है और इसीलिए उसे भी द्वितीया विभक्ति में रखा गया है। (इस तरह यहाँ वाक्य में छ: पद हैं।)

इस तरह प्रत्येक क्रिया के साथ उसका कारक परिवार जुड़ा होता है। संक्षेप में कहना हो तो कह सकते हैं कि प्राथमिक स्तर की वाक्यरचना में अधिकांशत: एक क्रियापद और उसके साथ कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण – इनमें से कुछ अथवा सभी कारकपद प्रयुक्त होते हैं। कभी-कभी तो सभी कारक पदों के साथ संबंधवाचक पद भी प्रयुक्त होते हैं। इस तरह, छ: कारक पद और उनके साथ के संबंध पद – इन सातों के साथ प्रयुक्त होने वाली सात विभक्तियों के रूप आप कक्षा – 9 में पढ़ चुके हैं।

अब, निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) (क) स: वेदं पठति।	(ख) त्वं वेदं पठसि।	(ग) अहं वेदं पठामि।
(2) (क) स: वेदम् अपठत्।	(ख) त्वं वेदं अपठ:।	(ग) अहं वेदम् अपठम्।
(3) (क) स: वेदं पठिष्यति।	(ख) त्वं वेदं पठिष्यसि।	(ग) अहं वेदं पठिष्यामि।

उपर्युक्त वाक्य समूह में (क) वर्ग के वाक्यों में कर्ता (स:) और कर्म (वेदम्) के रूप में प्रयुक्त पद एक समान हैं। जबकि क्रियापद 'पठ्' धातु के होने पर भी पठति, अपठ: और पठिष्यति, इस रूप में कुछ भिन्न-भिन्न हैं। ऐसी ही भिन्नता (ख) वर्ग और (ग) वर्ग के वाक्यों में देख सकते हैं। इसका कारण 'पठ'् धातु के पीछे प्रयुक्त काल है। इसी प्रकार (क) वर्ग (ख) वर्ग और (ग) वर्ग के वाक्यों में एक समान काल प्रयुक्त होने पर भी पठति, पठसि, और पठामि। इस रूप से उनके रूप भी भिन्न-भिन्न हैं। इसका कारण पुरुषों का परिवर्तन है। यहाँ क्रमश: अन्यपुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष प्रयुक्त हुआ है, इसी कारण से रूप भी अलग-अलग हैं। उसी तरह नीचे के दूसरे कुछ वाक्य पढ़िए :

(1) (क) स: वेदं पठति।	(ख) तौ वेदं पठत:।	(ग) ते वेदं पठन्ति।
(2) (क) स: वेदम् अपठत्।	(ख) तौ वेदं अपठताम्।	(ग) ते वेदम् अपठन्।
(3) (क) स: वेदं पठिष्यति।	(ख) तौ वेदं पठिष्यत:।	(ग) ते वेदं पठिष्यन्ति।

इन वाक्यों में प्रयुक्त सभी क्रियापद 'पठ्' धातु के हैं। प्रथम क्रमांक में आए वाक्यों में 'क' वर्ग का क्रियापद

अन्यपुरुष एकवचन का है, जबकि 'ख'-वर्ग का क्रियापद अन्य पुरुष का होने के साथ द्विवचन का है। इस तरह यहाँ प्रथम क्रम में स्थित वाक्य काल की दृष्टि से और पुरुष की दृष्टि से एक समान होने पर भी एक दूसरे से भिन्न हैं, इसका कारण क्रियापद में रहा वचन परिवर्तन है।

इस प्रकार के प्रत्येक क्रियापद वाले वाक्य में काल, पुरुष और वचन अनुसार क्रियापद के रूपों में अपेक्षित परिवर्तन होता रहता है। इस परिवर्तन के समय जो नियम काम करते हैं उन नियमों को कक्षा 9 में आप सीख चुके हैं। आप जानते हैं कि संस्कृत भाषा में जब किसी क्रियापद का उपयोग किया जाता है तब सर्वप्रथम तो उस क्रियापद को प्रकट करने वाला धातु जानना पड़ता है और फिर उस धातु में प्रत्यय जोड़ना पड़ता है। ऐसे प्रत्यय को जोड़ते समय 1. काल, 2. पुरुष और 3. वचन-इन तीनों बातों का ध्यान रखना पड़ता है।

उदाहरण स्वरूप 'ऋषि वेद को पढ़ते हैं' इस वाक्य में 'पढ़ते हैं' क्रियापद का संस्कृत में अनुवाद करते समय सर्वप्रथम उस पढ़ने की क्रिया को व्यक्त करने वाला (पठ्) धातु जानना होता है और उसके पश्चात् वह किस गण का है, किस काल, पुरुष और वचन में प्रयुक्त हुआ है, इसे जानना पड़ता है। इतनी जानकारी प्राप्त करने के बाद उसके अनुरूप धातुरूप बना करके वाक्य में प्रयोग किया जाता है। जैसे कि यहाँ प्रयुक्त 'पठ्' धातु प्रथम गण की है और 1. वर्तमान काल 2. अन्यपुरुष 3. एक वचन है। अतः 'पठ्' धातु के साथ प्रथम गण का विकरण प्रत्यय के रूप में 'अ' और 1. वर्तमान काल 2. अन्यपुरुष 3. एक वचन का 'ति' (दोनों एकत्र करे तो 'अति') प्रत्यय जोड़ करके 'पठति' - इस रूप में क्रियापद प्रयुक्त होता है। इसी तरह 'पठ्' धातु को ह्यस्तन भूतकाल, मध्यम पुरुष और एक वचन में प्रयोग करना हो, तो 'अपठः'। ऐसा (ह्यस्तन भूतकाल, मध्यम पुरुष और एकवचन का) क्रियापद प्रयुक्त करना पड़ेगा। ठीक इसी तरह 'पठ्' धातु को सामान्य भविष्य काल, उत्तम पुरुष और एकवचन में प्रयोग करना हो, तो 'पठिष्यामि'। ऐसा (सामान्य भविष्यकाल, उत्तम पुरुष और एक वचन का) क्रियापद प्रयुक्त करना पड़ता है। इस प्रकार के अलग-अलग काल के रूप भी नवीं कक्षा में आप पढ़ चुके हैं।

(1) क्रियापद परिचय

आइए, अब इतना पुनरावर्तन करने के पश्चात् कुछ नियत धातुओं के आज्ञार्थ (लोट् लकार) और विध्यर्थ (लिङ् लकार) के क्रियापदों का भी अध्ययन करें।

अज्ञार्थ (लोट् लकार)

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) हे बाल ! त्वम् आलस्यं त्यज। (हे बालक। तू आलस छोड़ दे।)

(2) हे प्रभो ! काले पर्जन्यः वर्षतु। (हे प्रभु ! (समय होने पर) काल आए तब वर्षा करना।)

(3) हे बालक ! त्वं शतं जीव। (हे बालक ! तुम सौ वर्ष जिओ।)

उपर्युक्त वाक्यों में सभी रेखांकित पद क्रियापद हैं। ये क्रियापद वर्तमान जैसे किसी काल का अर्थ बताने के लिए नहीं, बल्कि क्रमशः आज्ञा, प्रार्थना और आशीर्वाद के अर्थ को बताने के लिए प्रयुक्त हुए हैं। प्रथम वाक्य (हे बाल ! त्वम् आलस्यं त्यज। हे बालक ! तू आलस छोड़ दे।) में कोई बड़ा व्यक्ति छोटी उम्र के बालक को आज्ञा दे रहा है। द्वितीय वाक्य (हे प्रभो ! काले पर्जन्यः वर्षतु। हे प्रभु ! (समय होने पर) काल आए तब वर्षा करना।) में कोई भक्त भगवान से प्रार्थना कर रहा है। जबकि तृतीय वाक्य (हे बालक ! त्वं शतं जीव। हे बालक ! तुम सौ वर्ष जिओ।) में कोई बड़ा व्यक्ति छोटी उम्र के बालक को आशीर्वाद दे रहा है।

ध्यान रखिए, जिस तरह वर्तमान वगैरह काल का अर्थ कहने के लिए काल, पुरुष और वचन तीनों बातों का ध्यान रखना पड़ता है, उसी तरह आज्ञा वगैरह अर्थ को कहने के लिए अमुक (आज्ञा, प्रार्थना और आशीर्वाद वगैरह जैसा कोई) निश्चित अर्थ, पुरुष और वचन तीनों बातों का ध्यान रखना पड़ता है।

इस तरह संस्कृत भाषा में आज्ञा, प्रार्थना आशीर्वाद वगैरह जैसे अर्थ को कहने के लिए आज्ञार्थ का प्रयोग किया जाता है। इसलिए जब किसी क्रिया के संदर्भ में आज्ञा वगैरह का अर्थ व्यक्त करना हो, तब आज्ञार्थ क्रियापदों का प्रयोग किया जाता है।

(इनमें आज्ञा का अर्थ पहले आने से इन क्रियापदों को आज्ञार्थ (लोट् लकार) के रूप में जाना जाता है।)

अलग-अलग धातुओं के साथ परस्मैपद और आत्मनेपद के आज्ञार्थ (लोट् लकार)के जो मूल प्रत्यय जोड़े जाते हैं, वे इस प्रकार हैं :

आज्ञार्थ (लोट् लकार) (परस्मैपद) के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम
मध्यम पुरुष	(0) - हि	तम्	त
अन्य पुरुष	तु	ताम्	अन्तु

आज्ञार्थ (लोट् लकार) (आत्मनेपद) के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	ऐ	आवहै	आमहै
मध्यम पुरुष	स्व	इथाम् (आथाम्)	ध्वम्
अन्य पुरुष	ताम्	इताम् (आताम्)	अन्ताम् (अताम्)

इन मूल प्रत्ययों को दी गई धातु के साथ जोड़ते समय धातु और इन उपर्युक्त प्रत्ययों के बीच दिए गए गण का विकरण प्रत्यय भी जोड़ना होता है। जैसे कि 'खाद् + अ + तु = खादतु'। (कक्षा 9 में आपने सीखा है कि धातुओं के दस गण हैं। गण के अनुसार विकरण प्रत्यय होता है। आपको यहाँ पहला, चौथा, छठा और दसवाँ - इस तरह चार ही गण के धातुओं के रूप सीखने हैं। इसलिए इन चार गण के विकरण प्रत्ययों का ध्यान रखना है। जैसे कि पहला गण 'अ,' चौथा गण 'य,' छठा गण 'अ' और दसवाँ गण 'अय'।)

गण अनुसार धातुओं के रूप निम्नानुसार हैं :

'पठ्' पढ़ना (पहला गण) आज्ञार्थ (लोट् लकार) (परस्मैपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	पठानि मैं पढ़ूँ।	पठाव हम दोनों पढ़ें।	पठाम हम पढ़ें।
मध्यम पुरुष	पठ तू पढ़े।	पठतम् तुम दोनों पढ़ो।	पठत तुम पढ़ो।
अन्य पुरुष	पठतु वह पढ़े।	पठताम् वे दोनों पढ़ें।	पठन्तु वे पढ़ें।

'लभ्' पाना, प्राप्त करना (पहला गण) आज्ञार्थ (लोट् लकार) (आत्मनेपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
अन्य पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्

इसी तरह प्रथम गण के दूसरी धातुओं के रूप समझ लें। (नियत धातुएँ इस तरह हैं - (परस्मैपद) पठ्, हस्, चल्, खेल्, खाद्, पा, गम्, भू, दृश्, स्था, वस्, जीव्। (आत्मनेपद) लभ्, भाष्, रम्, वन्द्, मुद्, शुभ्।)

'नृत्' नाचना, नृत्य करना (चौथा गण) आज्ञार्थ (लोट् लकार) (परस्मैपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम
मध्यम पुरुष	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
अन्य पुरुष	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु

'विद्' होना (चौथागण) आज्ञार्थ (लोट् लकार) (आत्मनेपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	विद्यै	विद्यावहै	विद्यामहै
मध्यम पुरुष	विद्यस्व	विद्येथाम्	विद्यध्वम्
अन्य पुरुष	विद्यताम्	विद्येताम्	विद्यन्ताम्

इसीतरह चौथे गण के अन्य धातु-रूप समझ लीजिए। (नियत धातुएँ इस तरह हैं – (परस्मैपद) कुप्, नश्, नृत्, क्रुध्, द्रुह्। (आत्मनेपद) बुध्, मन्, युध्, विद्।)

'लिख्' लिखना (छठागण) आज्ञार्थ (लोट् लकार) (परस्मैपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	लिखानि	लिखाव	लिखाम
मध्यम पुरुष	लिख	लिखतम्	लिखत
अन्य पुरुष	लखतु	लिखताम्	लिखन्तु

'मिल्' मिलना (छठा गण) आज्ञार्थ (लोट् लकार) (आत्मनेपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मिलै	मिलावहै	मिलामहै
मध्यम पुरुष	मिलस्व	मिलेथाम्	मिलध्वम्
अन्य पुरुष	मिलताम्	मिलेताम्	मिलन्ताम्

इसी तरह छठे गण के अन्य धातुओं के रूप समझ लीजिए। (नियत धातुए इस प्रकार हैं – (परस्मैपद) लिख्, प्र+विश्। (आत्मनेपद) मुच्, मिल्, विद्, क्षिप्।)

'कथ्' कहना (दसवाँ गण) आज्ञार्थ (लोट् लकार) (परस्मैपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	कथयानि	कथयाव	कथयाम
मध्यम पुरुष	कथय	कथयतम्	कथयत
अन्य पुरुष	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु

'कथ्' कहना (दसवाँ गण) आज्ञार्थ (लोट् लकार) (आत्मनेपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	कथयै	कथयावहै	कथयामहै
मध्यम पुरुष	कथयस्व	कथयेथाम्	कथयध्वम्
अन्य पुरुष	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम्

इसी तरह दसवें गण की अन्य धातुओं के रूप समझ लीजिए। (नियत धातुएँ इस प्रकार हैं – (परस्मैपद-आत्मनेपद) कथ्, गण्, रच्, स्पृह्, पूज्।)

उपर्युक्त धातुओं के रूपों के साथ 'कृ' और 'अस्' धातुओं के परस्मैपद के रूप भी महत्त्वपूर्ण हैं। क्योंकि इन दो धातुओं के रूप अधिक उपयोग किए जाते हैं। इसलिए जानकारी हेतु उन्हें यहाँ दिया जा रहा है :

'कृ' करना, आज्ञार्थ (लोट् लकार) (परस्मैपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
अन्य पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु

'अस्' होना, आज्ञार्थ (लोट् लकार) (परस्मैपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम
मध्यम पुरुष	एधि	स्तम्	स्त
अन्य पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु

विध्यर्थ (लिङ् लकार)

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) प्रातः मन्त्रान् पठेत्। (सुबह मंत्र का पाठ करना चाहिए।)

(2) अतिथिः मध्याह्ने तक्रं पिबेत्। (अतिथि दोपहर में (शायद) छाश पिएँगे।)

(3) जीवेम शरदः शतम्। (हम सौ शरद ऋतुओं तक जिएँ।)

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त क्रियापद विध्यर्थ (लिङ् लकार) के हैं। प्रथम वाक्य में गुरु शिष्य को सुबह मंत्र का पाठ करने की विधि कह रहे हैं अथवा आज्ञा दे रहे हैं, ऐसा प्रतीत होता है। दूसरे वाक्य में विध्यर्थ (लिङ् लकार) का प्रयोग करके अतिथि शायद छाश पिएँगे, ऐसी संभावना व्यक्त की गई है। तीसरे वाक्य में सौ वर्ष तक जीवित रहने की प्रार्थना की गई है।

इस तरह विध्यर्थ (लिङ् लकार) भी आज्ञार्थ (लोट् लकार) की तरह ही आज्ञा, संभावना और प्रार्थना जैसे अर्थ में प्रयुक्त होता है। (जब कि इस तरह दोनों 'लकार' के आज्ञा वगैरह अर्थ समान हैं, परन्तु आशीर्वाद के संदर्भ में एक बात विशेष याद रखने जैसी है, वह इस तरह कि लिङ् लकार में आशीर्वाद का अर्थ कहने के लिए रूप (आज्ञा वगैरह अर्थ को व्यक्त करने हेतु प्रयुक्त रूपों से कुछ भिन्न होते हैं। रूप परिवर्तन के इस भेद को स्पष्ट रूप से दर्शाने के इरादे से आज्ञा, प्रार्थना, संभावना जैसे अर्थ को व्यक्त करने की रूपावली को विधिलिङ् (विधिलिङ् लकार) और आशीर्वाद का अर्थ व्यक्त करने की रूपावली को आशीर्लिङ् (आशीर्लिङ् लकार) के रूप में जाना जाता है। इस तरह विधिलिङ् लकार और आशीर्लिङ् लकार – ये दो प्रकार के रूप होते हैं। यहाँ तो आपको मात्र आज्ञा वगैरह का अर्थ व्यक्त करने वाले विधिलिङ् लकार के रूपों को ही सीखना है। आशीर्लिङ् लकार के रूप नहीं सीखने हैं।) यहाँ परस्मैपद और उसके पश्चात् आत्मनेपद के नियत धातुओं के विधिलिङ् लकार के रूपों को देखेंगे।

विध्यर्थ (विधिलिङ् लकार) (परस्मैपद) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	ईयम्	ईव	ईम
मध्यम पुरुष	ईः	ईतम्	ईत
अन्य पुरुष	ईत्	ईताम्	ईयुः

विध्यर्थ (विधिलिङ् लकार) (आत्मनेपद) के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	ईय	ईवहि	ईमहि
मध्यम पुरुष	ईथा:	ईयाथाम्	ईध्वम्
अन्य पुरुष	ईत	ईयाताम्	ईरन्

यहाँ इन प्रत्ययों को दी गई धातु के साथ जोड़ते समय पहले की तरह ही धातु और इन उपर्युक्त प्रत्ययों के बीच संबंधित गण के विकरण प्रत्यय भी जोड़े जाते हैं। जैसे कि खाद् + अ + ईत् = खादेत्।

उदाहरण स्वरूप यहाँ मात्र 'पठ्' और 'लभ्' धातुओं के रूप ही दिए गए हैं।

'पठ्' पढ़ना (पहला गण) विध्यर्थ (विधिलिङ् लकार) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	पठेयम् मुझे पढ़ना चाहिए।	पठेव हम दोनों को पढ़ना चाहिए।	पठेम हमको पढ़ना चाहिए।
मध्यम पुरुष	पठे: तुम्हें पढ़ना चाहिए।	पठेतम् तुम दोनों को पढ़ना चाहिए।	पठेत तुमको पढ़ना चाहिए।
अन्य पुरुष	पठेत् उसे पढ़ना चाहिए।	पठेताम् उन दोनों को पढ़ना चाहिए।	पठेयु: उनको पढ़ना चाहिए।

'लभ्' पाना, प्राप्त करना (पहला गण) विध्यर्थ (विधिलिङ् लकार) के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि
मध्यम पुरुष	लभेथा:	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
अन्य पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्

इसी तरह से अन्य धातु रूप भी चलेंगे।

स्वाध्याय

1. वर्तमानकालस्य क्रियापदानां स्थाने आज्ञार्थस्य (लोट्लकारस्य) योग्यं क्रियापदं लिखत ।

(1) जाया मधुमतीं वाचं वदति।

(2) त्वं स्थलान्तरं गच्छसि।

(3) बाल: शुद्धं जलं पिबति।

(4) सुपुत्र: जनकं वन्दते।

(5) छात्रा: प्रात: पाठशालां गच्छन्ति।

2. ह्यस्तन भूतकालस्य क्रियापदस्य अनुरूपं वर्तमानकालस्य क्रियापदं लिखत ।

(1) काले पर्जन्यः अवर्षत्।

(2) तातः पुत्रं समादिशत्।

(3) सायं भोजनम् अभवत्।

(4) जलाशयान्तरं मत्स्याः अगच्छन्।

(5) छात्राः आलस्यम् अत्यजन्।

3. उदाहरणानुसारं प्रदत्तानां रूपाणां परिचयं कारयत ।

उदाहरणम् – भवति। भू धातु, परस्मैपद, वर्तमानकाल, अन्यपुरुष, एकवचन

(1) त्यजति (2) विनश्यति (3) गच्छ (4) वर्षतु

(5) वर्तताम् (6) आचरेत्

4. योग्यं क्रियापदं चित्वा रिक्तस्थानानां पूर्तिः करणीया ।

(1) अहं तावत् जलाशयान्तरं .... । (गच्छेत्, गच्छामि, गमिष्यति)

(2) पश्चात् घटोत्कचोऽहम् .... । (अभिवादये, अभिवादयति, अभिवादयसि)

(3) प्रत्युत्पन्नमतिः सुखम् .... । (एधेते, एधते, एधन्ते)

(4) तेन भवान् काष्ठानि .... । (आहर, आहरतु, आहरन्तु)

(5) सः विधिवदुपयम्य स्वनगरम् .... । (अनयत्, नयामि, नयन्तु)

5. अधोलिखितेषु वाक्येषु प्रयुक्तस्य आज्ञार्थस्य क्रियापदस्य अर्थं लिखत ।

(1) सर्वे भवन्तु सुखिनः।

(2) व्यायामम् आचर।

(3) स्मर नाम हरेः सदा।

(4) शतं जीव।

(5) जनकः भोजने फलानि खादेत्।

अभ्यास 2 : विशेषण प्रयोग-परिचय

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) नगरे एक: धार्मिक: विनम्र: श्रेष्ठिपुत्र: प्रतिवसति।

(शहर में सेठ का एक धार्मिक और विनम्र लड़का रहता है।)

(2) समायां परिशुद्धायां भूमौ तान् तप्तवती।

(समतल स्वच्छ धरती पर उसे तपाया।)

(3) तत: स्नानशुद्धाय तस्मै अतिथये सा भोजनं दत्तवती।

(उसके बाद स्नान से शुद्ध हुए उस अतिथि को उसने भोजन दिया।)

उपर्युक्त प्रथम वाक्य में जो रेखांकित पद हैं, उन्हें विशेषण पद के रूप में जाना जाता है। विशेषण पद जब प्रयोग किए जाते हैं, तब वाक्य में उनका कोई विशेष्य पद होता ही है। जैसे कि उपर्युक्त प्रथम वाक्य में 'एक: धार्मिक: विनम्र:' ये तीन विशेषण पद हैं और इन विशेषण पदों का विशेष्य पद 'श्रेष्ठिपुत्र:' है। इसी तरह दूसरे वाक्य में 'समायाम् परिशुद्धायाम्' ये दो विशेषण पद हैं और 'भूमौ' विशेष्य पद है। जब कि तीसरे वाक्य में 'स्नानशुद्धाय तस्मै' ये दो विशेषण पद हैं और 'अतिथये' विशेष्य पद है।

विशेषण क्या है ?

विशेषण को समझाते हुए कहा गया है कि 'भेदकं विशेषणम्।' अर्थात् जो भेद करता हो, वह विशेषण है। (और 'भेद्यं विशेष्यम्' अर्थात् जो भेद्य=भेद करने के योग्य होता है, जिसका भेद करना होता है, वह विशेष्य है।) जैसे कि 'पुष्पम्' शब्द के उच्चारण से समस्त पुष्प जाति का ज्ञान होता है। यदि पुष्प शब्द के साथ 'रक्तं पुष्पम्' शब्द का प्रयोग किया जाय तो दुनियाभर के तमाम पुष्पों से ध्यान हटकर मात्र लाल पुष्प पर केन्द्रित हो जाता है। इस तरह पुष्प शब्द से जो दुनियाभर के तमाम पुष्प का अर्थ फलित हो रहा था, उनमें भेद करके अलग करने का कार्य इस 'रक्त' शब्द ने किया है। इसलिए उसे विशेषण के रूप में जाना जाता है।

इस तरह देखें तो पता चलता है कि जब कोई भी संज्ञापद बोला जाता है तब वह समग्र का अर्थ देता है। यदि समग्र का अर्थ न देना हो तो उस समग्र अर्थ में से किसी एक का भेद कर सके ऐसा कोई दूसरा संज्ञापद प्रयोग करना पड़ेगा। ऐसा भेद करने के लिए प्रयुक्त होने वाले संज्ञापद को विशेषण कहते हैं।

एक काल्पनिक दृश्य देखें। बगीचे में अनेक वृक्ष हैं। यदि मात्र 'वृक्ष:' इतना ही कहा जाय तो बगीचे के सभी वृक्षों में से किसी का भी बोध हो सकता है। अगर इस वृक्ष के साथ बड़ा (महत् - महान्) ऐसा एक अतिरिक्त पद प्रयोग किया जाय तो बगीचा में रहे सभी वृक्षों में से अब मात्र जो बड़े वृक्ष हैं, उनमें से किसी एक वृक्ष का बोध होगा। उसके पश्चात् बड़ा वृक्ष ऐसे इन दो पदों के साथ फलवाला (फलवत् - फलवान्) एक तीसरा संज्ञा पद प्रयोग किया जाय, तो बगीचा के सभी बड़े वृक्षों में से मात्र जो फलवाले वृक्ष हैं, उनमें से किसी एक फलवाले वृक्ष का बोध होता है। थोड़ा और आगे बढ़कर चौथा टूटा हुआ (भग्न-भग्न:) एक अतिरिक्त संज्ञापद का प्रयोग करें तो अब फलवाले वृक्षों में से, एक टूटे हुए वृक्ष का ही बोध होता है। इस तरह, वृक्ष संज्ञापद से दुनियाभर के वृक्षों से जुड़ा जो विशाल अर्थ था, उसमें 'महान्, फलवान्' और 'भग्न:' इन तीन पदों ने भेद स्थापित किया, इसलिए ये तीनों 'महत् - महान्, फलवत् - फलवान्' और 'भग्न-भग्न:' पद विशेषण पद के रूप में जाने जाते हैं।

इन विशेषण पदों का प्रयोग कभी वाक्य की वृद्धि करने के लिए भी होता है। जैसे कि 'रामः वेदं पठति।' यह एक प्रारंभिक छोटा वाक्य है। इसमें एक कर्ता, एक कर्म और एक क्रियापद कुल मिलाकर तीन पद हैं। इनमें कर्ता और कर्म दो संज्ञा पद हैं और वे दोनों विशेष्य पद हैं।

अब, इन दोनों विशेष्य पदों के साथ जैसे-जैसे विशेषण पदों को जोड़ते जाएँगे, वाक्य का विस्तार होता जाएगा। जैसे, 'धीरः रामः धर्मग्रन्थं वेदं पठति।' यहाँ राम और वेद इन दो विशेष्य पदों के साथ जो एक-एक अतिरिक्त संज्ञापद प्रयुक्त हुए हैं, वे विशेषण पद हैं। इन विशेषण पदों के कारण तीन पदों वाला वाक्य बढ़कर पाँच पदवाला वाक्य बन गया है। इसी तरह विशेष्य पदों के साथ दूसरे अतिरिक्त विशेषण प्रयोग किए जाएँ, तो यह वाक्य इससे भी अधिक बड़ा बन सकता है। जैसे, 'सूर्यवंशीयः कौशल्यानन्दनः राघवः विनीतः रामः प्राचीनतमं सुप्रसिद्धं धर्मग्रन्थं वेदं पठति। ' (सूर्यवंश में उत्पन्न, कौशल्या के पुत्र, रघुकुल के विनम्र राम अतिशय प्राचीन सुप्रसिद्ध धर्मग्रंथ वेद को पढ़ते हैं।)

इस तरह विशेषण पद वाक्य की वृद्धि करते हैं। अर्थात् किसी निश्चित अर्थ की प्रतीति कराने हेतु अथवा वाक्य की वृद्धि करने हेतु वाक्य में विशेषण पदों का प्रयोग आवश्यक हो जाता है।

विशेषण का प्रयोग करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना है कि विशेष्य की जो लिंग, वचन और विभक्ति होती है, वहीं लिंग, वचन और विभक्ति विशेषण की भी होती है।

अतः, यदि कोई विशेष्य पद पुल्लिंग, प्रथमा विभक्ति और बहुवचन में प्रयुक्त हुआ हो, तो उसका विशेषण भी पुल्लिंग, प्रथमा विभक्ति और बहुवचन में ही प्रयोग करना होता है। निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) बालकः प्रातःकाले मधुरं दुग्धं पिबति।

(2) अस्मिन् वर्षे मधुरा द्राक्षा मिलति।

(3) विगते सोमवासरे वयं मधुरान् आम्रान् अखादाम।

उपर्युक्त तीनों वाक्यों में 'मधुर' ऐसा (गुणवाचक) विशेषण प्रयुक्त हुआ है। वह जब 'दुग्धम्' (नपुं.-प्र.-एकवचन) विशेष्य के साथ प्रयोग किया गया है, तब 'मधुरम्' के रूप में नपुंसकलिंग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन है। दूसरे वाक्य में वह 'द्राक्षा' (स्त्री.-प्र. एकवचन) विशेष्य के साथ प्रयुक्त हुआ है, तब 'मधुरा' के रूप में स्त्रीलिंग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन है। इसी तरह तीसरे वाक्य में 'आम्रान्' (पु.-द्वि.-बहुवचन) विशेष्य के साथ प्रयोग किया गया है। उस समय वह 'मधुरान्' के रूप में पुल्लिंग, द्वितीया विभक्ति, बहुवचन में प्रयुक्त हुआ है।

इसी तरह सभी विशेषण अपने विशेष्य पद के लिंग, वचन और विभक्ति के अनुसार ही प्रयुक्त होते हैं।

विशेष्य-विशेषण के प्रयोग से संबंधित कुछ विशेष जानकारी

संख्यावाचक शब्द (पद) भी विशेषण हैं, उनमें 'एक', 'द्वि', त्रि' और 'चतुर्' ये चार शब्द विशेष्य अनुसार अपना लिंग बदलकर पुल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग में प्रयोग होते रहते हैं। परन्तु उसके बाद 'पञ्च' से लेकर 'अष्टादश' तक सभी शब्दों के रूप तीनों लिंग में एक समान होते हैं। जब कि 'एकोनविंशतिः' से लेकर 'नवनवतिः' तक के सभी शब्द स्त्रीलिंग में और 'शतम्, सहस्रम्' वगैरह शब्द नपुंसकलिंग में प्रयोग किए जाते हैं। (यहाँ ये बात भी याद रखना है कि 'एक' के रूप तीनों वचन में होते हैं। परन्तु 'द्वि' के रूप मात्र द्विवचन में और 'त्रि', 'चतुर्', 'पञ्च' वगैरह के रूप मात्र बहुवचन में ही होते हैं।)

जो संज्ञापद क्रिया के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें अधिकांशतः नपुंसकलिंग, द्वितीया विभक्ति और एकवचन में ही प्रयोग करना होता है। जैसे कि 'सुन्दरं लिखति। मन्दं गायति। मधुरं वदति। सत्वरं गच्छति।' इन वाक्यों में 'सुन्दर' वगैरह जो संज्ञापद क्रिया के विशेषण के रूप में प्रयोग किए गए हैं, वे सभी नपुंसकलिंग, द्वितीय विभक्ति और एकवचन में प्रयोग किए गए हैं।

सर्वनाम के रूप

'अस्मद्' मैं (तीनों लिंग में एकसमान रूप रहते हैं।)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा विभक्ति	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया विभक्ति	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया विभक्ति	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी विभक्ति	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पंचमी विभक्ति	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी विभक्ति	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी विभक्ति	मयि	आवयोः	अस्मासु

'युष्मद्' तू, तुम (तीनों लिंग में एक समान रूप)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा विभक्ति	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया विभक्ति	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया विभक्ति	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी विभक्ति	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पंचमी विभक्ति	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी विभक्ति	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी विभक्ति	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

'तद्' वह (पुल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा विभक्ति	सः	तौ	ते
द्वितीया विभक्ति	तम्	तौ	तान्
तृतीया विभक्ति	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी विभक्ति	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी विभक्ति	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी विभक्ति	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी विभक्ति	तस्मिन्	तयोः	तेषु

'तद्' वह (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा विभक्ति	सा	ते	ताः
द्वितीया विभक्ति	ताम्	ते	ताः
तृतीया विभक्ति	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी विभक्ति	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी विभक्ति	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी विभक्ति	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी विभक्ति	तस्याम्	तयोः	तासु

'तद्' वह (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा विभक्ति	तत्	ते	तानि
द्वितीया विभक्ति	तत्	ते	तानि
तृतीया विभक्ति	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी विभक्ति	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी विभक्ति	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी विभक्ति	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी विभक्ति	तस्मिन्	तयोः	तेषु

(नोट : 'तद्' के नपुंसक के तृतीया से सप्तमी विभक्ति के रूप पुल्लिग रूप की तरह ही चलते हैं।) इसी तरह 'यद्' के रूप भी हैं।

'यद्' जो (पुल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा विभक्ति	यः	यौ	ये
द्वितीया विभक्ति	यम्	यौ	यान्
तृतीया विभक्ति	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी विभक्ति	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पंचमी विभक्ति	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी विभक्ति	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी विभक्ति	यस्मिन्	ययोः	येषु

'यद्' जो (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा विभक्ति	या	ये	याः
द्वितीया विभक्ति	याम्	ये	याः
तृतीया विभक्ति	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी विभक्ति	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पंचमी विभक्ति	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी विभक्ति	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी विभक्ति	यस्याम्	ययोः	यासु

'यद्' जो (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा विभक्ति	यत्	ये	यानि
द्वितीया विभक्ति	यत्	ये	यानि
तृतीया विभक्ति	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी विभक्ति	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पंचमी विभक्ति	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी विभक्ति	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी विभक्ति	यस्मिन्	ययोः	येषु

'किम्' कौन (पुल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा विभक्ति	कः	कौ	के
द्वितीया विभक्ति	कम्	कौ	कान्
तृतीया विभक्ति	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी विभक्ति	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी विभक्ति	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी विभक्ति	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी विभक्ति	कस्मिन्	कयोः	केषु

'किम्' कौन (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा विभक्ति	का	के	काः
द्वितीया विभक्ति	काम्	के	काः
तृतीया विभक्ति	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी विभक्ति	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी विभक्ति	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी विभक्ति	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी विभक्ति	कस्याम्	कयोः	कासु

'किम्' कौन (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा विभक्ति	किम्	के	कानि
द्वितीया विभक्ति	किम्	के	कानि
तृतीया विभक्ति	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी विभक्ति	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी विभक्ति	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी विभक्ति	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी विभक्ति	कस्मिन्	कयोः	केषु

'इदम्' यह (पुल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा विभक्ति	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया विभक्ति	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया विभक्ति	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी विभक्ति	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पंचमी विभक्ति	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी विभक्ति	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी विभक्ति	अस्मिन्	अनयोः	एषु

'इदम्' यह (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा विभक्ति	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया विभक्ति	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया विभक्ति	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी विभक्ति	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पंचमी विभक्ति	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी विभक्ति	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी विभक्ति	अस्याम्	अनयोः	आसु

'इदम्' यह (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा विभक्ति	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया विभक्ति	इदम्	इमे	इमानि
तृतीया विभक्ति	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी विभक्ति	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पंचमी विभक्ति	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी विभक्ति	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी विभक्ति	अस्मिन्	अनयोः	एषु

'सर्व' सब (पुल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा विभक्ति	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया विभक्ति	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया विभक्ति	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी विभक्ति	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पंचमी विभक्ति	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी विभक्ति	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी विभक्ति	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

'सर्व' सब (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा विभक्ति	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया विभक्ति	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया विभक्ति	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी विभक्ति	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पंचमी विभक्ति	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी विभक्ति	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी विभक्ति	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

'सर्व' सब (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा विभक्ति	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया विभक्ति	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
तृतीया विभक्ति	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी विभक्ति	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पंचमी विभक्ति	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी विभक्ति	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी विभक्ति	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

स्वाध्याय

1. समुचितेन रूपेण रिक्तस्थानानां पूर्तिः करणीया ।

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
(1)	....	....	ये
(2)	सर्वस्मै	....	....
(3)	....	कयोः	....
(4)	तस्मिन्	....	....
(5)	यस्याः	....	....

2. कोष्ठगतशब्दस्य योग्यं रूपं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत ।

(1) .... विघ्नेभ्यः जनाः रक्षिताः भवन्ति। (कठिन)
(2) सुरापानं .... वर्तते। (विघ्नरूप)
(3) .... समयः सञ्जातः। (प्रलम्ब)
(4) जलम् .... अस्ति रोटिका च .... अस्ति। (उष्ण)
(5) मत्स्यः .... जले प्रविष्टः। (गभीर)

3. सङ्ख्यावाचकेन विशेषणेन रिक्तस्थानानां पूर्तिः करणीया ।

(1) .... श्रेष्ठिपुत्रः वसति। (एक)
(2) कूपे .... कन्या दृष्टा। (एक)
(3) .... विघ्नाः भवन्ति। (चतुर्)
(4) संस्कृतभाषायां .... वचनानि सन्ति। (त्रि)
(5) वर्गखण्डे .... छात्राः पठन्ति। (पञ्चविंशति)

4. कोष्ठगतशब्दस्य उचितरूपेण रिक्तस्थानानि पूरयत ।

(1) .... जलाशयं दृष्ट्वा धीवरैः उक्तम्। (तत्)
(2) तत्कथं .... भार्याम् अहं विन्देयमिति। (गुणवती)
(3) .... शालीन् प्रथमम् आतपे तप्तवती। (तत्)
(4) .... मानवाः सुखिनः भवन्तु। (सर्व)
(5) .... पात्राणि अपि तत्र स्थापितवान्। (नूतन)

5. कोष्ठगतं विशेषणं वाक्ये योग्यरीत्या प्रयोजयत।

(1) जाया पत्ये .... वाचं वदतु। (मधुमती)
(2) दुष्टानां विद्या .... भवति। (भाररूप)
(3) .... पुस्तकानि तत्र सन्ति। (सर्व)
(4) इदं जलमं .... । (सगर)
(5) एषा .... स्थितिः सञ्जाता। (मदीय)

•

अभ्यास 3 : उपपद-विभक्ति परिचय

(1) पुनरावर्तन

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(1) परिजनेन सुखम् अनुभवति। (परिजन से सुख का अनुभव करता है।)
(2) अनागतविधाता परिजनेन सह निष्क्रान्तः। (अनागत विधाता परिजन के साथ निकल गया।)
(1) सः तां पश्यति। (वह उसे देखता है।)
(2) स तां निकषा संगत्य सविनयम् आह। (वह उसके पास जाकर विनयपूर्वक बोला।)
(1) शक्तिकुमारः कन्याम् उद्वहति। (शक्तिकुमार कन्या विवाह करता है।)
(2) शक्तिकुमारः कन्यां प्रति समाकृष्टः। (शक्तिकुमार कन्या की तरफ आकर्षित हुए।)

उपर्युक्त दो-दो वाक्यों के जोड़े में जो रेखांकित पद हैं, वे एक समान विभक्ति के हैं, परन्तु ये एक समान दिखाई देने वाली विभक्तियाँ वास्तव में अलग-अलग हैं। प्रथम क्रम वाले वाक्यों में रेखांकित पदों के साथ प्रयुक्त विभक्ति को कारक विभक्ति के रूप में जाना जाता है। जब कि दूसरे क्रम वाले वाक्यों में रेखांकित पदों के साथ प्रयुक्त विभक्ति को उपपद विभक्ति कहते हैं।

कारक विभक्ति का अर्थ

वाक्य में प्रयोग करने के लिए वक्ता द्वारा निश्चित किसी पदार्थ का पहले तो कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान या अधिकरण में से कोई कारक संज्ञा होती है और उसके पश्चात् उस कारक के कारण किसी निश्चित विभक्ति का प्रयोग करना होता है, तब उस (कारक के कारण प्रयुक्त) विभक्ति को कारक विभक्ति के रूप में जाना जाता है। जैसे, 'शिष्यः संस्कृतं पठति।' यहाँ वक्ता ने पढ़ने की क्रिया के कर्म रूप में 'संस्कृत' को कहना निश्चित किया है। अतः 'संस्कृत' शब्द पहले तो कर्मकारक बनता है और उसके बाद कर्म में द्वितीया विभक्ति प्रयुक्त होने से यहाँ द्वितीया विभक्ति प्रयोग की जाती है। इस तरह कर्म ऐसी कारक संज्ञा के कारण इस द्वितीय विभक्ति को कारक विभक्ति कहते हैं।

उपपद विभक्ति का अर्थ

परन्तु जब वाक्य में प्रयुक्त किसी (उप=) नजदीक के पद के कारण किसी खास विभक्ति का उपयोग करना होता है, तब उस विभक्ति को उपपद विभक्ति कहा जाता है। जैसे कि - गणेशाय नमः। यहाँ वाक्य में 'नमः' जो एक पद प्रयुक्त हुआ है, उसके कारण 'गणेश' शब्द को चतुर्थी विभक्ति में रखा जाता है। इस तरह यहाँ 'गणेशाय' ऐसी जो चतुर्थी विभक्ति प्रयुक्त की गई है, वह उपपद विभक्ति के रूप में जानी जाती है। (आप देख सकते हैं कि यहाँ 'गणेश' को पहले कोई कारक बताकर उस कारक के अनुसार विभक्ति नहीं रखी गई है, परन्तु वाक्य में 'नमः' ऐसे नजदीक के पद के कारण चतुर्थी विभक्ति प्रयोग की गई है। इससे इस चतुर्थी विभक्ति को उपपद विभक्ति के रूप में जानते हैं।)

उपपद विभक्ति का प्रयोग

उपपद विभक्ति के प्रयोगों को सीखने के लिए किन-किन पदों के योग में कौन-कौन सी विभक्ति होती है, उसकी जानकारी आवश्यक है। इसलिए यहाँ कुछ नियत पदों के योग में होने वाली उपपद विभक्ति के नियम दिए जा रहे हैं :

1. वाक्य में जब 'उभयतः' (दोनों तरफ), 'परितः' (चारों तरफ), 'प्रति' (की तरफ), 'विना' (बिना, सिवाय) और 'अन्तरा' (बिना, बीच में), 'निकषा' (पास) जैसे अव्यय पदों का प्रयोग हुआ हो, तब वहाँ द्वितीया विभक्ति का प्रयोग करना होता है। जैसे कि, 'मार्गं उभयतः वृक्षाः सन्ति।' (रास्ता के दोनों ओर वृक्ष हैं।),'गिरिं परितः मार्गः वर्तते।' (पर्वत के चारों ओर रास्ता है।), 'वृक्षं प्रति प्रकाशते विद्युत्।' (पेड़ की तरफ बिजली प्रकाशित है।), 'विद्यां विना निष्फलं हि जीवनम्।' (विद्या बिना का जीवन निष्फल ही है।)

इन सभी वाक्यों में क्रमशः 'उभयतः, परितः, प्रति' और 'विना' पदों का प्रयोग होने से, उन पदों के योग के कारण क्रमशः 'मार्गम्, गिरिम्, वृक्षम्' और 'विद्याम्' पदों में द्वितीय विभक्ति प्रयोग की गई है।

2. वाक्य में जब 'सह' (साथ) 'सार्धम्/समम्' (साथ), 'अलम्' (पर्याप्त के अर्थ में, पूर्णता के अर्थ में, रोकने के अर्थ में) जैसे अव्यय पदों का प्रयोग हुआ हो, तब तृतीया विभक्ति का प्रयोग करना होता है। जैसे कि 'जलप्रवाहेण सह समुद्रं मिलति।' (जल प्रवाह के साथ समुद्र में मिलता है।), 'गिरिणा सार्धं/समं वनमपि अस्ति।' (पर्वत के साथ बन भी हैं।), 'अलं पठनेन।' (अब पढ़ना रहने दो। इतना पढ़ना पर्याप्त है।)

इन सभी वाक्यों में क्रमशः 'सह', 'सार्धम्' और 'अलम्' पदों का प्रयोग होने से, उन पदों के योग के कारण क्रमशः 'जलप्रवाहेण, गिरिणा' और 'पठनेन' पदों में तृतीया विभक्ति प्रयोग की गई है। (उपर्युक्त) पदों में से जो 'विना'

(बिना, सिवाय) पद है, उसके योग में कभी तृतीया अथवा पंचमी विभक्ति भी प्रयोग की जाती है। जैसे कि 'धर्मेण/धर्मात् विना सुखं न भवति।' (धर्म के बिना सुख नहीं होता।)

3. वाक्य में जब 'नमः' (प्रणाम-वंदन-नमन, मान करना), 'स्वाहा' (देवों को कोई वस्तु समर्पित करते समय बोला जाने वाला शब्द, समर्पण का भाव), 'स्वस्ति' (कल्याण हो, भला हो – ऐसा अर्थ देने वाला उद्‌गार) जैसे अव्यय पदों का प्रयोग हुआ हो, तो वहाँ चतुर्थी विभक्ति प्रयोग की जाती है। जैसे कि 'रामाय नमः। (राम को वंदन।), 'अग्नये स्वाहा।' (यह द्रव्य अग्नि को समर्पित है।), 'पुत्राय स्वस्ति।' (पुत्र का कल्याण हो।)

इन सभी वाक्यों में क्रमशः 'नमः', 'स्वाहा' और 'स्वस्ति' पदों का प्रयोग होने से, उन पदों के योग के कारण क्रमशः 'रामाय, अग्नये' और 'पुत्राय' पदों में चतुर्थी विभक्ति प्रयोग की गई है।

4. वाक्य में जब 'ऋते' (सिवाय, बिना), 'प्रभृति' (से ले करके) जैसे अव्यय पदों का प्रयोग किया गया हो, तो वहाँ पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे कि 'ऋते ज्ञानात् न सुखम्।' (ज्ञान सिवाय सुख नहीं है।), 'बाल्यात् प्रभृति गायति'। (बचपन से लेकर गाता है।)

इन सभी वाक्यों में क्रमशः 'ऋते' और 'प्रभृति' पदों का प्रयोग होने से, उन पदों के योग के कारण क्रमशः 'ज्ञानात्' और 'बाल्यात्' पदों में पंचमी विभक्ति प्रयुक्त की गई है।)

5. वाक्य में जब 'कृते' (लिए) 'अग्रे' (आगे) 'पुरतः' (आगे, पूर्व में, सामने) जैसे अव्यय पदों का प्रयोग किया गया हो, तो वहाँ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे कि 'संस्कृतस्य कृते जीवति।' (संस्कृत के लिए जीता है।),'देशस्य अग्रे अहं किमपि नास्मि।' (देश के आगे मैं कुछ भी नहीं हूँ), 'सज्जनस्य पुरतः दुर्जनः न तिष्ठति।' (सज्जन के सामने दुर्जन खड़ा नहीं रहता है।)

इन सभी वाक्यों में क्रमशः 'कृते, अग्रे' और 'पुरतः' पदों का प्रयोग होने से, उन पदों के योग के कारण क्रमशः 'संस्कृतस्य, देशस्य' और 'सज्जनस्य' पदों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

स्वाध्याय

1. समुचितेन रूपेण रिक्तस्थानानां पूर्तिः करणीया ।

(1) …………… समं पाठशालां गच्छ। (मित्र)

(2) …………… समाचर। (धर्म)

(3) …………… निकषा कन्या दृष्टा। (कूप)

(4) समरेषु …………… भव। (भीम)

(5) विना …………… दुर्घटना न भवति। (कारण)

2. रेखाङ्कितेषु पदेषु प्रयुक्तायाः विभक्तेः परिचयं कारयत ।

(1) <u>मार्गे</u> कदाचित् दुर्घटनाः अपि घटन्ति।

(2) भीताः पूर्वराजपुरुषाः <u>देशान्तरं</u> व्रजन्ति।

(3) <u>पठनेन</u> विना न प्राप्यते विद्या।

(4) भोः श्रेष्ठिन् ! अलम् <u>आशङ्कया</u>।

(5) रक्तमपि <u>तस्मै</u> दातव्यम्।

3. परस्परं मेलयत ।

क	ख
(1) पञ्चमी विभक्तिः	(1) सह
(2) षष्ठी विभक्तिः	(2) कृते
(3) द्वितीया विभक्तिः	(3) ऋते
(4) तृतीया विभक्तिः	(4) स्वाहा
(5) चतुर्थी विभक्तिः	(5) परितः

•

अभ्यास 4 : कृदन्त परिचय

कक्षा - 9 में आप संबंधक भूतकृदन्त और हेत्वर्थ कृदन्त से परिचित हो गए हैं। अब, आपको दूसरे दो कृदन्तों से परिचित होना है। इन दो कृदन्तों का नाम है : 1. भूतकृदन्त और 2. विध्यर्थ कृदन्त।

(1) भूतकृदन्त :

नीचे दिए गए 'क' वर्ग और 'ख' वर्ग के वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

क	ख
(1) कृष्णः पठनाय गुरुकुलम् अगच्छत्।	(1) कृष्णः पठनाय गुरुकुलम् गतवान्।
(2) गार्गी एकं वेदम् अपठत्।	(2) गार्गी एकं वेदं पठितवती।
(3) छात्रः काव्यम् अलिखत्।	(3) छात्रः काव्यं लिखितवान्।

उपर्युक्त 'क' विभाग के सामने दूसरा एक 'ख' विभाग दिया गया है। इन दोनों विभागों के वाक्यों में जो रेखांकित पद हैं, वे सभी क्रियापद हैं। दोनों वर्ग में आमने-सामने दिए गए प्रत्येक वाक्य में ('अगच्छत्।' और 'गतवान्।' इस रूप में) क्रियापद अलग-अलग प्रकार के हैं, फिर भी 'क' विभाग का वाक्य जो अर्थ दे रहा है, वही अर्थ 'ख' विभाग का वाक्य भी देता है। इस तरह, एक ही अर्थ को कहने के लिए दोनों वाक्यों में अलग-अलग क्रियापद प्रयोग किए जाते हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि वक्ता चाहे तो उपर्युक्त 'क' विभाग के वाक्य के बदले में 'ख' विभाग के वाक्य भी प्रयोग कर सकता है। दूसरी तरह कहें तो उपर्युक्त वाक्यों में क्रियापद अलग-अलग होने पर भी ('क' विभाग और 'ख' विभाग के) दोनों वाक्यों का अर्थ समान है। वक्ता चाहे जो वाक्य प्रयोग कर सकता है।

'क' विभाग 1. कृष्णः पठनाय गुरुकुलम् अगच्छत्। और 'ख' विभाग 1. कृष्णः पठनाय गुरुकुलम् गतवान्। दोनों वाक्यों के क्रियापद में 'गम्' - 'गच्छ्' धातु का प्रयोग हुआ है। यहाँ दोनों वाक्यों में भूतकाल को कहने की वक्ता की इच्छा (विवक्षा) है। इस तरह, धातु और काल समान होने पर भी दोनों वाक्यों में क्रियापद 'अगच्छत्' और 'गतवान्' रूप में अलग-अलग हैं। इसका कारण धातु के पीछे आया हुआ प्रत्यय है। जैसे कि;

(1) 'क' विभाग के नीचे जो वाक्य दिए गए हैं, उनमें प्रयुक्त क्रियापद ह्यस्तन भूतकाल के हैं और वे ति-प्रत्ययान्त तिङन्त ('तिप्' वगैरह परस्मैपद के प्रत्ययों से युक्त हैं) है। अतः ऐसे क्रियापदों में पुरुष तथा वचन की योग्य व्यवस्था बनाए रखना होता है। (ऐसी व्यवस्था के नियम नवीं कक्षा में आप पढ़ चुके हैं।)

(2) 'क' विभाग के सामने 'ख' विभाग में जो वाक्य दिए गए हैं, उनमें प्रयुक्त क्रियापद भूतकाल के हैं, परन्तु वे (तिङन्त के नहीं, परन्तु) कृदन्त ('कृत्' प्रत्यय वाले) हैं। ऐसे क्रियापदों वाले वाक्य में तिङन्त क्रियापद की तरह पुरुष और वचन की व्यवस्था के विषय में सोचना नहीं पड़ता।

परन्तु याद रखिए कि ऐसे भूतकृदन्त क्रियापद दो प्रकार के हैं : 1. त (क्त) प्रत्ययान्त और 2. (वत् क्तवत्) प्रत्ययान्त। ऐसे क्रियापदों का प्रयोग करते समय नीचे की कुछ महत्त्वपूर्ण बातें ध्यान रखनी आवश्यक है। जैसे कि -

क. त (क्त)प्रत्ययान्त क्रियापद होता है, वह कर्मणि या भावे (अर्थात् कर्म अर्थ में अथवा तो भाव अर्थ में) होता है। इस कारण से त (क्त) प्रत्ययान्त क्रियापदों का प्रयोग करते समय कर्मणि और भावे वाक्य रचना करनी पड़ती है। अब, कर्मणि वाक्यरचना के लिए नीचे की तीन बातों का ध्यान रखना पड़ता है। जैसे कि;

(1) कर्मणि या भावे वाक्यरचना में कर्ता को हमेशा तृतीया विभक्ति में रखा जाता है।

(2) कर्म को प्रथमा विभक्ति में रखते हैं।

(3) क्रियापद, कर्म की तरह लिंग, विभक्ति और वचन में होता है।

उदाहरण के स्वरूप में 'कुशेन आम्ररस: पीत:।' (कुश ने आम का रस पिया।) यहाँ 'कुशेन' कर्ता में तृतीया विभक्ति और 'आम्ररस:' कर्म में (पुल्लिंग) प्रथमा विभक्ति, एकवचन प्रयोग हुआ है। इसके पश्चात् यहाँ प्रयुक्त 'आम्ररस:' यह कर्म अनुसार 'पीत:' इस क्रियापद में पुल्लिंग, प्रथमा विभक्ति और एकवचन का प्रयोग किया गया है।

इसी तरह जब 'भावे' वाक्य रचना (जिसमें कर्म न हो वैसी अकर्मक वाक्य रचना) करनी हो, तब भी नीचे की तीन बातों का ध्यान रखना होता है। जैसे :

(1) 'भावे' वाक्यरचना में कर्ता को हमेशा तृतीया विभक्ति में रखा जाता है।

(2) 'भावे' वाक्यरचना में कभी भी कर्म नहीं होता है। (ऐसे वाक्यों में क्रियापद अकर्मक होते हैं। अत: वहाँ कर्म नहीं होता है। परिणाम स्वरूप उनके प्रयोग में कुछ भी ध्यान नहीं रखना होता है।)

(3) क्रियापद हमेशा नपुंसकलिंग, प्रथमा विभक्ति और एकवचन में प्रयोग करना होता है।

जैसे; 'रामेण हसितम्।' (राम से हँसा गया।) यहाँ 'रामेण' कर्ता तृतीया विभक्ति में है। यहाँ कर्म है ही नहीं, अत: उसके प्रयोग के नियम के विषय में सोचना ही नहीं है। यहाँ जो क्रियापद है, वह 'हसितम्' है। उसका नियमानुसार नपुंसकलिंग, प्रथमा विभक्ति और एकवचन में प्रयोग किया गया है। (इसी तरह 'सीतया हसितम्।' वगैरह प्रयोगों में जहाँ कर्ता स्त्रीलिंग में हो, वहाँ भी क्रियापद हमेशा नपुंसकलिंग, प्रथमा विभक्ति और एकवचन में ही प्रयोग किया जाता है।)

ख. तवत् (क्तवतु > क्तवत् > तवत्) प्रत्ययान्त क्रियापद 'कर्तरि' (अर्थात् कर्ता अर्थ में) होता है। इस कारण वत् प्रत्ययान्त क्रियापद का जब उपयोग करना हो, तब वहाँ 'कर्तरि' वाक्य रचना करनी होती है।

'कर्तरि' वाक्यरचना करने के लिए नीचे की बातें ध्यान में रखना चाहिए। जैसे;

(क) 'कर्तरि' वाक्यरचना में कर्ता प्रथमा विभक्ति में रहता है।

(ख) कर्म हो, तो वह द्वितीया विभक्ति में रखा जाता है।

(ग) कृदन्त पद में कर्ता का अनुकरण करके कर्ता की तरह ही लिंग, वचन और विभक्ति प्रयोग करना होता है।

जैसे; 'देवदत्त: ग्रन्थान् दत्तवान्।' यहाँ कर्ता 'देवदत्त:' है, वह (पु.) प्रथमा विभक्ति एकवचन में है। 'ग्रन्थान्' यह कर्म है। उसका द्वितीया विभक्ति में प्रयोग हुआ है। उसके बाद 'दत्तवान्' जो कृदन्त क्रियापद है, वह कर्ता के अनुसार (दत्तवत् > दत्तवान् इसतरह) पुल्लिंग में प्रथमा, एकवचन में प्रयुक्त हुआ है।

कर्मणिभूतकृदन्त (क्त > त प्रत्ययान्त रूप)

(1) कृ + त = कृत। (पुं. कृत:, स्त्री. कृता, नपुं. कृतम्।)

(2) भू + त = भूत। (पुं. भूत:, स्त्री. भूता, नपुं. भूतम्।)

(3) पा + त = पीत। (पुं. पीत:, स्त्री. पीता, नपुं. पीतम्।)

(4) खाद् + त = खादित। (पुं. खादित:, स्त्री. खादिता, नपुं. खादितम्।)

(5) गम् + त = गत। (पुं. गत:, स्त्री. गता, नपुं. गतम्।)

(6) दा + त = दत्त। (पुं. दत्त:, स्त्री. दत्ता, नपुं. दत्तम्।)

कर्तरि भूतकृदन्त (क्तवतु > तवतु > तवत् प्रत्ययान्त) रूप

(1) कृ + तवत् = कृतवत्।। (पुं. कृतवान्, स्त्री. कृतवती, नपुं. कृतवत्।)

(2) भू + तवत् = भूतवत्। (पुं. भूतवान्, स्त्री. भूतवती, नपुं. भूतवत्।)

(3) पा + तवत् = पीतवत्। (पुं. पीतवान्, स्त्री. पीतवती, नपुं. पीतवत्।)

(4) खाद् + तवत् = खादितवत्। (पुं. खादितवान्, स्त्री. खादितवती, नपुं. खादितवत्।)

(5) गम् + तवत् = गतवत्। (पुं. गतवान्, स्त्री. गतवती, नपुं. गतवत्।)

(6) दा + तवत् = दत्तवत्। (पुं. दत्तवान्, स्त्री. दत्तवती, नपुं. दत्तवत्।)

उपर के उदाहरणो से समक्ष में आता है कि कर्मणि भूतकृदन्त को (भूत)वत् लगाने से कर्तरि भूतकृदन्त बनता है-(भूतवत्)

(2) विध्यर्थ कृदन्त

नीचे दिए गए 'क' वर्ग और 'ख' वर्ग के वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

क	ख
(1) कृष्णः श्लोकं <u>लिखेत्</u>।	(1) कृष्णेन श्लोकः <u>लिखितव्यः</u>।
(2) छात्राः प्रातः वेदं <u>पठेयुः</u>।	(2) छात्रैः प्रातः वेदः <u>पठितव्यः</u>।
(3) छात्रः <u>हसेत्</u>।	(3) छात्रेण <u>हसितव्यम्</u>।

ऊपर 'क' के सामने दूसरा एक 'ख' विभाग दिया गया है। इन दोनों विभागों के वाक्यों में जो रेखांकित पद हैं, वे सभी क्रियापद हैं। दोनों वर्ग में आमने-सामने दिए गए प्रत्येक वाक्य में जब कि क्रियापद 'लिखेत्' और 'लिखितव्यः'। रूप में) अलग-अलग प्रकार के हैं, फिर भी 'क' विभाग का वाक्य जो अर्थ दे रहा है, वही अर्थ 'ख' विभाग का वाक्य भी देता है। इस तरह एक ही अर्थ को कहने के लिए दोनों वाक्यों में अलग-अलग क्रियापद प्रयोग किए गए हैं।

इस पर से पता चलता है कि वक्ता चाहे तो यहाँ भी उपर्युक्त 'क' विभाग में आए वाक्य के बदले में उसके सामने 'ख' विभाग में आए दूसरे वाक्य का भी प्रयोग कर सकता है।

इस प्रकार के वाक्य की संरचना समझने के लिए नीचे की कुछ बातें जान लेना जरूरी है। (इनमें से तो कुछ बातें पहले भूतकृदन्त के वाक्य प्रयोगों के समय आप जान चुके हैं। यहाँ उनके समान बातों का पुनरावर्तन ही होना है।)

'क' विभाग का 1. कृष्णः श्लोकं <u>लिखेत्</u>। और 'ख' विभाग का 1. कृष्णेन श्लोकः लिखितव्यः। दोनों वाक्यों के क्रियापद में 'लिख्' धातु का प्रयोग हुआ है। तथा यहाँ दोनों वाक्यों में विध्यर्थ को कहने की वक्ता की इच्छा (विवक्षा) है। इस तरह, धातु और (विध्यर्थ ऐसा) अर्थ एक समान होने पर भी दोनों वाक्यों में क्रियापद 'लिखेत्' और 'लिखितव्यः' इस रूप में अलग-अलग हैं। इसका कारण यहाँ धातु के पीछे आया हुआ प्रत्यय है। जैसे,

1. 'क' विभाग के नीचे जो वाक्य दिए गए हैं, उनमें प्रयुक्त क्रियापद विध्यर्थ के हैं। 'तिङन्त' हैं। ऐसे क्रियापदों में पुरुष तथा वचन की योग्य व्यवस्था बनाए रखना होता है। (ऐसी व्यवस्था के नियम आप नवीं कक्षा में पढ़ चुके हैं।)

2. 'क' विभाग के सामने 'ख' वर्ग में जो वाक्य दिए गए हैं, उनमें प्रयुक्त क्रियापद विध्यर्थ के हैं, परन्तु वे ('तिङन्त' नहीं, परंतु) कृदन्त ('कृत्' प्रत्यय वाले) हैं। ऐसे क्रियापदों वाले वाक्य में तिङन्त क्रियापद की तरह पुरुष और वचन की व्यवस्था नहीं करनी होती।

याद रखिए, विध्यर्थ कृदन्त के क्रियापद दो प्रकार के हैं : 1. 'तव्य' प्रत्ययान्त और 2. 'अनीयर्' (अनीय) प्रत्ययान्त। ऐसे क्रियापदों का प्रयोग करते समय यह बात ध्यान रखना है कि विध्यर्थ कृदन्त के ये दोनों प्रत्यय 'कर्मणि' (कर्म अर्थ में) या 'भावे' (भाव अर्थ में) आते हैं। इसलिए इस 'तव्य' और 'अनीय' प्रत्ययान्त क्रियापद वाली वाक्य रचना में (क्त) 'त' प्रत्ययान्त क्रियापद के प्रयोग की तरह सभी नियम लागू पड़ते हैं। जैसे,

'कर्मणि' वाक्यरचना के लिए नीचे अनुसार तीन बातें ध्यान रखनी होती हैं :

'कर्मणि' वाक्यरचना में (1) कर्ता हमेशा तृतीया विभक्ति में होता है। (2) कर्म प्रथमा विभक्ति में रखा जाता है। (3) क्रियापद कर्म के अनुसार लिंग, विभक्ति और वचन में रहता है।

उदाहरण स्वरूप 'चन्दनदासः शिष्येण अत्र आनेतव्यः। (चंदनदास के शिष्य को यहाँ लाना चाहिए।) यहाँ 'शिष्येण' कर्ता में तृतीया विभक्ति, 'चन्दनदासः ' कर्म में (पु.) प्रथमा विभक्ति और 'आनेतव्यः' यह क्रियापद

'चन्दनदास:' कर्म में (पु.) प्रथमा विभक्ति और 'आनेतव्य:' यह क्रियापद 'चन्दनदास:' इस कर्म अनुसार पुल्लिंग प्रथमा विभक्ति में प्रयोग हुआ है। (इसी तरह जब 'अनीय' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है, तब 'चन्दनदास: शिष्येण अत्र आनयनीय:।' ऐसा वाक्य प्रयोग होता है।)

इसी तरह जब 'भावे' वाक्यरचना करनी होती है, तब उसके लिए भी निम्नानुसार तीन बातें ध्यान रखनी होती हैं :

(1) 'भावे' वाक्यरचना में कर्ता हमेशा तृतीया विभक्ति में होता है।

(2) 'भावे' वाक्यरचना में कभी भी कर्म नहीं होता है। (इसलिए उसके प्रयोग के संबंध में कुछ भी ध्यान नहीं रखना है।)

(3) क्रियापद को हमेशा नपुंसकलिंग, प्रथमा विभक्ति और एकवचन में रखा जाता है।

उदाहरण स्वरूप (इदमासनम्, तत्र) त्वया स्थातव्यम्। (यह आसन है, वहाँ तुम्हें बैठना चाहिए।) यहाँ 'त्वया' यह कर्ता तृतीया विभक्ति में है, कर्म होता नहीं, इसलिए उस पर विचार करना नहीं है और 'स्थातव्यम्' यह क्रियापद नपुंसकलिंग प्रथमा विभक्ति एकवचन में प्रयुक्त हुआ है। (इसी तरह जब 'अनीय' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है, तब (इदमासनम्, तत्र) त्वया स्थानीयम्। ऐसा वाक्य प्रयोग होता है।

विध्यर्थ कृदन्त (क्त > त प्रत्यान्त) रूप

(1) भू + तव्य = भवितव्य। (पुं. भवितव्य:, स्त्री. भवितव्या, नपुं. भवितव्यम्।)।

(2) पा + तव्य = पातव्य।। (पुं. पातव्य:, स्त्री. पातव्या, नपुं. पातव्यम्।)।

(3) खाद् + तव्य = खादितव्य। (पुं. खादितव्य:, स्त्री. खादितव्या, नपुं. खादितव्यम्।)।

(4) गम् + तव्य = गन्तव्य। (पुं. गन्तव्य:, स्त्री. गन्तव्या, नपुं. गन्तव्यम्।)।

(5) दा + तव्य = दातव्य। (पुं. दातव्य:, स्त्री. दातव्या, नपुं. दातव्यम्।)।

विध्यर्थ कृदन्त ('अनीय' प्रत्ययान्त)

(1) भू + अनीय = भवनीय। (पुं. भवनीय:, स्त्री. भवनीया, नपुं. भवनीयम्)।

(2) पा + अनीय = पानीय।। (पुं. पानीय:, स्त्री. पानीया, नपुं. पानीयम्।)।

(3) खाद् + अनीय = खादनीय। (पुं. खादनीय:, स्त्री. खादनीया, नपुं. खादनीयम्।)।

(4) गम् + अनीय = गमनीय। (पुं. गमनीय:, स्त्री. गमनीया, नपुं. गमनीयम्।)।

(5) दा + अनीय = दानीय। (पुं. दानीय:, स्त्री. दानीया, नपुं. दानीयम्।)।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितानां कृदन्तपदानां प्रकारं लिखत ।

(1) पठनीयम् .... (2) दानीय: ....

(3) रक्षित: .... (4) गन्तव्य: ....

2. अधोलिखितेषु पदेषु विध्यर्थकृदन्तपदानां चयनं कुरुत ।

(1) स्थातव्यम् .... (2) पानीयम् ....

(3) परिचेतुम् .... (4) हसनीयम् ....

(5) लिखिता .... (6) द्रष्टव्या ....

3. निम्नलिखितानां कृदन्तानां प्रत्ययनिर्देशपूर्वकं प्रकारं लिखत ।

(1) गन्तव्यम् .... (2) कृता ....

(3) भूतः .... (4) खादनीयः ....

(5) पठितव्यम् .... (6) प्रवेष्टव्यम् ....

4. क्रियापदस्य स्थाने कर्मणि भूतकृदन्तस्य योग्यं रूपं लिखत ।

(1) मत्स्यः उत्प्लुत्य गभीरं नीरं प्राविशत्।

(2) पितामहं द्रष्टुं त्वं स्वर्गम् अगच्छः।

(3) वेदव्यासः महाभारतम् अरचयत्।

(4) बालकाः संस्कृतम् अपठन्।

(5) देवेशः इदानीं किम् अपश्यत्।

5. क्रियापदस्य स्थाने विध्यर्थकृदन्तस्य योग्यं रूपं लिखत ।

(1) नन्दस्य गुणान् स्मरेत्।

(2) क्वचित् सहसा न वदेः।

(3) एवं कथं भवेत्।

(4) नीरिमा एव पुरतः प्रविशेत्।

(5) विद्याभ्यासं समाचरेत्।

•

अभ्यास 5 : समास-परिचय

संस्कृत में समास के मुख्य चार प्रकार हैं : 1.अव्ययीभाव 2. तत्पुरुष 3. बहुव्रीहि 4. द्वन्द्व। इनमें से तत्पुरुष और द्वन्द्व – इन दो प्रकार के समासों का नवीं कक्षा में आप अध्ययन कर चुके हैं। यहाँ तत्पुरुष समास का ही एक प्रकार माना जाने वाला कर्मधारय और बहुव्रीहि समास आपको सीखना है।

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास का अध्ययन प्रारंभ करें, उससे पहले पिछले वर्ष आप समास से संबंधित जो बातें सीख चुकें हैं, उनका थोड़ा पुनरावर्तन करना आवश्यक है। इसके लिए नीचे के वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

(1) सेवितव्य: महान् वृक्ष:।

(2) सेवितव्यो: महावृक्ष:।

उपर्युक्त प्रथम वाक्य में जो दो रेखांकित संज्ञापद प्रयुक्त हुए हैं, वही दोनों संज्ञापद दूसरे वाक्य में समास होकर (अर्थात् एक हो करके, संक्षिप्त हो करके) प्रयुक्त हुआ है। यहाँ हम देख सकते हैं कि पहले वाक्य में 'महान्' और 'वृक्ष:' ऐसे जो दो संज्ञापद हैं, वे अलग-अलग पद के रूप में प्रयोग हुए हैं और उनके साथ अलग-अलग विभक्ति प्रत्यय जुड़े हैं। इसके बाद दूसरे वाक्य में इन दोनों संज्ञापदों का समास (महावृक्ष:) होकर जो प्रयोग हुआ है, उसमें दोनों संज्ञा के अंत में एक ही विभक्ति प्रत्यय जुड़ा है। आप सीख चुके हैं कि ऐसा होने का कारण समास है।

आइए, अब आगे और समास का अध्ययन करें।

(1) कर्मधारय समास

कर्मधारय समास तत्पुरुष समास का एक बड़ा प्रकार है, इसलिए इसे कर्मधारय तत्पुरुष के नाम से भी जानते हैं। यह समास विशेष्य और विशेषण – इन दो पदों से बना है। (विशेष्य-विशेषण की समझ के लिए अभ्यास-2 देखिए।) जैसे कि नीचे के दो वाक्यों को पढ़िए :

(1) सरोवरे नीलं कमलं वर्तते।

(2) सरोवरे नीलकमलं वर्तते।

यहाँ प्रथम वाक्य में 'नीलम्' और 'कमलम्' ऐसे जो दो पद हैं, वे प्रथमा विभक्ति में हैं। इस प्रथमा विभक्ति में रहे दोनों पद द्वितीय वाक्य में सामासित होकर प्रयोग हुए हैं। आपको यह याद रखना है कि –

(1) यहाँ 'नीलम्' यह विशेषण पद है और 'कमलम्' यह विशेष्य पद है।

(2) जब विशेष्य और विशेषण का समास होता है, तब वहाँ पूर्वपद में और उत्तर पद में – दोनों पदों में एक समान विभक्ति होती है। यहाँ दोनों पदों में प्रथमा विभक्ति है।

(3) ऐसे विशेष्य – विशेषण पदों के तत्पुरुष समास को कर्मधारय कहा जाता है।

इस प्रकार के विशेष्य और विशेषण पदों से बने सामासिक पद का विग्रह करते समय (यदि दोनों पद पुल्लिंग के हों, तो) दोनों पदों के बीच 'च' असौ (चासौ), (स्त्रीलिंग का हो, तो) 'च असौ' (चासौ) और (नपुंसकलिंग का हो, तो) 'च तत्' पद भी रखे जाते हैं। जैसे,

(1) वाम: च असौ बाहु: – वामबाहु:।

(2) मुक्ता च असौ (चासौ) मणि: – मुक्तामणि:।

(3) विक्रान्तं च तत् कार्यम् – विक्रान्तकार्यम्।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रमश: पुल्लिंग विशेषणों का पुल्लिंग विशेष्य के साथ, स्त्रीलिंग विशेषणों का स्त्रीलिंग विशेष्य के साथ और नपुंसकलिंग विशेषण का नपुंसकलिंग विशेष्य के साथ समास हुआ है।

अब, नीचे का एक दूसरा वाक्य पढ़िए :

(1) पाणिनेः कृतिः अष्टाध्यायी वर्तते।

(1) पाणिनेः कृतिः अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः वर्तते।

प्रथम वाक्य में प्रयुक्त 'अष्टाध्यायी' पद में समास है। दूसरे वाक्य में उसका विग्रह वाक्य 'अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः' प्रयोग हुआ है। याद रखिए कि इस विग्रह वाक्य में आया 'अष्टानाम्' पद विशेषण है और 'अध्यायानाम्' पद विशेष्य है। जब कि इस विशेष्य और विशेषण दोनों पदों में एक समान विभक्ति – षष्ठी विभक्ति है। इस तरह, यहाँ भी विशेष्य-विशेषण का और एक समान विभक्ति वाले पदों का समास होने से यह कर्मधारय तत्पुरुष समास है; परन्तु इस समास में एक अन्य विशेषता भी है। वह यह कि विशेष्य-विशेषण का यह समास समाहार (अर्थात् अमुक वस्तु का समूह) अर्थ में है। इस प्रकार के समाहार अर्थ में होने वाले कर्मधारय तत्पुरुष समास में यदि संख्यावाचक पद पूर्वपद में हो, तो उसे द्विगु समास भी कहते हैं। यह द्विगु समास यदि अकारान्त हो, तो वह स्थाई रूप से स्त्रीलिंग में ही प्रयोग होता है। (और इस कारण स्त्रीलिंग का वाचक 'ई' प्रत्यय जुड़ता है।) जबकि इस समास में समाहार ऐसा अर्थ शामिल है, ऐसा बताने के लिए सामासिक पद का विग्रह वाक्य देते समय दोनों पदों के अंत में 'समाहारः' पद भी रखा जाता है। जैसे कि; अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः = अष्टाध्यायी। यह द्विगु (कर्मधारय) तत्पुरुष समास का उदाहरण है।

यह कर्मधारय तत्पुरुष समास का ही एक प्रकार होने से यहाँ भी उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता होती है।

(2) बहुव्रीहि समास

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

(1) तीक्ष्णबुद्धिः जनः सर्वान् अर्थान् धिया पश्यति।

(2) बहुमत्स्यः अयं ह्रदः।

(3) अर्जुनः अपि जातहर्षः तैः सह संलग्नः अभवत्।

इन सभी वाक्यों में रेखांकित पद सामासिकपद हैं और यहाँ बहुव्रीहि समास है। इन सामासिक पदों का विग्रह करने पर (तीक्ष्णबुद्धिः) तीक्ष्णा बुद्धिः यस्य सः, (बहुमत्स्यः) बहवः मत्स्याः यस्मिन् सः, (जातहर्षः) जातः हर्षः यस्य सः, (जातहर्षः) जातः हर्ष यस्य सः – ऐसे चार-चार पदों का उपयोग करना पड़ता है। बहुव्रीहि समास के विग्रह वाक्य में प्रयुक्त इन सभी पदों को आप ध्यान से देखिए, आपको पता चलेगा कि –

(1) अलग हुए चार पदों में से समास तो मात्र दो ही पदों का हुआ है।

(2) जिन दो पदों का समास हुआ है, उनमें एक समान रूप से प्रथमा विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

(3) विग्रह वाक्य में जो दूसरे दो पद दिखाई देते हैं, वैसे दो पद इस बहुव्रीहि समास के विग्रह वाक्य में ही देखने को मिलते हैं; उसके अतिरिक्त अन्य समासों के विग्रह वाक्य में नहीं दिखाई देते हैं। (अतः यह सोचना जरूरी है कि बहुव्रीहि समास में ही ये पद क्यों प्रयोग किए जाते हैं, अन्य समास में क्यों नहीं।)

अब, इन तीन बातों को ध्यान में रख करके बहुव्रीहि समास की प्रक्रिया सीखना है :

(1) बहुव्रीहि समास एक साथ अनेक विभक्ति के पदों का हो सकता है।

(2) समास में जितने विभक्ति के पद जोड़ने होते हैं, वे सभी प्रथमा विभक्ति में होते हैं।

(3) समास में प्रयुक्त सभी पद अपना अर्थ खोकर अन्य किसी पद का अर्थ कहते हैं। (ऐसे अन्य पद का अर्थ दर्शाने के लिए ही विग्रह वाक्य में 'यस्य सः' जैसे अतिरिक्त पद का प्रयोग होता है।)

कुछ प्रयोग देखिए :

(1) स्नेहपूर्णदृष्टिः (कुमारः)। इसका विग्रह वाक्य है – स्नेहपूर्णा दृष्टिः यस्य सः।

(2) लब्धपदः (नीचः)। इसका विग्रह वाक्य है – लब्धं पदं येन सः।

(3) गतरोगः (नरः)। इसका विग्रह वाक्य है – गतः रोगः यस्य सः।

(4) कृतबुद्धिः (ऋषिः)। इसका विग्रह वाक्य है – कृता बुद्धिः येन सः।

यहाँ प्रथम वाक्य में 'स्नेहपूर्णा' और 'दृष्टिः' इन दो पदों का समास हुआ है। ये दोनों पद प्रथमा विभक्ति में हैं। अब, ये दोनों पद,अपना जो अर्थ है ('स्नेहपूर्णा' अर्थात् स्नेह से भरी और 'दृष्टिः' अर्थात् नज़र), उस अर्थ को छोड़कर 'कुमारः' ऐसे अन्य पद के अर्थ में आ जाता है। यह अन्य पद के अर्थ में आ जाने की बात को बताने के लिए विग्रह वाक्य में ('यत्' सर्वनाम का योग्य रूप प्रयोग किया जाता है। जैसे कि यहाँ किया गया है।) 'यस्य' पद प्रयोग किया गया है। इसी तरह 'लब्धपदः (नीचः)' जैसे प्रयोग में 'लब्धम्' और 'पदम्' इन दो पदों का समास हुआ है। ये दोनों पद प्रथमा विभक्ति वाले हैं और अपने अर्थ को छोड़कर यहाँ 'नीचः' जैसे अन्य पद के अर्थ में आ गए हैं। इस अन्य पद का अर्थ बताने के लिए इसके विग्रह वाक्य में यहाँ 'येन सः' ऐसे दो सर्वनामों का प्रयोग किया गया है। इससे इसका विग्रह वाक्य 'लब्धं पदं येन सः' है। इस प्रकार बहुव्रीहि विशेषण बनता है। उदा., पीताम्बरः विष्णुः।

इसी प्रकार बहुव्रीहि के सभी प्रयोगों में समास व्यवस्था करनी होती है।

उपर्युक्त अनुसार बहुव्रीहि समास में प्रयुक्त दोनों पद अन्य पद का अर्थ देते हैं। इसी कारण यह बहुव्रीहि समासान्त पद प्रायः विशेषण के रूप में प्रयोग होता है। इसलिए बहुव्रीहि समास वाले पद का लिंग उसके विशेष्य के लिंग की तरह रखना होता है, जिससे वह बदलता रहता है। अर्थात् यदि विशेष्य पुल्लिंग हो, तो बहुव्रीहि समासान्त पद भी पुल्लिंग में रखा जाता है। यदि विशेष्य स्त्रीलिंग हो, तो बहुव्रीहि समासान्त पद भी स्त्रीलिंग में रखा जाता है और यदि विशेष्य नपुंसकलिंग हो, तो बहुव्रीहि समासान्त पद भी नपुंसकलिंग में रखा जाता है।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितानां पदानां समासप्रकारं लिखत ।

(1) शिलालिखितम् .... (2) नीतिनिपुणाः ....

(3) प्रत्युत्पन्नमतिः .... (4) लब्धविजयाः ....

(5) प्रकृतिनिर्मिताः .... (6) अधिगततत्त्वः ....

2. निम्नलिखितानि पदानि संयोज्य योग्यं समासं विरचयत ।

(1) तीक्ष्ण + तुण्ड .... (2) कृत + कार्य ....

(3) न + प्राप्त .... (4) गभीर + जल ....

(5) उग्र + स्वभाव ....

3. क-विभागं ख-विभागेन सह संयोजयत।

क	ख
(1) भग्नदन्ता	(1) इतरेतर द्वन्द्वः
(2) प्राप्तबुद्धिः	(2) बहुव्रीहि (पुं.)
(3) परिवारजनः	(3) षष्ठी तत्पुरुष।
(4) भयक्रोधौ	(4) बहुव्रीहि (स्त्री.)
(5) महावृक्षः	(5) कर्मधारय
	(6) द्वितीया तत्पुरुष

अभ्यास 6 : विसर्ग सन्धि-परिचय

नीचे का वाक्य देखिए :

(1) राक्षसेभ्योऽपि भवन्त एव क्रूरतराः। (राक्षसों से भी आप अधिक क्रूर हैं।)

इस वाक्य में प्रयुक्त प्रथम पद (राक्षसेभ्योऽपि) में 'ऽ' प्रकार का चिह्न दिखाई दे रहा है, उसे अवग्रह कहते हैं। संस्कृत भाषा में इस चिह्न का अक्सर उपयोग होता रहता है, इसलिए इस अवग्रह का उच्चारण जानना जरूरी है।

वास्तव में इस अवग्रह चिह्न का स्वतंत्र रूप से कोई उच्चारण नहीं करना होता है। यह अवग्रह का चिह्न तो अपने से पहले आए वर्ण का उच्चारण करने में मात्र मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता है। जैसे कि प्रस्तुत उदाहरण में मूल में तो 'राक्षसेभ्यः' और 'अपि' ऐसे दो पद थे। संधि के पश्चात् वे 'राक्षसेभ्योऽपि' रूप में हैं। यहाँ प्रयुक्त इस अवग्रह चिह्न पर से यह समझना है कि आगे के 'ओ' वर्ण में पीछे का 'अ' वर्ण मिल गया है, इसलिए जब 'ओ' वर्ण का उच्चारण करना होता है, तब 'ओ' वर्ण पर थोड़ा भार देना पड़ता है। (प्रत्यक्ष रूप से तो आप अपने शिक्षक से इसका उच्चारण सीख सकेंगे। फिर भी आप स्वयं 'सरोवरः' और 'सरोऽपि' दोनों शब्दों का उच्चारण करके देखिए। आपको दोनों स्थानों से उच्चारित 'ओ' वर्ण के उच्चारण का भेद पता चलेगा।

अब, इसी वाक्य में प्रयुक्त दूसरे चिह्न की तरफ ध्यान दीजिए। 'क्रूरतराः।' शब्द के अन्त में ':' इस प्रकार का एक चिह्न प्रयोग किया गया है। इसे विसर्ग कहते हैं। इसका उच्चारण सहज 'ह्' वर्ण जैसा होता है। संस्कृत भाषा में इस विसर्ग का व्यापक रूप से प्रयोग हुआ है।

इतना समझ लेने के पश्चात् अब, नीचे के कुछ वाक्यों को पढ़िए :

(1) अधुना अस्माभिः किं (अस्माभिः किं) कर्तव्यम्।

(2) युधिष्ठिरादयश्च (युधिष्ठिरादयः च) भवन्तमभिवादयन्ति।

(3) भवता श्रोतव्यो जनार्दनस्य (श्रोतव्यः जनार्दनस्य) सन्देशः।

(4) भवन्त एव (भवन्तः एव) क्रूरतराः।

(5) शत्रोरपि (शत्रोः अपि) गुणाः ग्राह्याः।

उपर्युक्त पाँचों वाक्यों में कोष्ठक के अन्दर जो पदावली दी गई है, वह विसर्ग का मूल रूप सूचित करता है जब कि वाक्य में उस विसर्ग का संधि करने के बाद वाला प्रयोग दर्शाया गया है। आप देख सकते हैं कि –

(1) प्रथम वाक्य में विसर्ग वैसा का वैसा ही है।

(2) दूसरे वाक्य में विसर्ग के स्थान पर 'श' वर्ण प्रयोग हुआ है।

(3) तीसरे वाक्य में विसर्ग के बदले 'ओ' हो गया है।

(4) चौथे वाक्य में विसर्ग नहीं दिखाई दे रहा है। (विसर्ग का लोप हो गया है।)

(5) पाँचवे वाक्य में विसर्ग के स्थान पर 'र्' दिखाई दे रहा है।

इससे पता चलता है कि संस्कृत वाक्यरचना में विसर्ग संधि का प्रयोग करना हो, तो विसर्ग अपने स्वरूप के उपरांत कम से कम दूसरे चार रूप (विसर्ग के स्थान में 'श्' वर्ण, विसर्ग के बदले 'ओ', विसर्ग का लोप और विसर्ग के स्थान पर 'र्') ले सकते हैं। इस स्थिति में यह जान लेना जरूरी होता है कि किस स्थान पर विसर्ग कौन-सा रूप लेता है। इसके लिए संधि के कुछ नियम जानने चाहिए। जैसे कि,

(1) विसर्ग के बाद (क) 'च्' 'छ्' और 'श्' आए, तो विसर्ग के स्थान में 'श्' हो जाता है। (ख) 'ट्', 'ठ्' और 'ष्' आए, तो 'ष्' और (ग) 'त्', 'थ्' और 'स्' हो जाता है।

जैसे कि, युधिष्ठिरादयः च। यहाँ विसर्ग के पश्चात् 'च' है, इसलिए विसर्ग के स्थान में 'श्' हो करके 'युधिष्ठिरादयश्च' ऐसा प्रयोग होता है।

(2) विसर्ग के पहले यदि 'अ' (अ-वर्ण) हो और विसर्ग के बाद 'अ' या कोई घोष वर्ण (वर्ग के तीसरे, चौथे और पाँचवें वर्ण को घोषवर्ण कहते हैं।) हो, तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है।

जैसे कि; श्रोतव्यः जनार्दनस्य। यहाँ विसर्ग के पहले ('य' मानो) 'अ' वर्ण है और विसर्ग के बाद (च्, छ्, ज्, झ्, ञ् यह 'च' वर्ग है। उनमें से तीसरा) 'ज्' है, इसलिए यहाँ विसर्ग के स्थान में 'ओ' हो जाता है और 'श्रोतव्यो जनार्दनस्य' इस तरह प्रयोग होता है।

(3) (क) विसर्ग के पहले यदि 'आ' (दीर्घ अवर्ण) हो और विसर्ग के बाद स्वर, घोष (वर्ग का तीसरा, चौथा और पाचवाँ) वर्ण अथवा अंतःस्थ (य् र् ल् व् में से कोई एक) वर्ण हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है। (ख) विसर्ग के पहले यदि 'अ' (ह्रस्व अवर्ण) हो और विसर्ग के पीछे 'अ' के अलावा कोई भी अन्य स्वर हो, तो भी विसर्ग का लोप हो जाता है।

जैसे कि; विघ्नविहताः विरमन्ति। यहाँ 'ता' में आए 'आ' वर्ण के बाद विसर्ग है और उस विसर्ग के पीछे 'व्' अंतःस्थ वर्ण है, जिससे ('क' नियम अनुसार) विसर्ग का लोप अर्थात् अदर्शन हो जाता है और 'विघ्नविहता विरमन्ति।' ऐसा संधि प्रयोग होता है। इसी तरह 'भवन्तः एव' प्रयोग भी 'त' में स्थित 'अ' वर्ण के बाद विसर्ग है और उस विसर्ग के बाद 'ए' स्वर आया है, जिससे विसर्ग का लोप हो करके 'भवन्त एव' ऐसा प्रयोग होता है।

(4) विसर्ग के पहले 'अ' या 'आ' स्वर के अतिरिक्त कोई भी स्वर हो और विसर्ग के बाद कोई भी स्वर अथवा घोष व्यंजन में से कोई वर्ण आया हो,तो विसर्ग के स्थान पर 'र्' (रेफ) हो जाता है।

जैसे कि; शत्रोः अपि। यहाँ 'त्रो' में स्थित 'ओ' वर्ण के बाद विसर्ग आया है और विसर्ग के बाद 'अ' स्वर आया है, जिससे विसर्ग के स्थान में 'र्' होकर 'शत्रोरपि।' ऐसा संधि रूप बनता है। तथा नीतिः + न की संधि नीतिर्न होती है।

ध्यान में रखिए : उपर्युक्त नियम - 2 अनुसार जहाँ विसर्ग का 'ओ' होता है, वहाँ विसर्ग का 'ओ' होने के बाद यदि 'अ' वर्ण हो, तो वह खिसक जाता है। जैसे, (राक्षसेभ्यः अपि) राक्षसेभ्योऽपि। यहाँ विसर्ग के पूर्व ('भ्य' मानो) 'अ' वर्ण है और विसर्ग के बाद 'अ' वर्ण है। जिससे यहाँ विसर्ग के स्थान में 'ओ' होता है - राक्षसेभ्यो अपि। इसके बाद पीछे स्थित 'अपि' में का 'अ' उस 'ओ' में मिल जाता है। इस बात की सूचना देने के लिए ऐसे स्थान पर अवग्रह का चिह्न रखा जाता है।

स्वाध्याय

1. नियमानुसारं विसर्गसन्धिं कुरुत ।

(1) मानवाः सन्तु निर्भयाः।

(2) सुखिनः सर्वे सन्तु।

(3) अनाथः दरिद्रः जरारोगयुक्तः।

(4) दास्याः पुत्रः व्याघ्रः मद्भयेन मयूररूपं गृहीत्वा पलायते।

(5) नीचः प्रायेण दुःसहो भवति।

2. सन्धिविच्छेदं कृत्वा वाक्यानि पुनः लिखत।

(1) सं वो मनांसि जानताम्।

(2) अनेन तुषेभ्यस्तण्डुलाः पृथक् सञ्जाताः।

(3) अनाथ इव व्याघ्रेण खादितोऽस्मि।

(4) अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते।

(5) चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।

3. क-वर्गेण सह ख-वर्गस्य मेलनं कुरुत ।

क	ख
(1) सुजनो न	(1) विसर्गस्य लोपः
(2) गतिस्त्वम्	(2) विसर्गस्य सन्धिः न
(3) परोऽपि	(3) विसर्गस्य रेफः
(4) स्वर्गस्थितः कर्दनः	(4) विसर्गस्य सकारः
(5) वृद्ध इव	(5) विसर्गस्य ओकारः अवर्णस्य परतः
	(6) विसर्गस्य ओकारः